IAS BABA

RAPID REVISION SERIES

800 High Probable Topics for UPSC Prelims 2021

(Current Affairs + Static Portion)

हिन्दी

Full Compilation

HISTORY

Make the best use of this document by combining free explanation videos of these topics, Current Affairs Quiz, Static Quiz, CSAT Quiz, & 3 Full Mocks on rrs.iasbaba.Com (A Free Initiative targeting UPSC PRELIMS 2021)

Q.1) औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे?

1. औरंगजेब के कमजोर उत्तराधिकारी
2. मुगल कुलीनता का पतन
3. उत्तराधिकार का दोषपूर्ण कानून

उपरोक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिये?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.1) Solution (d)

मुगलों के पतन के कुछ मुख्य कारण थे:

- मुगलों की सरकार एक व्यक्तिगत निरंकुशता थी और इसलिए इसकी सफलता शासक के चरित्र पर निर्भर करती थी। उत्तरवर्ती मुगल बेकार थे और उन्होंने राज्य के प्रशासन की उपेक्षा किया था।
- उत्तराधिकार के एक निश्चित कानून के अभाव में, उत्तराधिकार का युद्ध हमेशा हुआ; इससे सरकार की स्थिरता कमजोर हुई और देशभक्ति की कीमत पर पक्षपात को बढ़ावा मिला।
- शासकों के पतन के कारण कुलीन वर्ग का पतन हुआ, जिसमें गुटबाजी और षड्यंत्रों के कारण साम्राज्य को भारी कीमत चुकानी पड़ी।
- सेना का पतन भी साम्राज्य के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।
- औरंगजेब की दक्कन नीति पूरी तरह विफल रही और मुगल साम्राज्य के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण थी।
- ईरानी और दुर्रानी राज्यों के आक्रमणों ने मुगल साम्राज्य को प्राणघातक आघात दिया।

Q.2) मुगल साम्राज्य के पतन के परिणामस्वरूप कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ जिन्हें उत्तराधिकारी राज्यों, स्वतंत्र राज्यों और नए राज्यों में वर्गीकृत किया जा सकता है। निम्नलिखित में से कौन उत्तराधिकारी राज्य हैं?

a) हैदराबाद
b) मैसूर
c) अवध
d) मराठा

उपरोक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिये:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 4
d) केवल 3 और 4

Q.2) Solution (b)

मुगल साम्राज्य के पतन के परिणामस्वरूप उभरे राज्यों को निम्नलिखित तीन व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- उत्तराधिकारी राज्य: ये मुगल प्रांत थे जो साम्राज्य से अलग होने के बाद राज्यों में बदल गए। हालांकि उन्होंने मुगल शासक की संप्रभुता को चुनौती नहीं दी, लेकिन उनके राज्यपालों द्वारा वस्तुतः स्वतंत्र और वंशानुगत सत्ता की स्थापना ने इन क्षेत्रों में स्वायत्त राजनीति का उद्भव दिखाया। कुछ उदाहरण अवध, बंगाल और हैदराबाद हैं।

- स्वतंत्र राज्य: ये राज्य मुख्य रूप से प्रांतों पर मुगल नियंत्रण की अस्थिरता के कारण अस्तित्व में आए, उदाहरण मैसूर और राजपूत राज्य हैं।

- नए राज्य: ये मुगल साम्राज्य के खिलाफ विद्रोहियों द्वारा स्थापित राज्य थे, उदाहरण मराठा, सिख और जाट राज्य थे।

Q.3) यूरोपीय शक्तियों के आगमन से पहले निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु भारत द्वारा अन्य देशों को निर्यात की जाती थी:

1. अफ़ीम
2. नील
3. सोना
4. चाय
5. मिर्च

उपरोक्त कूटों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिये:

a) केवल 1, 2 और 4
b) केवल 2, 4 और 5
c) केवल 1, 2 और 5
d) केवल 2, 3 और 4

Q.3) Solution (c)

हस्तशिल्प और कृषि उत्पादों में आत्मनिर्भर होने के कारण भारत ने बड़े पैमाने पर विदेशी वस्तुओं का आयात नहीं किया था। दूसरी ओर, इसके औद्योगिक और कृषि उत्पादों की विदेशी बाजारों में अच्छी मांग थी। इसलिए इसका निर्यात इसके आयात से अधिक था; चांदी और सोने के आयात से व्यापार संतुलित था। भारत को कीमती धातुओं के सिंक (स्थल) के रूप में जाना जाता था।

आयात की वस्तुएं थीं:

1) फारस की खाड़ी क्षेत्र से- मोती, कच्चा रेशम, ऊन, खजूर, सूखे मेवे, और गुलाब जल;

2) अरब-कॉफी, सोना, ड्रग्स और शहद
3) चीन-चाय, चीनी, चीनी मिट्टी के बरतन, और रेशम
4) तिब्बत-सोना, कस्तूरी, और ऊनी कपड़ा
5) अफ्रीका-हाथी दांत और ड्रग्स
6) यूरोप- ऊनी कपड़ा, तांबा, लोहा, सीसा और कागज।

निर्यात की वस्तुएं थीं: सूती वस्त्र, कच्चे रेशम और रेशम के कपड़े, हार्डवेयर, नील, शोरा, अफीम, चावल, गेहूं, चीनी, काली मिर्च और अन्य मसाले, कीमती पत्थर और दवाएं।

कपड़ा उद्योग के महत्वपूर्ण केंद्र ढाका, मुर्शिदाबाद, पटना, सूरत, अहमदाबाद, ब्रोच, चंदेरी, बुरहानपुर, जौनपुर, वाराणसी, लखनऊ, आगरा, मुल्तान, लाहौर, मसूलीपट्टनम, औरंगाबाद, चिकाकोल, विशाखापत्तनम, बैंगलोर, कोयंबटूर, मदुरै, आदि; कश्मीर ऊनी निर्माताओं का केंद्र था।

Q.4) भू-राजस्व की महालवाड़ी व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भू-राजस्व का भुगतान किसानों द्वारा सीधे राज्य को किया जाता था।
2. स्वामित्व का अधिकार किसानों के पास था।
3. इसे थॉमस मुनरो ने प्रस्तुत किया था।

उपरोक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिए?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) केवल 1 और 2

Q.4) Solution (b)

महालवाड़ी व्यवस्था को होल्ट मैकेन्जी द्वारा 1822 में प्रस्तुत किया गया था। इसे गंगा घाटी, उत्तर-पश्चिम प्रांतों, मध्य भारत और पंजाब के कुछ हिस्सों में लागू किया गया था। क्योंकि उत्तर भारत और पंजाब में गांव पर संयुक्त भूमि अधिकार आम थे। इसलिए, अंग्रेजों ने इस पारंपरिक संरचना का उपयोग एक नए रूप में करने का फैसला किया जिसे महालवाड़ी व्यवस्था के नाम से जाना गया।

विशेषताएं:

- राजस्व का निर्धारण एक महाल (कई गांवों से मिलकर बनी संपत्ति) की उपज के आकलन के आधार पर किया जाता था। इस व्यवस्था में महाल या गाँव के ज़मींदारों या प्रधानों से बंदोबस्त किया गया। इसमें गाँव के प्रमुख किसानों को भूमि से बेदखल करने का अधिकार था।
- ग्राम समुदाय को इन कर संग्रह लक्ष्यों को काश्तकारों के बीच वितरित करना था
- प्रत्येक किसान राजस्व में अपने हिस्से का योगदान देता था।

- इस प्रकार हर कोई दूसरों के बकाया के लिए उत्तरदायी था। लेकिन फिर भी स्वामित्व के अधिकार व्यक्तिगत किसानों के पास थे, इस प्रकार किसानों को अपनी संपत्ति बेचने या गिरवी रखने का अधिकार था।

- इस व्यवस्था के तहत, सिफारिश, भूमि का सर्वेक्षण, भूमि में अधिकारों के रिकॉर्ड तैयार करना, भूमि राजस्व का निपटान, महलों में मांग और भूमि राजस्व का संग्रह ग्राम प्रधान या लंबरदार के माध्यम से किया जाता था।

- ब्रिटिश शासन समय-समय पर कर दरों में संशोधन करते थे।

Q.5) सगौली की संधि (Treaty of Sugauli) के क्या परिणाम हुए?

1. नेपाल सिक्किम से अलग हो गया।
2. ईस्ट इंडिया कंपनी को मध्य एशिया के साथ व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएं मिलीं।
3. गोरखा बड़ी संख्या में ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल हुए।

उपरोक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.5) Solution (d)

गोरखाओं ने 1760 में भटगांव के रंजीत मल्ला के उत्तराधिकारियों से नेपाल का नियंत्रण छीन लिया। उन्होंने पहाड़ों से परे अपने प्रभुत्व का विस्तार करना शुरू कर दिया। उन्हें दक्षिणी दिशा में विस्तार करना आसान लगा, क्योंकि उत्तर में चीनियों द्वारा अच्छी तरह से बचाव किया गया था। 1801 में, अंग्रेजों ने गोरखपुर पर कब्जा कर लिया, जो गोरखाओं की सीमा और कंपनी की सीमा को एक साथ लाया। लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23) के काल में गोरखाओं द्वारा बुटवाल और शेओराज पर कब्जा करने के कारण संघर्ष शुरू हुआ। 1816 की सगौली की संधि के साथ युद्ध समाप्त हुआ जो अंग्रेजों के पक्ष में थी। संधि के अनुसार:

- नेपाल ने एक ब्रिटिश रेज़ीडेन्ट की नियुक्ति को स्वीकार किया।
- नेपाल ने गढ़वाल और कुमाऊं के जिलों को सौंप दिया और तराई पर अपने दावा छोड़ दिया।
- नेपाल सिक्किम से भी पीछे हट गया।

इस समझौते से अंग्रेजों को कई फायदे हुए:

- ब्रिटिश साम्राज्य अब हिमालय तक पहुंच गया;
- इससे मध्य एशिया के साथ व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएं मिलीं;
- इसने शिमला, मसूरी और नैनीताल जैसे हिल स्टेशनों के लिए स्थलों का अधिग्रहण किया; तथा
- बड़ी संख्या में गोरखा ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल हुए।

Q.6) निम्नलिखित में से किसने प्राउड रिजर्व (Proud Reserve) की विदेश नीति को अपनाया?

a) लॉर्ड नॉर्थब्रुक
b) लॉर्ड लिटन
c) सर जॉन लॉरेंस
d) लॉर्ड कैनिंग

Q.6) Solution (b)

लॉर्ड लिटन 1876 में भारत के वाइसराय बने। उन्होंने 'प्राउड रिजर्व' की एक नई विदेश नीति शुरू की, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक सीमाओं और 'प्रभाव के क्षेत्रों' की रक्षा करना था। उन्होंने "अफगान शक्ति के क्रमिक विघटन और कमजोर पड़ने" को प्रभावित करने का प्रस्ताव रखा। इसके कारण दूसरा अफगान युद्ध (1878 - 1880) हुआ और गंडमक की संधि पर हस्ताक्षर किए गए।

Q.7) रिंग-फेंस/ घेरे (Ring- Fence) की नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका उद्देश्य कंपनी की सीमाओं की रक्षा के लिए बफर जोन/राज्य बनाना था।
2. हैदराबाद को आंग्ल मराठा युद्ध में बफर राज्य के रूप में इस्तेमाल किया गया था।
3. सहायक संधि की नीति रिंग-फेंस नीति का विस्तार थी।

उपरोक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिये?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.7) Solution (a)

जब उत्तर में, मराठों का लगातार खतरा बना रहा और दक्षिण में हैदर अली ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिए एक अभिशाप बन गया, तो इस स्थिति से निपटने के लिए एक नई नीति की आवश्यकता थी जिसके परिणामस्वरूप रिंग फेंसिंग नीति प्रस्तुत की गई।

यह नीति मराठों और मैसूर के खिलाफ वॉरेन हेस्टिंग्स के युद्धों में परिलक्षित हुई, और इसका उद्देश्य कंपनी की सीमाओं की रक्षा के लिए बफर जोन/राज्यों का निर्माण करना था तथा इन राज्यों पर दुश्मनों के सीधे हमले से इनकी रक्षा करना था, इसे एंग्लो मैसूर युद्ध में व्यवहार में लाया गया था जब हैदराबाद को बफर राज्य के रूप में इस्तेमाल किया गया था। इसी तरह, अवध और रोहिलखंड को मराठों के खिलाफ बफर राज्य के रूप में इस्तेमाल किया गया था।

वेलेस्ली की सहायक संधि रिंग-फेंस नीति का विस्तार थी। बफर राज्य और रिंग फेंस प्रांत अब समान नहीं रहे थे, बल्कि, उन्हें पहले अंग्रेजों के नियंत्रण में लाया गया और वहां से विस्तारवाद की नीति को प्रभावी ढंग से अंजाम दिया गया।

Q.8) निम्नलिखित में से कौन सा राज्य वेलेस्ली के सहायक संधि के अंतर्गत आया:

1. माचेरी (Macheri)
2. बूंदी
3. भरतपुर
4. नागपुर

उपरोक्त कूटों का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये:

a) केवल 1, 3 और 4
b) केवल 2, 3 और 4
c) केवल 1, 2 और 3
d) केवल 1, 2 और 4

Q.8) Solution (c)

सहायक संधि प्रणाली का उपयोग लॉर्ड वेलेस्ली द्वारा किया गया था, जो 1798-1805 तक भारत के गवर्नर-जनरल थे। इस प्रणाली के तहत, सहयोगी भारतीय राज्य के शासक को अपने क्षेत्र के भीतर एक ब्रिटिश सेना की स्थायी तैनाती को स्वीकार करने और इसके रखरखाव के लिए सहायता राशि का भुगतान करने के लिए मजबूर किया गया था।

भारतीय शासक को अपने दरबार में एक ब्रिटिश रेजिडेंट की नियुक्ति के लिए राजी होना पड़ता था। भारतीय शासक कंपनी के पूर्व परामर्श के बिना किसी भी यूरोपीय को अपनी सेवा में नियुक्त नहीं कर सकते थे। न ही वह गवर्नर-जनरल से परामर्श किए बिना युद्ध में जा सकते थे या किसी अन्य भारतीय शासक के साथ बातचीत कर सकते थे। इसके बदले में, अंग्रेज शासक को उसके शत्रुओं से बचाते थे और संबद्ध राज्य के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाते थे।

सहायक संधि वाले राज्य थे:

- हैदराबाद (1798; 1800)
- मैसूर (1799)
- तंजौर (अक्टूबर 1799)
- अवध (नवंबर 1801)
- पेशवा (दिसंबर 1801)
- बरार के भोंसले (दिसंबर 1803)
- सिंधिया (फरवरी 1804)
- जोधपुर (1818)
- जयपुर (1818)
- मचेरी (1818)
- बूंदी (1818)

- भरतपुर (1818)

Q.9) निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित हैं:

1. मैंगलोर की संधि : तीसरा आंग्ल-मैसूर युद्ध
2. सालबाई की संधि : दूसरा आंग्ल-मराठा युद्ध
3. गंडमक की संधि : प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध

उपरोक्त कूटों का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) 1, 2 और 3
d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Q.9) Solution (d)

11 मार्च 1784 को टीपू सुल्तान और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच मंगलौर की संधि पर हस्ताक्षर हुए थे। इस पर मैंगलोर में हस्ताक्षर किए गए जिससे दूसरे एंग्लो-मैसूर युद्ध का अंत हुआ।

सालबाई की संधि पर 17 मई 1782 को मराठा साम्राज्य और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधियों द्वारा पहले एंग्लो-मराठा युद्ध के परिणाम को सुलझाने के लिए लंबी बातचीत के बाद हस्ताक्षर किए गए थे, जिस पर वॉरेन हेस्टिंग्स और महादाजी सिंधिया के द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

गंडमक की संधि, जिस पर 1879 में दूसरे एंग्लो-अफगान युद्ध के दौरान हस्ताक्षर किए गए थे, ने खैबर जनजातियों को ब्रिटिश नियंत्रण में ला दिया।

Q.10) यांडाबो की संधि (Treaty of Yandabo) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. द्वितीय बर्मा युद्ध के बाद इस पर हस्ताक्षर किए गए थे।
2. संधि के द्वारा पूरे बर्मा पर कब्जा कर लिया गया था।

उपरोक्त कथनों के आधार पर सही उत्तर का चयन कीजिये?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) दोनों 1 और 2
d) न तो 1 और न ही 2

Q.10) Solution (d)

पहला बर्मा युद्ध (1824-26): युद्ध का मुख्य कारण बर्मा राज्य की सीमाओं का ब्रिटिश साम्राज्य के आस-पास तक फैल जाना था, जिस कारण से अंग्रेज़ों के समक्ष एक संकट खड़ा होने का ख़तरा बड़ गया था। इस युद्ध के प्रारम्भ में अंग्रेज़ गवर्नर-जनरल लॉर्ड एमहर्स्ट ने पूर्ण अयोग्यता का प्रदर्शन किया। फिर भी अंग्रेज़ सैनिकों ने डटकर मुकाबला किया और रंगून (अब यांगून) पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार में ले लिया। अंग्रेज़ों ने दक्षिणी बर्मा की राजधानी 'प्रोम' पर क़ब्ज़ा कर बर्मा सरकार को 'यान्दबू की सन्धि' (1826 ई.) के लिए मजबूर कर दिया।

जिसके अंतर्गत बर्मा ने;

- अंग्रेज़ों को एक करोड़ रुपया हर्जाने के रूप में देना स्वीकार किया।
- अराकान और तेनासरीम के सूबे अंग्रेज़ों को सौंप दिये गये।
- असम, कछार और जयंतिया में हस्तक्षेप न करने का वायदा किया।
- मणिपुर को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता।
- आवा में ब्रिटिश रेजीडेण्ट रखना स्वीकार कर लिया। इसके अलावा बर्मा को एक व्यावसायिक संधि भी करनी पड़ी, जिसके अंतर्गत अंग्रेज़ों को बर्मा में वाणिज्य और व्यावसाय के अनिर्दिष्ट अधिकार प्राप्त हो गये।

दूसरा बर्मा युद्ध (1852): दूसरा युद्ध ब्रिटिश व्यावसायिक आवश्यकता और लॉर्ड डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति का परिणाम था। ब्रिटिश व्यापारी ऊपरी बर्मा के लकड़ी के संसाधनों पर कब्जा करने के इच्छुक थे और उन्होंने बर्मी बाजार में और अधिक पैठ बनाने की मांग की। इस बार, अंग्रेजों ने बर्मा के एकमात्र शेष तटीय प्रांत पेगू पर कब्जा कर लिया। निचले बर्मा पर पूर्ण ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित होने से पहले एक तीव्र गुरिल्ला प्रतिरोध को दूर करना पड़ा।

तीसरा बर्मा युद्ध (1885): बर्मी राजा भिंडन की मृत्यु के बाद, उनके बेटे थिबा गद्दी पर बैठे। थिबा शुरू से ही अंग्रेजों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे। रंगून और निचले बर्मा में ब्रिटिश व्यापारी थिबा द्वारा सौतेले व्यवहार के बारे में शिकायत कर रहे थे, जो फ्रांस, जर्मनी और इटली की प्रतिद्वंद्वी शक्तियों के साथ वाणिज्यिक संधियों पर भी बातचीत कर रहे थे। फ्रांसीसी ने ऐसे समय में मांडले से फ्रांसीसी क्षेत्र तक रेल लाइन बिछाने की भी योजना बनाई, जब ब्रिटिश नाइजर, मिस्र और मेडागास्कर में फ्रांसीसी के साथ संघर्ष कर रहे थे। थिबा द्वारा एक ब्रिटिश इमारती लकड़ी कंपनी पर अपमानजनक जुर्माना लगाया गया था। डफरिन ने 1885 में ऊपरी बर्मा के आक्रमण और अंतिम रूप से विलय का आदेश दिया।

Q.11) निम्नलिखित में से किस अधिनियम/रेगुलेशन ने शिशु हत्या को अवैध और हत्या के समकक्ष घोषित किया:

a) 1829 का रेगुलेशन
b) 1795 और 1804 का बंगाल रेगुलेशन
c) सारदा अधिनियम, 1930
d) इनमें से कोई भी नहीं

Q. 11) Solution (b)

कन्याओं के जन्म के तुरंत बाद उनकी हत्या करने की प्रथा उच्च वर्ग बंगालियों और राजपूतों के बीच एक आम बात थी जो महिलाओं को आर्थिक बोझ मानते थे। 1795 और 1804 के बंगाल रेगुलेशन ने शिशु हत्या को अवैध और हत्या के समान घोषित किया। 1870 में

पारित एक अधिनियम ने माता-पिता के लिए सभी बच्चों के जन्म को पंजीकृत करना अनिवार्य कर दिया और जन्म के बाद कुछ वर्षों के लिए बालिकाओं के सत्यापन के लिए प्रावधान प्रदान किया, यह विशेष रूप से उन क्षेत्रों में था जहां इस प्रथा का अत्यधिक गोपनीयता से सहारा लिया गया था।

Q. 12) निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए:

1. विष्णु शास्त्री पंडित
2. जे.ई.डी. बेथ्यून
3. करसोंदास मुलीजी
4. बी.एम. मालाबारी

उपरोक्त में से कौन से प्रमुख व्यक्ति विधवा पुनर्विवाह के सक्रिय प्रवर्तक थे?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) केवल 2 और 4

Q. 12) Solution (c)

संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता के प्राचार्य, पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर (1820-91), के प्रयासों से हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 पारित किया गया था; इसने विधवाओं के विवाह को वैध ठहराया और ऐसे विवाहों के मुद्दों को वैध घोषित किया।

जगन्नाथ शंकर सेठ और भाऊ दाजी महाराष्ट्र में बालिकाओं के स्कूलों के सक्रिय प्रवर्तकों में से थे। 1850 के दशक में विष्णु शास्त्री पंडित ने विधवा पुनर्विवाह संघ की स्थापना की।

इस क्षेत्र में एक अन्य प्रमुख कार्यकर्ता करसोंदास मुलीजी थे जिन्होंने विधवा पुनर्विवाह की वकालत करने के लिए 1852 में गुजराती में सत्य प्रकाश (Satya Prakash) की शुरुआत की थी।

इसी तरह के प्रयास पश्चिमी भारत में प्रोफेसर डी.के.कर्वे और मद्रास में वीरसलिंगम पंतुलु द्वारा किए गए। कर्वे ने स्वयं 1893 में एक विधवा से विवाह किया। उन्होंने अपना जीवन हिंदू विधवाओं के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया और विधवा पुनर्विवाह संघ के सचिव बने। उन्होंने उच्च जाति की विधवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करके उन्हें जीवन में रुचि देने के लिए पूना में एक विधवा गृह खोला।

विधवाओं के पुनर्विवाह के अधिकार का समर्थन बी.एम. मालाबारी, नर्मदाशंकर (नर्मदाशंकर लाभाशंकर दवे), न्यायमूर्ति गोविंद महादेव रानाडे और के. नटराजन ने भी किया।

जे.ई.डी. बेथ्यून ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में काम किया और बी.एम. मालाबारी ने बाल विवाह के मुद्दे पर काम किया।

Q. 13) निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(महिला संगठन)	(संस्थापक)
1. भारत स्त्री महामंडल	सरला देवी चौधरानी

2. महिला सामाजिक सम्मेलन — मेहरीबाई टाटा
3. महिला अंतर्राष्ट्रीय परिषद — रमाबाई रानाडे

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 2 और 3
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 13) Solution (a)

1910 में, सरला देवी चौधरानी ने इलाहाबाद में भारत स्त्री महामंडल की पहली बैठक बुलाई। एक महिला द्वारा स्थापित प्रथम प्रमुख भारतीय महिला संगठन के रूप में माना जाता है, इसके उद्देश्यों में महिलाओं के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना, पर्दा प्रथा का उन्मूलन और पूरे भारत में महिला की सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार शामिल था। सरला देवी का मानना था कि महिलाओं के उत्थान के लिए काम करने वाला पुरुष 'मनु की छाया में' रहता है।

रमाबाई रानाडे ने 1904 में बॉम्बे में मूल संगठन नेशनल सोशल कान्फ्रेंस (National Social Conference) के तहत महिला सामाजिक सम्मेलन (भारत महिला परिषद) की स्थापना की।

1925 में, भारत में राष्ट्रीय महिला परिषद, अंतर्राष्ट्रीय महिला परिषद की एक राष्ट्रीय शाखा का गठन किया गया था। इसके गठन और उन्नति में मेहरीबाई टाटा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि पर्दा प्रथा, जातिगत मतभेद और शिक्षा की कमी ने महिलाओं को सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए काम करने से रोका। परिषद की कार्यकारी समिति में महत्वपूर्ण पदों पर रहने वाली अन्य महिलाओं में भारत की पहली महिला बैरिस्टर कॉर्नेलिया सरबजी शामिल थीं; अन्य एक धनी बैंकर की पत्नी ताराबाई प्रेमचंद; मुंबई के प्रमुख मुस्लिम परिवारों में से एक शफी तैयबजी; और केशव चंद्र सेन की बेटी महारानी सुचारू देवी थीं।

Q. 14) निम्नलिखित में से किस कारक ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जातिगत कठोरता को कम किया?

1. सामाजिक सुधार आंदोलन
2. बेहतर शिक्षा और रोजगार को लेकर निचली जातियों में उत्तेजना
3. औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा प्रेरित शक्तियां

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 2 और 3
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 14) Solution (d)

जाति-आधारित भेदभाव को कम करने में मदद करने वाले कारक थे::

- औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा प्रेरित शक्तियां

- सामाजिक सुधार आंदोलन
- राष्ट्रीय आंदोलन
- अस्पृश्यता के खिलाफ गांधी का अभियान
- बेहतर शिक्षा को लेकर निचली जातियों में उत्तेजना
- रोज़गार
- स्वतंत्र भारत का संविधान

Q. 15) निम्नलिखित को ध्यान मे रखते हुए:

1. अहोम विद्रोह (Ahom Revolt)
2. सिंगपो विद्रोह (Singhpo's Rebellion)
3. ज़ेलियांगसॉन्ग आंदोलन (Zeliangsong Movement)

उपरोक्त में से कौन सा आंदोलन 1857 के विद्रोह से पहले हुआ था?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 15) Solution (a)

अहोम विद्रोह (1828): प्रथम बर्मा युद्ध (1824-26) के बाद अंग्रेजों ने असम से हटने का संकल्प लिया था। लेकिन, युद्ध के बाद, पीछे हटने के बजाय, अंग्रेजों ने कंपनी के प्रभुत्व में अहोम के क्षेत्रों को शामिल करने का प्रयास किया। इसने 1828 में एक अहोम राजकुमार, गोमधर कुंवर के नेतृत्व में, धनजॉय बोंगोहेन और जयराम खारघरिया फुकन जैसे स्वदेशवासी लोगों के नेतृत्व में एक विद्रोह को जन्म दिया। जोरहाट के पास इकट्ठा होकर, विद्रोहियों ने औपचारिक रूप से गोमधर कुंवर को राजा बना दिया। अंत में, कंपनी ने एक सुलह नीति का पालन करने का फैसला किया और ऊपरी असम को महाराजा पुरंदर सिंह नरेंद्र को सौंप दिया और राज्य का हिस्सा असमिया राजा को बहाल कर दिया गया।

सिंगपो विद्रोह (1830): 1830 की शुरुआत में असम में सिंगपो के विद्रोह को तुरंत दबा दिया गया था लेकिन उन्होंने विद्रोहों को संगठित करना जारी रखा। 1839 में एक विद्रोह में ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट की मृत्यु हुई। 1843 में चीफ निरंग फिदु ने एक विद्रोह का नेतृत्व किया, जिसमें ब्रिटिश गैरीसन पर हमला और कई सैनिकों की मौत हुई थी।

ज़ेलियांगसॉन्ग मूवमेंट (1920s): 1917-19 में कुकी हिंसा के दौरान अंग्रेजों की उनकी रक्षा करने में विफलता के खिलाफ, असम में ज़ेमी, लियांगमेई और रोंगमेई जनजातियों के नेतृत्व में इसका नेतृत्व किया गया था।

Q. 16) निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(आंदोलन) (स्थान)

1. पहरिया विद्रोह राजमहल हिल्स क्षेत्र
2. चुआर विद्रोह जंगल महल क्षेत्र
3. नायकाडा आंदोलन केरल

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 16) Solution (b)

पहरियाओं का विद्रोह: अपने क्षेत्र पर ब्रिटिश विस्तार के कारण 1778 में राजमहल पहाड़ियों के मार्शल पहरिया ने विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों को उनके क्षेत्र को दामी-कोल क्षेत्र घोषित करके शांति स्थापित करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

चुआर विद्रोह: अकाल, बढ़ी हुई भू-राजस्व मांगों और आर्थिक संकट ने मिदनापुर जिले के जंगल महल और बांकुरा जिले (बंगाल में) के चुआर आदिवासियों को हथियार उठाने के लिए प्रेरित किया।

1860 के दशक में नायकाडा आंदोलन मध्य प्रदेश और गुजरात में था। यह अंग्रेजों और सवर्ण हिंदुओं के विरुद्ध था।

Q. 17) उत्तर-पूर्वी जनजातीय सीमांत आंदोलन मुख्यभूमि जनजातीय आंदोलनों से किस प्रकार भिन्न थे?

1. उत्तर-पूर्वी जनजातीय विद्रोह अक्सर भारतीय संघ के भीतर राजनीतिक स्वायत्तता के पक्ष में थे
2. उत्तर-पूर्वी जनजातीय आंदोलन वन आधारित नहीं थे।
3. अंग्रेजों के अधीन सीमांत जनजातीय विद्रोह, मुख्य भूमि जनजातीय आंदोलनों की तुलना में अधिक समय तक जारी रहे।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 17) Solution (d)

उत्तर-पूर्वी सीमांत की जनजातियों के आंदोलन कुछ पहलुओं में गैर-सीमावर्ती जनजातीय विद्रोहों से भिन्न थे:

एक बात तो यह है कि जिन जनजातियों ने सीमा पार के देशों के साथ आदिवासी और सांस्कृतिक संबंध साझा किए थे, वे खुद को राष्ट्रवादी संघर्ष से ज्यादा संबद्ध नहीं रखते थे। उनके विद्रोह अक्सर भारतीय संघ के भीतर राजनीतिक स्वायत्तता या पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में थे।

दूसरे, ये आंदोलन वन आधारित या कृषि विद्रोह नहीं थे क्योंकि ये आदिवासी आम तौर पर भूमि और वन क्षेत्र के नियंत्रण में थे। अंग्रेजों ने उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में गैर-सीमांत जनजातीय क्षेत्रों की तुलना में बहुत बाद में प्रवेश किया।

तीसरा, अंग्रेजों के अधीन सीमांत आदिवासी विद्रोह गैर-सीमांत जनजातीय आंदोलनों की तुलना में लंबे समय तक जारी रहे। असंस्कृतीकरण आंदोलन (De-sanskritisation movements) सीमावर्ती आदिवासियों के बीच भी फैल गया। मेइती ने नववैष्णव ब्राह्मणों के कदाचारों की निंदा करने के लिए चुरचंद महाराजा के शासन के दौरान (1891 और 1941 के बीच) एक आंदोलन का आयोजन किया। औपनिवेशिक काल में उत्तर-पूर्वी सीमांत क्षेत्र में संस्कृतिकरण आंदोलन लगभग पूरी तरह से अनुपस्थित थे।

Q. 18) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वह न्यू इंग्लिश स्कूल, डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी और फर्ग्यूसन कॉलेज के सह-संस्थापक थे।
2. वे केसरी के प्रथम संपादक थे।
3. उन्होंने आवधिक, सुधारक शुरू किया, जो छुआछूत और जाति व्यवस्था के खिलाफ बात करता था।

उपरोक्त कथन निम्नलिखित में से किसके संदर्भ में हैं?

a) गोपाल गणेश आगरकर
b) गोपालहरि देशमुख 'लोकहितवादी'
c) ज्योतिराव फुले
d) नारायण मल्हार जोशी

Q. 18) Solution (a)

गोपाल गणेश आगरकर (1856-1895) महाराष्ट्र के एक शिक्षाविद् और समाज सुधारक थे। मानवीय तर्क की शक्ति के प्रबल समर्थक, उन्होंने परंपरा पर अंध निर्भरता और अतीत के झूठे महिमामंडन की आलोचना की। वह न्यू इंग्लिश स्कूल, डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी और फर्ग्यूसन कॉलेज के सह-संस्थापक थे। वह फर्ग्यूसन कॉलेज के प्रिंसिपल थे। वह लोकमान्य तिलक द्वारा शुरू की गई पत्रिका केसरी के पहले संपादक भी थे। बाद में, उन्होंने अपना स्वयं का आवधिक, सुधारक शुरू किया, जो छुआछूत और जाति व्यवस्था के खिलाफ बात करता था।

Q. 19) जस्टिस मूवमेंट (Justice Movement) का उद्देश्य था:

a) आत्मा की शाश्वतता, गुरु की सर्वोच्चता और अच्छे कर्म की आवश्यकता पर जोर देना।
b) विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा का मुद्दा उठाना
c) विधायिका में गैर ब्राह्मणों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।
d) इनमें से कोई भी नहीं

Q. 19) Solution (c)

जस्टिस मूवमेंट: मद्रास प्रेसीडेंसी में इस आंदोलन की शुरुआत सी.एन. मुदलियार, टी.एम. नायर और पी. त्यागराज विधायिका में गैर-ब्राह्मणों के लिए नौकरियों और प्रतिनिधित्व को सुरक्षित करने के लिए 1917 में, मद्रास प्रेसीडेंसी एसोसिएशन का गठन किया गया जिसने विधायिका में निचली जातियों के लिए पृथक प्रतिनिधित्व की मांग की।

Q.20) 19वीं शताब्दी के दौरान दो प्रकार के सामाजिक सुधार आंदोलन हुए- सुधारवादी और पुनरुत्थानवादी। निम्नलिखित में से किसे पुनरुत्थानवादी आंदोलनों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है?

1. आर्य समाज

2. प्रार्थना समाज
3. देवबंद आंदोलन

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 20) Solution (c)

19वीं शताब्दी में भारत में दो प्रकार के सुधार आंदोलन हुए:

1. सुधारवादी: इन आंदोलनों ने आधुनिक युग के समय और वैज्ञानिक स्वभाव के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। कुछ सुधारवादी आंदोलन थे: ब्रह्म समाज; प्रार्थना समाज; सत्य साधक समाज; अलीगढ़ आंदोलन; यंग बंगाल मूवमेंट और रामकृष्ण मिशन।
2. पुनरुद्धारवादी: इन आंदोलनों ने प्राचीन भारतीय परंपराओं और विचारों को पुनर्जीवित करना शुरू कर दिया और माना कि पश्चिमी सोच ने भारतीय संस्कृति और लोकाचार को बर्बाद कर दिया। कुछ पुनरुत्थानवादी आंदोलन थे: आर्य समाज; देवबंद आंदोलन आदि।

Q. 21) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अग्रदूत थे?

1. व्यायाम मंडल
2. स्वदेश बांधव समिति
3. पूना सार्वजनिक सभा
4. इंडिया इंडिपेंडेंस लीग
5. ईस्ट इंडिया एसोसिएशन

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2 और 5
c) केवल 1 और 4
d) केवल 3 और 5

Q. 21) Solution (d)

1. व्यायाम मंडल का गठन चापेकर बंधु के नाम से जाने जाने वाले दामोदर हरि और बालकृष्ण हरि ने 1896-97 में पूना में किया था।
2. स्वदेश बांधव समिति की स्थापना अश्विनी कुमार दत्त ने 1905 में की थी। इसका उद्देश्य स्वदेशी उत्पादों के उपभोग को बढ़ावा देना और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना था।

3. पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना 2 अप्रैल 1870 को पूना में मूल रूप से एक स्थानीय मंदिर के संचालन पर लोगों के असंतोष के कारण हुई थी। इसकी स्थापना महादेव गोविंद रानाडे, गणेश वासुदेव जोशी, एस एच चिपलूनकर ने की थी। इसकी शुरुआत भारतीय शासन और लोगों के बीच मध्यस्थ निकाय के रूप में काम करने और किसानों के कानूनी अधिकारों को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से हुई थी।

4. इंडियन इंडिपेंडेंस लीग (Indian Independence League) की स्थापना तारकनाथ दास ने 1905 में कैलिफोर्निया (यूएसए) में की थी। इस राजनीतिक संगठन का उद्देश्य भारत से बाहर रहने वालों को भारत पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को हटाने के लिए संगठित करना था।

5. ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (East India Association) की स्थापना दादाभाई नौरोजी ने 1866 में लंदन में भारतीयों और सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारियों के सहयोग से की थी। यह भारत के बारे में मामलों और विचारों पर चर्चा करने और सरकार को भारतीयों के लिए प्रतिनिधित्व प्रदान करने का एक मंच था।

Q. 22) निम्नलिखित में से कौन उदारवादी नेता थे?

1. एम जी रानाडे
2. बाल गंगाधर तिलक
3. अश्विनी कुमार दत्त
4. सुरेंद्र नाथ बनर्जी
5. जी.सुब्रमण्य अय्यर

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) 1, 2 और 3
b) 2, 3 और 5
c) 3, 4 और 5
d) 1, 4 और 5

Q. 22) Solution (d)

उदारवादी / नरमपंथी नेता

उदारवादी ऐसे नेता थे जो नरमपंथी और उदारवादी राजनीति में विश्वास करते थे। वे अंग्रेजों को न्यायप्रिय लेकिन उनके मुद्दों से बेखबर मानते थे। उनका मानना था कि यदि शासकों को भारतीयों की स्थिति के बारे में पता चल जाएगा, तो वे उसमें अवश्य सुधार करेंगे। इसे प्राप्त करने के लिए, उन्होंने जनता को एकजुट करने, उन्हें शिक्षित करने और एक मजबूत जनमत बनाने का प्रयास किया। इस एकता का इस्तेमाल तब अंग्रेजों को अपनी नीतियों में सुधार करने और उन्हें जनता की राय के अनुरूप लाने के लिए मजबूर करने हेतु किया गया था।

- महत्वपूर्ण उदारवादी नेता थे: ए.ओ. ह्यूम, डब्लू. सी. बनर्जी, सुरेंद्र नाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, फिरोज शाह मेहता।, गोपालकृष्ण गोखले. पंडित मदन मोहन मालवीय, बदरुद्दीन तैयबजी, न्यायमूर्ति रानाडे और जी.सुब्रमण्य अय्यर।

उग्रवादी/ चरमपंथी नेता

उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ अधिक आक्रामक रुख अपनाया। वे आम तौर पर युवा थे और उदारवादी नेताओं के नरम और प्रेरक दृष्टिकोण में विश्वास नहीं करते थे। वे विरोध और मांग करने के लिए संवैधानिक तरीकों पर नहीं टिके। उन्होंने बहिष्कार, हड़ताल आदि का सहारा लिया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं को भी जलाया। वे अनुनय के बजाय टकराव में विश्वास करते थे।

- महत्वपूर्ण चरमपंथी नेता थे: लाला लाजपत राय, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, अरबिंदो घोष, राजनारायण बोस और अश्विनी कुमार दत्त।

Q. 23) उदारवादी नेताओं (Moderate Leaders) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्रशासन में अधिक भारतीय को लाना चाहते थे, न कि ब्रिटिश शासन की समाप्ति
2. वे याचिका, प्रार्थना और विरोध के सिद्धांतों का पालन करते थे।
3. वे राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न करने के लिए भारत की गौरवशाली संस्कृति पर गर्व करना चाहते थे।
4. भारतीयों को जागरूक करने के लिए उन्हें स्वराज्य, स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित किया गया था।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1, 2 और 3
c) केवल 2, 3 और 4
d) 1, 2, 3 और 4

Q. 23) Solution (a)

उदारवादी राजनीतिक गतिविधि में कानून के दायरे में संवैधानिक आंदोलन शामिल था और इसने धीमी लेकिन व्यवस्थित राजनीतिक प्रगति दिखाई। नरमपंथियों का मानना था कि अंग्रेज मूल रूप से भारतीयों के प्रति न्यायप्रिय बनना चाहते थे लेकिन वास्तविक परिस्थितियों से अवगत नहीं थे। इसलिए, यदि देश में जनमत का निर्माण किया जाता है और जनता की मांगों को प्रस्तावों, याचिकाओं, बैठकों आदि के माध्यम से सरकार के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है, तो अधिकारी इन मांगों को धीरे-धीरे मान लेंगे।

उनका उद्देश्य प्रशासनिक और संवैधानिक सुधारों का था। वे प्रशासन में अधिक भारतीय चाहते थे, न कि ब्रिटिश शासन की समाप्ति। वे मिल, बर्क, स्पेंसर और बेंथम जैसे पश्चिमी दार्शनिकों के विचारों से प्रेरित थे। उदारवादियों ने उदारवाद, लोकतंत्र, समानता और स्वतंत्रता के पश्चिमी विचारों को आत्मसात किया।

उन्होंने 3पी के सिद्धांतों का पालन किया: याचिका, प्रार्थना और विरोध (Petition, Prayer and Protest)। वे सहयोग और मेल-मिलाप में विश्वास करते थे।

दूसरी ओर चरमपंथी नेता राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न करने के लिए भारत की गौरवशाली संस्कृति पर गर्व करना चाहते थे। उन्होंने मातृभूमि के लिए लड़ने की शक्ति के लिए देवी काली या दुर्गा का आह्वान किया। भारतीयों को जागरूक करने के लिए उन्हें स्वराज्य, स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित किया था।

Q. 24) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उदारवादी नेताओं का क्या योगदान था?

1. जन आंदोलन का संगठन

2. ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक आलोचना
3. संवैधानिक सुधार
4. नागरिक अधिकारों की रक्षा
5. सहकारी संस्थाओं को प्रोत्साहित किया

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1, 2 और 3
b) केवल 2, 3 और 4
c) केवल 3, 4 और 5
d) केवल 1, 4 और 5

Q. 24) Solution (b)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नरमपंथियों का योगदान था:

1. ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आर्थिक आलोचना: दादाभाई नौरोजी के नेतृत्व में प्रारंभिक राष्ट्रवादी, आर.सी. दत्त, दिनशॉ वाचा और अन्य ने भारत में ब्रिटिश शासन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया, और भारत के ब्रिटिश शोषण की व्याख्या करने के लिए "ड्रेन थ्योरी या निकासी सिद्धांत" को सामने रखा।

उन्होंने मूल रूप से आत्मनिर्भर भारतीय अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में बदलने का विरोध किया (अर्थात कच्चे माल और खाद्य सामग्री का आपूर्तिकर्ता, तैयार माल का आयातक और ब्रिटिश पूंजी के लिए निवेश का क्षेत्र)। इस प्रकार, नरमपंथी एक अखिल भारतीय जनमत बनाने में सक्षम थे कि भारत में ब्रिटिश शासन भारत की गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन का प्रमुख कारण था।

2. संवैधानिक सुधार: उन्होंने संगठित तरीके से लोगों में राष्ट्रीय भावनाएँ पैदा करने की प्रक्रिया भी शुरू की। उन्होंने लोकतांत्रिक अवधारणा को मजबूत किया, प्रतिनिधि संस्थानों और वैकल्पिक सिद्धांतों के विचार को लोकप्रिय बनाया।

नरमपंथियों की कुछ प्रमुख उपलब्धियां थीं क) भारतीय परिषद के 1882 के अधिनियम को पारित करना ख) 1895 में भारतीय व्यय पर वेल्बी आयोग का गठन ग) 1893 में सिविल सेवाओं की समकालिक परीक्षाओं के लिए हाउस ऑफ कॉमन्स में प्रस्ताव पारित करना।

3. नागरिक अधिकारों की रक्षा: इन अधिकारों में भाषण, विचार, संघ और एक स्वतंत्र प्रेस का अधिकार शामिल था। एक निरंतर अभियान के माध्यम से, राष्ट्रवादी आधुनिक लोकतांत्रिक विचारों को फैलाने में सक्षम थे, और जल्द ही नागरिक अधिकारों की रक्षा स्वतंत्रता संग्राम का एक अभिन्न अंग बन गई।

राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी चरण का एक संकीर्ण सामाजिक आधार था और जनता ने निष्क्रिय भूमिका निभाई। इसका कारण यह था कि आरंभिक राष्ट्रवादियों को जनता में राजनीतिक विश्वास की कमी थी; उन्होंने महसूस किया कि भारतीय समाज में कई विभाजन और उप-विभाजन हैं, और जनता आम तौर पर अज्ञानी थी और रूढ़िवादी अवधारणा और विचार रखती थी।

चरमपंथी नेताओं द्वारा सहकारी संगठनों को प्रोत्साहित किया गया। ग्रामीण स्वच्छता, निवारक पुलिस कर्तव्यों, तीर्थयात्रियों की सभा के नियमन, अकाल और अन्य राष्ट्रीय आपदाओं के दौरान राहत प्रदान करने के लिए स्वैच्छिक संघों की स्थापना की गई थी। ब्रिटिश प्रशासन के साम्राज्यवादी और अमानवीय व्यवहार को उद्घाटित करने के लिए, गांवों और छोटे शहरों में नागरिक और असंज्ञेय विवादों को निपटाने के लिए मध्यस्थता समितियों की स्थापना की गई थी।

Q. 25) भारत के स्वतंत्रता संग्राम में श्यामजी कृष्ण वर्मा के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. उन्होंने सैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी (Gadar Party) की स्थापना की।
2. उन्होंने लंदन में भारतीय छात्रों के लिए एक छात्रावास के रूप में इंडिया हाउस (India House) की स्थापना की।
3. उन्होंने जर्नल द इंडियन सोशियोलोजिस्ट (Journal the Indian Sociologist) की शुरुआत की।
4. उन्होंने अफगानिस्तान में भारत की पहली अस्थायी सरकार की स्थापना की।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 3 और 4
d) केवल 1 और 4

Q. 25) Solution (b)

श्यामजी कृष्ण वर्मा एक भारतीय क्रांतिकारी सेनानी, वकील और पत्रकार थे। उन्होंने लंदन में इंडियन होम रूल सोसाइटी, इंडिया हाउस और द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट की स्थापना की।

इंडिया हाउस उस समय ब्रिटेन में भारतीय छात्रों के बीच कट्टरपंथी राष्ट्रवादियों के लिए एक संगठित बैठक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ और भारत के बाहर क्रांतिकारी भारतीय राष्ट्रवाद के सबसे प्रमुख केंद्रों में से एक था। इस संगठन के सदस्यों में सबसे प्रसिद्ध वीर सावरकर थे।

इंडियन सोशियोलोजिस्ट 20वीं सदी की शुरुआत में एक भारतीय राष्ट्रवादी पत्रिका थी। इसका उपशीर्षक एन ऑर्गन ऑफ फ्रीडम (An Organ of Freedom), और राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक सुधार था। पत्रिका का संपादन श्यामजी कृष्णवर्मा ने 1905 से 1914, तक, फिर 1920 और 1922 के बीच किया था।

1913 में लाला हरदयाल ने पैसिफिक कोस्ट हिंदुस्तान एसोसिएशन (Pacific Coast Hindustan Association) की स्थापना की, जिसके अध्यक्ष सोहन सिंह भाकना थे, जिसे ग़दर पार्टी कहा जाता था। इस पार्टी के सदस्य मुख्यतः अमेरिका और कनाडा के अप्रवासी सिख थे।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1 दिसंबर, 1915 को, राजा महेंद्र प्रताप ने अफगानिस्तान के काबुल में भारत की पहली अनंतिम सरकार की स्थापना की, जिसमें स्वतंत्र हिंदुस्तान की निर्वासित सरकार थी, स्वयं राष्ट्रपति के रूप में, मौलवी बरकतुल्लाह प्रधान मंत्री और मौलवी अबैदुल्ला सिंधी गृह मंत्री के रूप में थे।

Q. 26) बंगाल विभाजन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. बंगाल विभाजन के समय लॉर्ड मिंटो भारत के वायसराय थे।
2. कृष्ण कुमार मित्रा ने अपनी पत्रिका संजीबनी के माध्यम से विभाजन विरोधी अभियान को नेतृत्व प्रदान किया।
3. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लक्ष्य के रूप में स्वराज को दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में कलकत्ता अधिवेशन में घोषित किया गया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 26) Solution (c)

बंगाल का विभाजन, (1905), भारत में ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा मजबूत भारतीय राष्ट्रवादी विरोध के बावजूद बंगाल का विभाजन किया गया। इस घटना से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक मध्यवर्गीय दबाव समूह से एक राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन में बदलने की शुरुआत की।

1903-1905 की अवधि में नेतृत्व सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, के.के. मित्रा और पृथ्वीचंद्र राय द्धारा। उनके द्धारा अपनाए गए तरीकों में सरकार को याचिकाएं, जनसभाएं, ज्ञापन, और पर्चे और समाचार पत्रों जैसे हितबादी, संजीबनी और बंगाली के माध्यम से प्रचार शामिल थे। उनका उद्देश्य भारत और इंग्लैंड में एक शिक्षित जनमत के माध्यम से बंगाल के अन्यायपूर्ण विभाजन को लागू होने से रोकने के लिए सरकार पर पर्याप्त दबाव डालना था।

कृष्ण कुमार मित्रा ने अपनी पत्रिका संजीबनी का इस्तेमाल विभाजन के खिलाफ जनमत को जागृत करने के लिए किया और 13 जुलाई 1905 को उन्होंने खुले तौर पर पत्रिका के माध्यम से विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया। उन्होंने 1906 में बारीसाल में बंगाल प्रांतीय सम्मेलन में भाग लिया जहां उन्होंने स्वदेशी कार्यकर्ताओं के खिलाफ पुलिस अत्याचारों की निंदा की। उसी वर्ष बंगाल सरकार ने एक सर्कुलर जारी कर किसी भी जुलूस या सार्वजनिक सभा में वंदे मातरम के गायन पर प्रतिबंध लगा दिया। कृष्ण कुमार मित्रा प्रतिबंध का विरोध करने के लिए बनाई गई एंटी-सर्कुलर सोसाइटी (Anti-Circular Society) के अध्यक्ष बने।

दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में कलकत्ता (1906) में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में, यह घोषित किया गया था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लक्ष्य यूनाइटेड किंगडम के ऑस्ट्रेलिया या कनाडा के उपनिवेशों की तरह स्व-सरकार या स्वराज" प्राप्त करना था।

Q. 27) निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(समाचार पत्र/जर्नल)	(संस्थापक)
1. सुधारक (Sudharak)	गोपाल गणेश अगरकर
2. उद्बोधन (Udbodhana)	स्वामी विवेकानंद
3. कामरेड (Comrade)	अबुलकलाम आज़ाद

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 27) Solution (b)

सुधारक, भारत का एक समाचार पत्र था। इसकी स्थापना 1888 में गोपाल गणेश अगरकर ने की थी, जिन्होंने पहले केसरी का संपादन किया था। समाचार पत्र एक एंग्लो-मराठी भाषा का कार्य था और पुणे शहर में प्रकाशित हुआ था।

उद्बोधन रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन का एकमात्र बंगाली प्रकाशन था, जिसे विवेकानंद ने जनवरी 1899 में शुरू किया था।

कॉमरेड एक साप्ताहिक अंग्रेजी भाषा का समाचार पत्र था जिसे मौलाना मोहम्मद अली ने 1911 और 1914 के बीच प्रकाशित और संपादित किया था।

Q. 28) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ज़िम्मरमैन योजना (Zimmerman Plan) की कल्पना करने में युगांतर पार्टी की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
2. ज़िम्मरमैन योजना का उद्देश्य जर्मन समर्थन से सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) दोनों 1 और 2
d) न तो 1 और न ही 2

Q. 28) Solution (b)

राष्ट्रवादियों का मानना था कि प्रथम विश्व युद्ध सैनिकों के बीच राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करेगा क्योंकि वे यूरोपीय देशों की स्वतंत्रता का अनुभव करेंगे और भारत में औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ तख्तापलट की साजिश रचने के लिए शत्रु राष्ट्रों के युद्ध के कैदियों का उपयोग करने का अवसर प्राप्त करेंगे।

क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ युद्ध छेड़ने और देश को आजाद कराने के अवसर का उपयोग करने का फैसला किया। ब्रिटिश युद्ध के प्रयासों के भारतीय समर्थक यह देखने में विफल रहे कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपने उपनिवेशों और बाजारों की सुरक्षा के लिए लड़ रही थीं।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, युगांतर पार्टी ने विदेशों में सहानुभूति रखने वालों और क्रांतिकारियों के माध्यम से जर्मन हथियार और गोला-बारूद आयात करने की व्यवस्था की। जतिन ने राशबिहारी बोस को ऊपरी भारत की कमान संभालने के लिए कहा, जिसका उद्देश्य 'जर्मन प्लॉट' या 'जिम्मरमैन प्लान' के नाम से एक अखिल भारतीय विद्रोह लाना था। युगांतर पार्टी ने डकैतियों की एक श्रृंखला के माध्यम से धन जुटाया, जिसे टैक्सीकैब डकैती और नाव डकैती के रूप में जाना जाने लगा, ताकि भारत-जर्मन साजिश को अंजाम दिया जा सके। यह योजना बनाई गई थी कि फोर्ट विलियम पर अधिकार और सशस्त्र बलों द्वारा एक विद्रोह के साथ, देश में विद्रोह शुरू करने के लिए एक गुरिल्ला सेना का आयोजन किया जाएगा।

दुर्भाग्य से क्रांतिकारियों के लिए, एक गद्दार द्वारा साजिश को लीक कर दिया गया था। पुलिस को पता चला कि बाघा जतिन बालासोर में जर्मन हथियारों की डिलीवरी का इंतजार कर रहे हैं। पुलिस ने जतिन और उसके साथियों का पता लगा लिया। गोलाबारी हुई जिसके परिणामस्वरूप क्रांतिकारियों को या तो मार दिया गया या गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार जर्मन साजिश विफल रही। सितंबर 1915 में उड़ीसा तट पर बालासोर में जतिन मुखर्जी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

Q. 29) निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(घटना)	(शामिल क्रांतिकारी)
1. कानपुर बोल्शेविक षडयंत्र केस	एम एन रॉय
2. मुजफ्फरपुर षडयंत्र केस	रास बिहारी बोस
3. दिल्ली षडयंत्र केस	खुदीराम बोस

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 2 और 3
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 29) Solution (a)

1. कानपुर बोल्शेविक षडयंत्र केस (1924): इस मामले में, भारत के नए उभरे कम्युनिस्टों को ब्रिटिश सरकार द्वारा दमित किया गया था। एम एन रॉय, मुजफ्फर अहमद, एस ए डांगे, शौकत उस्मानी, नलिनी गुप्ता, सिंगारवेलु चेट्टियार, गुलाम हुसैन को सरकार ने पकड़ा और सरकार के खिलाफ साजिश रचने के आरोप में उन्हें फंसाया गया।

2. मुजफ्फरपुर षडयंत्र केस (1908): मुजफ्फरपुर के मुख्य प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट डीएच किंग्सफोर्ड को मारने के लिए खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी द्वारा यह एक क्रांतिकारी साजिश थी। उन्होंने डीएच किंग्सफोर्ड के एक वाहन पर बम फेंका लेकिन वह हमले से बच गया और दुर्भाग्य से, दो ब्रिटिश महिलाओं की मौत हो गई। बाद में, खुदीराम बोस को भारतीय ब्रिटिश पुलिस अधिकारी नंदलाल बनर्जी ने गिरफ्तार कर लिया, जिनकी बाद में नरेंद्रनाथ बनर्जी ने गोली मारकर हत्या कर दी। प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या कर ली जब वह पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने वाले थे। खुदीराम बोस सबसे कम उम्र के भारतीय थे जिन्हें अंग्रेजों ने फांसी दी थी।

3. दिल्ली षडयंत्र केस (1912): इस घटना को दिल्ली-लाहौर षडयंत्र के नाम से भी जाना जाता है। यह बंगाल और पंजाब में भूमिगत भारतीय क्रांतिकारी द्वारा आयोजित किया गया था और भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की हत्या के लिए रास बिहारी बोस की अध्यक्षता में किया गया था। बसंत कुमार विश्वास, अमीर चंद, और अवध बिहारी को इस दिल्ली षडयंत्र मामले के मुकदमे में दोषी ठहराया गया और उन्हें फांसी दी गई।

Q.30) होम रूल लीग आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. तिलक की लीग से पहले एनी बेसेंट की लीग की स्थापना हुई।
2. बेसेंट की लीग का अखिल भारतीय कवरेज था जबकि तिलक की लीग महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रांत और बरार तक ही सीमित थी।
3. मोंटेग्यू की अगस्त घोषणा और मोंटफोर्ड सुधार होम रूल आंदोलन से प्रभावित थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2

c) केवल 1 और 3
d) केवल 2 और 3

Q. 30) Solution (d)

होमरूल का तात्पर्य एक ऐसी स्थिति से है जिसमें किसी देश का शासन वहाँ के स्थायी नागरिकों के द्वारा ही चलाया जाता है। प्रशासन में ब्रिटिश नियंत्रण को कम करने के लिये होमरूल को एक आंदोलन के रूप में 1870 से 1907 के बीच आयरलैंड में चलाया गया था। ऐनी बेसेंट तथा तिलक के नेतृत्व में चलाया गया भारतीय होमरूल आंदोलन आयरिश होमरूल आंदोलन से प्रभावित था।

प्रमुख नेताओं- बालगंगाधर तिलक, एनी बेसेंट, जीएस खापर्डे, सर एस सुब्रमण्यम अय्यर, जोसेफ बैप्टिस्टा और मोहम्मद अली जिन्ना सहित अन्य लोगों ने एक साथ मिलकर फैसला किया कि एक राष्ट्रीय गठबंधन होना जरूरी है जो पूरे साल काम करेगा (कांग्रेस के विपरीत जिसका वार्षिक सत्र था) जो ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के भीतर पूरे भारत के लिए स्व-शासन या गृह शासन की मांग के मुख्य उद्देश्य के साथ था। यह गठबंधन आयरिश होम रूल लीग की तर्ज पर ऑल इंडिया होम रूल लीग होना था।

तिलक ने अप्रैल 1916 में अपनी इंडियन होम रूल लीग की स्थापना की। तिलक ने बेलगाम में अपनी पहली होमरूल बैठक की। पूना उनकी लीग का मुख्यालय था। उनकी लीग महाराष्ट्र (बॉम्बे शहर को छोड़कर), कर्नाटक, मध्य प्रांत और बरार तक ही सीमित थी। इसकी छह शाखाएं थीं और मांगों में स्वराज्य, भाषाई राज्यों का गठन और मातृभाषा में शिक्षा शामिल थी।

एनी बेसेंट ने सितंबर 1916 में मद्रास (अब चेन्नई) में अपनी अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की और शेष भारत (बॉम्बे शहर सहित) को कवर किया। इसकी 200 शाखाएँ थीं, तिलक की लीग की तुलना में शिथिल रूप से संगठित थी और जॉर्ज अरुंडेल के आयोजन सचिव के रूप में थे। अरुंडेल के अलावा, मुख्य कार्य बी.डब्ल्यू. वाडिया और सी.पी. रामास्वामी अय्यर ने किया।

होम रूल लीग आंदोलन के सकारात्मक लाभ थे:

- जन-आंदोलन पर अधिक ज़ोर
- शहर और देश के बीच स्थापित संगठनात्मक कड़ी का निर्माण
- अगस्त 1917 में मोंटेग्यू की घोषणा और मोंटफोर्ड सुधारों को प्रभावित किया
- उत्साही राष्ट्रवादियों की एक पीढ़ी तैयार की
- लखनऊ में प्रभावित उदारवादी-चरमपंथी पुनर्मिलन/सम्मिलन (1916)

Q. 31) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गठित निम्न में से कौन सी समिति शिक्षा से संबंधित थी?

1. सैडलर आयोग
2. हर्टोग आयोग
3. बबिंगटन स्मिथ आयोग
4. रैले आयोग

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1, 2 और 3

b) केवल 2, 3 और 4

c) केवल 1, 3 और 4

d) केवल 1, 2 और 4

Q. 31) Solution (d)

1. 1917 में, भारत सरकार ने विश्वविद्यालय के कामकाज और जरूरतों की जांच के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति की, जिसे सैडलर आयोग के रूप में जाना जाता है। लीड्स विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. माइकल सैडलर को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया। आयोग में दो भारतीय सदस्य शामिल थे, अर्थात् सर आशुतोष मुखर्जी और डॉ जिया-उद-दीन अहमद।

2. 1928 में साइमन कमीशन ने भारत में शिक्षा की स्थिति की समीक्षा के लिए सर फिलिप हार्टोग की अध्यक्षता में एक उप-समिति नियुक्त की। हार्टोग कमेटी ने शिक्षण और शोध के तरीकों की प्रशंसा करते हुए कुछ विश्वविद्यालयों के गिरते स्तर की शिकायत की। समिति ने सरकार को प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के बजाय समेकन पर ध्यान केंद्रित करने की सिफारिश की।

3. 1919 में चेम्सफोर्ड द्वारा बैबिंगटन स्मिथ आयोग (Babington Smith Commission) द्वारा भारत की वर्तमान स्थिति पर विचार करने के लिए।

4. लॉर्ड कर्जन ने भारत में विश्वविद्यालयों की स्थिति और संभावनाओं की जांच करने तथा उनके संविधान और कामकाज में सुधार के प्रस्तावों की सिफारिश करने के लिए 27 जनवरी 1902 को सर थॉमस रैले की अध्यक्षता में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग के रूप में जाना जाने वाला शिक्षा आयोग नियुक्त किया। आयोग की सिफारिश की रिपोर्ट के परिणामस्वरूप 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (Indian Universities Act) पारित किया गया।

Q. 32) निम्नलिखित में से किसने पहली बार वायसराय की कार्यकारी परिषद के साथ भारतीयों का संपर्क प्रदान किया?

a) भारतीय परिषद अधिनियम 1892

b) मॉर्ले-मिंटो सुधार

c) मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार

d) 1935 का भारत सरकार अधिनियम

Q. 32) Solution (b)

1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों ने भारतीयों को वायसराय और गवर्नरों की कार्यकारी परिषदों के साथ जोड़ने के लिए (पहली बार) प्रावधान प्रदान किया। सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा वायसराय की कार्यकारी परिषद में शामिल होने वाले पहले भारतीय बने। उन्हें विधि सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था।

Q. 33) नेहरू रिपोर्ट (Nehru Report) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत की पूर्ण स्वतंत्रता रिपोर्ट की मुख्य सिफारिश थी।

2. यह भारतीयों द्वारा देश के लिए एक संवैधानिक ढांचे का मसौदा तैयार करने का पहला बड़ा प्रयास था।
3. इसने महिलाओं के लिए समान अधिकार, यूनियन/संघ बनाने का अधिकार और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार सहित मौलिक अधिकारों की सिफारिश की।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2 और 3

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q.33) Solution (b)

मई 1928 में मोतीलाल नेहरू के अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की गई थी। राष्ट्रवादियों द्वारा नियुक्त नेहरू समिति साइमन कमीशन की नियुक्ति के प्रति उनकी प्रतिक्रिया थी और लॉर्ड बिरकेनहेड द्वारा भारतीयों को एक संविधान बनाने के लिए दी गई चुनौती थी जिस पर भारतीय राय एकीकृत/समन्वित हो।

भारतीयों द्वारा देश के लिए एक संवैधानिक ढांचे का मसौदा तैयार करने का यह पहला बड़ा प्रयास था। समिति में तेज बहादुर सप्रू, सुभाष बोस, एम.एस. अने, मंगल सिंह, अली इमाम, शोएब कुरैशी और जी.आर. प्रधान इसके सदस्य हैं। अगस्त 1928 तक रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया।

नेहरू रिपोर्ट की मुख्य सिफारिशें थीं:

- भारतीयों द्वारा वांछित सरकार के रूप में स्वशासी प्रभुत्व की तर्ज पर डोमिनियन का दर्जा।
- पृथक निर्वाचन क्षेत्रों की अस्वीकृति
- महिलाओं के लिए समान अधिकार, यूनियन/संघ बनाने का अधिकार और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार सहित उन्नीस मौलिक अधिकार।
- केंद्र और प्रांतों में उत्तरदायी सरकार
- मुसलमानों के सांस्कृतिक और धार्मिक हितों की पूर्ण सुरक्षा।
- धर्म से राज्य का पूर्ण पृथक्करण

डोमिनियन स्टेटस का मतलब भारत को अर्ध स्वायत्त दर्जा देना था न कि पूर्ण स्वतंत्रता जहां भारत अभी भी ब्रिटिश संप्रभुता और ब्रिटिश सम्राट को राज्य के प्रमुख के रूप में स्वीकार करेगा। डोमिनियन स्टेटस का तात्पर्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वायत्त इकाई के रूप में काम करना था।

Q. 34) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सी आर दास अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (All India Trade Union Congress) के पहले अध्यक्ष थे।

2. ब्रिटिश सरकार ने ट्रेड यूनियनों को वैधानिक संगठनों के रूप में कभी मान्यता नहीं दी।

3. पूंजीवाद को साम्राज्यवाद से जोड़ने वाले पहले व्यक्ति लाला लाजपत राय थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2 और 3

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q. 34) Solution (c)

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना 31 अक्टूबर, 1920 को हुई थी। लाला लाजपत राय को AITUC के पहले अध्यक्ष और दीवान चमन लाल को पहले महासचिव के रूप में चुना गया था।

ट्रेड यूनियन अधिनियम, 1926 ने ट्रेड यूनियनों को वैधानिक संघों के रूप में मान्यता दी। इसने ट्रेड यूनियन गतिविधियों के पंजीकरण और विनियमन के लिए शर्तें निर्धारित कीं।

पूँजीवाद को साम्राज्यवाद से जोड़ने वाले प्रथम व्यक्ति लाजपत राय थे। उन्होंने टिप्पणी की, "साम्राज्यवाद और सैन्यवाद पूंजीवाद के जुड़वां बच्चे हैं"।

Q. 35) भारत छोड़ो आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसने भारत में ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करने की मांग की।

2. इस आंदोलन के दौरान सतारा में चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में समानांतर सरकार स्थापित हुई थी।

3. यह अंग्रेजों के खिलाफ एकमात्र आंदोलन था जिसमें हिंदू महासभा ने भाग लिया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2 और 3

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q. 35) Solution (a)

क्रिप्स मिशन की विफलता और द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभावों ने भारत में व्यापक असंतोष पैदा किया। इसने गांधीजी को भारत से अंग्रेजों की पूर्ण वापसी के लिए एक आंदोलन शुरू करने के लिए प्रेरित किया। कांग्रेस कार्यसमिति ने 14 जुलाई 1942 को वर्धा में अपनी बैठक में ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित कर भारतीयों को सत्ता के तत्काल हस्तांतरण और भारत छोड़ने की मांग की।

8 अगस्त, 1942 को गवालिया टैंक (Gowalia Tank), बॉम्बे में कांग्रेस की बैठक में भारत छोड़ो प्रस्ताव की पुष्टि की गई। बैठक में यह भी संकल्प लिया गया कि

- भारत में ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करने की मांग करना।
- सभी प्रकार के फासीवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ अपनी रक्षा के लिए स्वतंत्र भारत की प्रतिबद्धता की घोषणा करना।
- ब्रिटिश वापसी के बाद भारत की एक अस्थायी सरकार बनाएं।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक सविनय अवज्ञा आंदोलन को मंजूरी।
- गांधी को आदोंलन के नेता नामित किया गया था।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कई जगहों पर समानांतर सरकारें स्थापित की गईं। सतारा (1943 से 1945 के मध्य) में "प्रति सरकार" नाम की समानांतर सरकार वाई.बी. चव्हाण, नाना पाटिल आदि के नेतृत्व में स्थापित हुई थी। चित्तु पांडे बलिया में समानांतर सरकार से संबंधित थे।

भारत छोड़ो आंदोलन में युवाओं, महिलाओं, श्रमिकों, किसानों और सरकारी अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। लेकिन मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा ने इसका बहिष्कार किया था।

Q. 36) गोलमेज सम्मेलनों (Round Table Conferences) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. बेगम जहांआरा शाहनवाज ने सभी गोलमेज सम्मेलनों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया।
2. दूसरे गोलमेज सम्मेलन के बाद गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
3. तीसरे गोलमेज सम्मेलन से पहले पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए गए।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 36) Solution (c)

1930 से 1932 के बीच आयोजित तीन गोलमेज सम्मेलन, भारत में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने के लिए ब्रिटिश सरकार और भारतीय राजनीतिक हस्तियों द्वारा आयोजित शांति सम्मेलनों की एक श्रृंखला थी।

बेगम जहांआरा शाहनवाज पहले गोलमेज सम्मेलन (आरटीसी) में दो महिला प्रतिनिधियों में से एक थीं, दूसरे गोलमेज सम्मेलन में तीन महिला प्रतिनिधियों में से एक और तीसरे गोलमेज सम्मेलन में एकमात्र महिला थीं। बाद में, जब भारत सरकार अधिनियम, 1935 को अंतिम रूप देने के लिए संयुक्त प्रवर समिति का गठन किया गया, तो जहाँआरा इसकी एकमात्र महिला सदस्य थीं।

पहला गोलमेज सम्मेलन नवंबर 1930 में आयोजित किया गया था।

मार्च 1931 में गांधी इरविन समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके द्वारा कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को समाप्त कर दिया और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमत हो गई।

डॉ बी.आर. अम्बेडकर 1930 में दलितों को दलित वर्ग संघ में संगठित करने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में दलितों के लिए अलग निर्वाचक मंडल की मांग को लेकर महात्मा गांधी से विवाद हो गया। जब ब्रिटिश सरकार ने अंबेडकर की मांग मान ली तो गांधी जी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। उनका मानना था कि दलितों के लिए अलग निर्वाचक मंडल समाज में उनके एकीकरण की प्रक्रिया को धीमा कर देगा। अम्बेडकर ने अंततः गांधीजी की स्थिति को स्वीकार कर लिया और परिणाम सितंबर 1932 का पूना समझौता था। इसने दलित वर्गों (बाद में अनुसूचित जाति के रूप में जाना जाने वाला) को प्रांतीय और केंद्रीय विधान परिषदों में आरक्षित सीटें दीं, लेकिन उन्हें आम मतदाताओं द्वारा वोट दिया जाना था।

तीसरा गोलमेज सम्मेलन नवंबर 1932 में आयोजित किया गया था।

Q. 37) निम्नलिखित में से कौन सविनय अवज्ञा आंदोलन से संबद्ध थे?

1. के. केलप्पन
2. गोपालबंधु चौधरी
3. सरोजिनी नायडू

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 2 और 3

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q. 37) Solution (d)

महात्मा गांधी ने नमक में एक शक्तिशाली प्रतीक पाया जो राष्ट्र को एकजुट कर सकता था। 31 जनवरी 1930 को उन्होंने ग्यारह मांगों को बताते हुए वायसराय इरविन को एक पत्र भेजा। महात्मा गांधी का पत्र एक तरह से एक अल्टीमेटम था। यदि 11 मार्च तक मांगों को पूरा नहीं किया गया, तो पत्र में कहा गया है, कांग्रेस सविनय अवज्ञा अभियान शुरू करेगी। इरविन बातचीत के लिए तैयार नहीं था। इसलिए महात्मा गांधी ने अपने 78 विश्वस्त स्वयंसेवकों के साथ अपना प्रसिद्ध नमक मार्च शुरू किया। यह मार्च 240 मील से अधिक था, जो साबरमती में गांधीजी के आश्रम से गुजराती तटीय शहर दांडी तक था। 6 अप्रैल को वे दांडी पहुंचे, और औपचारिक रूप से कानून का उल्लंघन किया, समुद्र के पानी को उबालकर नमक का निर्माण किया। इसने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत को चिह्नित किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन ने देश के कई हिस्सों में भागीदारी देखी:

- के. केलप्पन, ए नायर कांग्रेस नेता, जो वैकोम सत्याग्रह के लिए प्रसिद्ध थे, ने मालाबार क्षेत्र में नमक मार्च का आयोजन किया।

- एक गांधीवादी नेता गोपालबंधु चौधरी के अंतर्गत, उड़ीसा के बालासोर, कटक और पुरी जिलों के तटीय क्षेत्रों में नमक सत्याग्रह प्रभावी साबित हुआ।
- सरोजिनी नायडू, इमाम साहब और मणिलाल (गांधी के बेटे) ने गुजरात में धरसाना साल्ट वर्क्स पर छापेमारी का नेतृत्व करने का काम संभाला।

Q. 38) असहयोग आंदोलन वापस लिए जाने के बाद, कांग्रेस में दो गुट उभरे, स्वराजवादी और अपरिवर्तनवादी। इस संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. स्वराजवादी ने रचनात्मक कार्यों और विधान परिषदों में प्रवेश पर ध्यान केंद्रित करने की वकालत की।
2. किसी भी परिवर्तनवादी ने बहिष्कार और असहयोग जारी रखने की वकालत नहीं की।
3. स्वराजवादी विचारधारा का नेतृत्व मोतीलाल नेहरू और अजमल खान ने किया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 38) Solution (b)

मार्च 1922 में असहयोग आंदोलन की वापसी और महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के बाद, राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं में विघटन, अव्यवस्था और उनका मनोबल गिर गया। संक्रमण की अवधि में, यानी आंदोलन के निष्क्रिय चरण के दौरान क्या करना है, इस पर कांग्रेसियों के बीच बहस शुरू हो गई।

विधान परिषदों में प्रवेश की वकालत करने वालों को 'स्वराजवादी' के रूप में जाना जाने लगा। इस विचारधारा का नेतृत्व सी.आर. दास, मोतीलाल नेहरू और अजमल खान ने किया था। वे विधान परिषदों के बहिष्कार को समाप्त करना चाहते थे ताकि इन विधानसभाओं की बुनियादी कमजोरियों को उजागर करने के लिए राष्ट्रवादी उनमें प्रवेश कर सकें और इन परिषदों को राजनीतिक संघर्ष के क्षेत्र के रूप में लोकप्रिय उत्साह को जगाने के लिए उपयोग कर सकें।

सी. राजगोपालाचारी, वल्लभभाई पटेल, राजेंद्र प्रसाद और एम.ए. अंसारी के नेतृत्व में अन्य विचारधारा को 'अपरिवर्तनवादी' के रूप में जाना जाने लगा। 'अपरिवर्तनवादी' ने परिषद में प्रवेश का विरोध किया, रचनात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने और बहिष्कार और असहयोग जारी रखने और निलंबित सविनय अवज्ञा कार्यक्रम को फिर से शुरू करने की शांत तैयारी की वकालत की।

Q. 39) 1945-47 के बीच हुए किसान आंदोलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. तेभागा आंदोलन बंगाल में हुआ
2. त्रावणकोर आंदोलन पूरी तरह से कृषि प्रधान प्रकृति का था।

3. तेलंगाना आंदोलन स्वतंत्रता के बाद भी जारी रहा।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 39) Solution (c)

तेभागा आंदोलन 1946-47 में किसान सभा द्वारा बंगाल में शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण किसान आंदोलन था। उस समय बटाईदारों ने अपनी आधी फसल जमींदारों को देने का अनुबंध किया हुआ था। तेभागा आंदोलन की मांग जमींदारों के हिस्से को एक तिहाई तक कम करने की थी।

दक्षिण में त्रावणकोर आंदोलन न तो पूरी तरह से ग्रामीण था और न ही इसके स्वरूप में विशेष रूप से कृषि प्रधान। फिर भी कृषि संबंधी मुद्दों (जैसे जेनमिस या जमींदारों का आर्थिक शोषण और सामाजिक उत्पीड़न) और कृषि वर्गों (जैसे शोषित और उत्पीड़ित गरीब किसानों, ग्रामीण कारीगरों और खेतिहर मजदूरों) ने 1946 में वहां जो कुछ हुआ था, उसमें भरपूर योगदान दिया। घटनाएँ उत्तर-पश्चिमी त्रावणकोर का शेरतलाई-अलेप्पी क्षेत्र की थी, जहाँ कम्युनिस्टों के नेतृत्व में एक मजबूत ट्रेड-यूनियन-सह-कृषि आंदोलन विकसित हुआ। यह आंदोलन अतिव्यापी गांवों और छोटे शहरों के बीच से गुजरा, और इसमें गरीब किसान, खेतिहर मजदूर, मछुआरे, टोडी-टैपर्स (tody-tappers) और कोइर फैक्ट्री के मजदूर शामिल थे-जिनमें से अधिकांश निराश कृषि श्रेणीयों से आए थे और अनिश्चित अस्तित्व के कारण शहरों के आसपास झुंड में थे।

तेलंगाना आंदोलन हैदराबाद रियासत में तेलंगाना क्षेत्र के सामंतों के खिलाफ एक किसान विद्रोह था। तेलंगाना के किसानों का सशस्त्र संघर्ष 1951 तक बेरोकटोक जारी रहा, जिसमें लगभग 300 गाँव शामिल थे, इसने 16,000 वर्ग मील से अधिक और लगभग 30 लाख की आबादी को आच्छादित किया।

Q.40) भारत में ब्रिटिश सरकार पर द्वितीय विश्व युद्ध के क्या प्रभाव थे?

1. विश्व युद्ध के बाद विभिन्न वस्तुओं की कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई।
2. भारतीय सिविल सेवा में ब्रिटिश अधिकारियों का अनुपात बढ़ा।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 40) Solution (a)

द्वितीय विश्व युद्ध ने भारतीय उत्पादों (कृषि, साथ ही साथ औद्योगिक) को सैन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए और भारतीय नागरिकों के लिए उपभोक्ता वस्तुओं (ब्रिटेन से) के आयात में गिरावट के माध्यम से मुद्रास्फीति को जन्म दिया। रक्षा व्यय में भारतीय योगदान के लिए भुगतान करने में ब्रिटिश विफलता और भारत के लिए उनके ऋण की बढ़ती मात्रा के कारण इसे और अधिक बल मिला।

प्रशासनिक दृष्टि से, भारतीय सिविल सेवा में रिक्तियां द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कम हो गयी थी और युद्ध के लिए ब्रिटिशों के नामांकन ने ICS में उनकी भर्ती पर प्राथमिकता दी, तथा 1943 में युद्ध के शिखर पर आईसीएस में ब्रिटिश प्रवेश व्यावहारिक रूप से लगभग समाप्त हो गया था।

Q. 41) निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए:

1. कृषि का अभ्यास
2. पशुओं को पालतू बनाना
3. पत्थर के औजारों की पॉलिशिंग
4. गांवों का उदय

उपरोक्त विशेषताएँ निम्नलिखित में से किसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं?

a) मध्यपाषाण काल

b) पुरापाषाण काल

c) नवपाषाण युग

d) सिंधु घाटी सभ्यता

Q. 41) Solution (c)

नवपाषाण युग लगभग 6000 ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व तक का है।

भारत के विभिन्न भागों में नवपाषाणकालीन अवशेष पाए जाते हैं। इसमे शामिल है:

- कश्मीर घाटी
- बिहार में चिरांद
- उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी
- कर्नाटक में मस्की, ब्रह्मगिरि, हल्लूर और कोडेकल
- तमिलनाडु में पैयमपल्ली (Paiyampalli)
- आंध्र प्रदेश में उटनूर (Utnur)

नवपाषाण संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ कृषि का अभ्यास, पशुओं को पालतू बनाना, पत्थर के औजारों को तराशना और मिट्टी के बर्तनों का निर्माण है। वास्तव में, पौधों की खेती और जानवरों को पालतू बनाने से गतिहीन जीवन पर आधारित ग्राम समुदायों का उदय हुआ।

मनुष्य द्वारा उपयोग किए जाने वाले औजारों और अन्य उपकरणों को बनाने की तकनीक में काफी सुधार हुआ। पत्थर के औजार अब पॉलिश किए गए थे। पॉलिश की गई कुल्हाड़ियाँ शिकार करने और पेड़ों को काटने के लिए अधिक प्रभावी उपकरण पाई गईं। घास की झोपड़ियों के स्थान पर मिट्टी की ईंटों के मकान बनाए गए। मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए चाक का इस्तेमाल किया जाता था। बर्तनों का उपयोग खाना पकाने के साथ-साथ खाद्यान्नों के भंडारण के लिए भी किया जाता था। मृतकों को दफनाने के लिए ताबूतों के रूप में बड़े कलशों का इस्तेमाल किया जाता था।

Q. 42) सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान, भारत में पहली बार निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता देखी गई?

1. मानकीकृत वजन और माप
2. जानवरों को पालतू बनाना
3. चावल की खेती
4. नगर नियोजन

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 3 और 4
d) केवल 1 और 4

Q. 42) Solution (d)

सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने प्रौद्योगिकी में कई उल्लेखनीय प्रगति हासिल की, जिसमें लंबाई और द्रव्यमान मापने के लिए उनके प्रणाली और उपकरणों में बड़ी सटीकता शामिल है। आग से पकी ईंटें - जो आकार में एक समान और आर्द्रता प्रतिरोधी थीं - स्नानागार और सीवेज संरचनाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण थीं और इस बात के प्रमाण हैं कि हड़प्पा के लोग मानकीकृत वजन और माप की प्रणाली विकसित करने वाले पहले लोगों में से थे। शहरों में ईंटों के आकार की निरंतरता भी विभिन्न शहरी क्षेत्रों में एकता का संकेत देती है, जो एक व्यापक सभ्यता का प्रमाण है।

मध्य पाषाण काल से संबंधित मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर उपमहाद्वीप के भारतीय हिस्से में जानवरों के पालतू जानवरों के लिए सबसे पहले साक्ष्य प्रदान करते हैं। यह लगभग 5000 ईसा पूर्व हो सकता है। इस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता से पहले जानवरों को पालतू बनाना शुरू हो गया था।

नवपाषाण काल के लोग पहले खाद्य उत्पादक थे। नवपाषाण काल के लोगों ने एक व्यवस्थित जीवन व्यतीत किया और रागी और चना (कुल्थी), और चावल का उत्पादन किया। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में कोल्डिहवा और महागरा जैसे नवपाषाण स्थल ईसा पूर्व पांचवीं सहस्राब्दी में चावल की खेती के लिए जाने जाते हैं।

हड़प्पा संस्कृति नगर नियोजन की अपनी प्रणाली द्वारा प्रतिष्ठित थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों के पास एक गढ़ या एक्रोपोलिस (acropolis) था, और इस पर संभवतः शासक वर्ग के सदस्यों का कब्जा था। प्रत्येक शहर में गढ़ के नीचे ईंट के घरों वाला एक निचला शहर था जिसमें आम लोग रहते थे। शहरों में घरों की व्यवस्था के बारे में उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने एक ग्रिड प्रणाली का पालन किया, जिसमें सड़कें एक दूसरे को वस्तुतः समकोण पर काटती थीं।

Q. 43) हड़प्पा सभ्यता के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही हैं?

1. हड़प्पा के लोग भूतों में विश्वास करते थे और उनके विरुद्ध सुरक्षा के रूप में ताबीज का इस्तेमाल करते थे।
2. लोगों ने मंदिरों में पूजा की।
3. उन्होंने राजस्थान की तांबे की खानों से तांबा प्राप्त किया।
4. हाथी हड़प्पावासियों द्वारा अच्छी तरह से जाने जाते थे।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1, 2 और 3 3

b) केवल 2, 3 और 4

c) केवल 1, 3 और 4

d) 1, 2, 3 और 4

Q. 43) Solution (c)

हड़प्पा सभ्यता में ताबीज बड़ी संख्या में पाए गए हैं। पूरी संभावना है कि हड़प्पावासियों का मानना था कि भूत और बुरी ताकतें उन्हें नुकसान पहुंचाने में सक्षम हैं इसलिए उन्होंने उनके खिलाफ सुरक्षा के रूप में ताबीज का इस्तेमाल किया।

हड़प्पा सभ्यता के निवासी पेड़ों, जानवरों और मनुष्यों के रूप में देवताओं की पूजा करते थे, लेकिन देवताओं को मंदिरों में नहीं रखा जाता था।

हड़प्पा के लोग पत्थर के कई औजारों और सामग्रियों का इस्तेमाल करते थे, लेकिन वे कांस्य के निर्माण और उपयोग से बहुत अच्छी तरह परिचित थे। आमतौर पर लोहारों द्वारा तांबे के साथ टिन मिलाकर कांसे का निर्माण किया जाता था, लेकिन वे कभी-कभी इस उद्देश्य के लिए तांबे के साथ आर्सेनिक भी मिलाते थे। चूंकि हड़प्पावासियों को न तो टिन और न ही तांबा आसानी से उपलब्ध था, इसलिए इस क्षेत्र में कांस्य के औजार प्रचुर मात्रा में नहीं हैं। अयस्कों की अशुद्धियों से पता चलता है कि तांबा राजस्थान की खेतड़ी तांबे की खानों से प्राप्त किया गया था।

हड़प्पा स्थलों से बरामद कांस्य उपकरण और हथियारों में अफगानिस्तान से लाए गए टिन का एक छोटा प्रतिशत होता है। हालाँकि हड़प्पावासी कृषि का अभ्यास करते थे, लेकिन जानवरों को बड़े पैमाने पर पाला जाता था। बैलों, भैंसों, बकरियों, भेड़ों और सूअरों को पालतू बनाया जाता था। हड़प्पा के लोग कूबड़ वाले बैलों से परिचित थे। हाथी हड़प्पावासियों को अच्छी तरह से जानते थे, जो गैंडे से भी परिचित थे।

Q. 44) निम्नलिखित में से कौन सा/से सिंधु घाटी सभ्यता के तटीय शहर थे?

1. धौलावीरा
2. सुरकोटडा
3. कालीबंगा

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 44) Solution (a)

सिंधु घाटी सभ्यता एक कांस्य युगीन सभ्यता थी जो आज के उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान से पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत तक फैली हुई थी। यह सभ्यता सिंधु और घग्गर-हकरा नदी के नदी घाटियों में विकसित हुई।

सिन्धु घाटी सभ्यता में सात महत्वपूर्ण नगर थे:

- मोहनजोदड़ो
- हड़प्पा
- सुरकोटडा
- कालीबंगा
- लोथल
- चन्हूदडों
- धौलावीरा
- बनावली

सुरकोटदा, लोथल और धौलावीरा सिंधु घाटी के महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर थे।

Q. 45) सिंधु घाटी स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. अमरी से गैंडे के अवशेष मिले हैं।
2. अल्लाहदीनो (Allahdino) से घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं।
3. केराला-नो-धोरो (Kerala-no-dhoro) नमक उत्पादन केंद्र था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 45) Solution (c)

अमरी सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित एक प्राचीन बस्ती है। यह आधुनिक सिंध, पाकिस्तान में स्थित है, जो 3600 ईसा पूर्व का है। अमरी ने एक गैंडे के वास्तविक अवशेषों का खुलासा किया है।

सुरकोटडा से एक घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं। यह गुजरात के कच्छ जिले में स्थित एक पुरातात्विक स्थल है।

केराला-नो-धोरो, जिसे पादरी के नाम से भी जाना जाता है, गुजरात में एक पुरातात्विक स्थल है, जो सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित है। माना जाता है कि यह बिना दीवार वाला गांव समुद्र के पानी को वाष्पित करके नमक के उत्पादन में शामिल है।

Q. 46) ऋग्वैदिक काल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. समिति वरिष्ठों की एक परिषद थी।
2. सभा सभी लोगों की एक आम सभा थी।
3. राजनीतिक संगठन की मूल इकाई ग्राम थी।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) इनमे से कोई भी नहीं

Q. 46) Solution (d)

ऋग्वैदिक काल के दौरान, आर्य ज्यादातर सिंधु क्षेत्र तक ही सीमित थे। ऋग्वेद में सप्तसिंधु या सात नदियों की भूमि का उल्लेख है। इसमें सिंधु और सरस्वती के साथ पंजाब की पांच नदियां झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज शामिल हैं। ऋग्वेद के लोगों के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का पता ऋग्वेद के स्तोत्रों से लगाया जा सकता है।

राजनीतिक संगठन की मूल इकाई कुल या परिवार थी।

कई परिवारों ने अपने रिश्तेदारी के आधार पर एक गांव या ग्राम बनाने के लिए एक साथ जुड़ गए। ग्राम के नेता को ग्रामणी कहा जाता था। गांवों के एक समूह ने विश नामक एक बड़ी इकाई का गठन किया। इसकी अध्यक्षता विशपति ने की थी। सर्वोच्च राजनीतिक इकाई को जन या जनजाति कहा जाता था।

ऋग्वैदिक काल में कई आदिवासी राज्य थे जैसे भरत, मत्स्य, यदु और पुरु। राज्य के मुखिया को राजन या राजा कहा जाता था।

ऋग्वैदिक राज्य व्यवस्था सामान्यत: राजतंत्रीय थी और उत्तराधिकार वंशानुगत था। राजा को उसके प्रशासन में पुरोहित या पुजारी और सेनानी या सेना के कमांडर द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। सभा और समिति नामक दो लोकप्रिय निकाय थे।

- सभा वरिष्ठों की एक परिषद थी।
- समिति संपूर्ण लोगों की एक आम सभा थी

Q. 47) प्रारंभिक वैदिक काल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही हैं?

1. महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर दिए गए।
2. बाल विवाह और सती प्रथा प्रचलित थी।
3. महत्वपूर्ण देवता प्रजापति, विष्णु और रुद्र थे।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 47) Solution (a)

ऋग्वैदिक या प्रारंभिक वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था।

समाज की मूल इकाई परिवार या ग्राम थी। परिवार के मुखिया को ग्रामपति कहा जाता था।

एकपत्नीत्व या मोनोगैमी आमतौर पर प्रचलित थी, जबकि बहुविवाह शाही और कुलीन परिवारों में प्रचलित था। पत्नी ने घर की देखभाल की और सभी प्रमुख समारोहों में भाग लिया।

महिलाओं को उनके आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए पुरुषों के समान अवसर दिए गए। महिलाएं लोकप्रिय सभाओं में भी शामिल हो सकती थीं।

कोई बाल विवाह नहीं था और सती प्रथा का अभाव था।

ऋग्वैदिक आर्य पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा और इन्द्र जैसी प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे।उन्होंने इन प्राकृतिक शक्तियों को कई देवताओं में बदल दिया और उनकी पूजा की। महत्वपूर्ण ऋग्वैदिक देवता पृथ्वी (पृथ्वी), अग्नि (अग्नि), वायु (पवन), वरुण (वर्षा) और इंद्र (थंडर/ गरज) थे।

प्रारंभिक वैदिक काल के दौरान इंद्र उनमें से सबसे लोकप्रिय थे। इंद्र के बाद अगला महत्व अग्नि का था जिसे देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ माना जाता था। वरुण को प्राकृतिक व्यवस्था का रक्षक माना जाता था।

अदिति और उषा जैसी महिला देवता भी थीं।

प्रारंभिक वैदिक काल के दौरान कोई मंदिर नहीं थे और कोई मूर्ति पूजा नहीं थी। पुरस्कार की उम्मीद में देवताओं से प्रार्थना की गई। प्रसाद के रूप में घी, दूध और अनाज दिया गया। पूजा के दौरान विस्तृत रीति-रिवाजों का पालन किया गया।

Q. 48) उत्तर वैदिक काल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'शतमान' और 'कृष्णला' विनिमय के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले सिक्के थे।
2. 'कृष्ण अयस' शब्द उत्तरवैदिक ग्रंथों में मवेशियों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था।
3. पुजारी का पद एक वंशानुगत पेशा था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) इनमे से कोई भी नहीं

Q. 48) Solution (b)

उत्तर वैदिक काल के युग (1000-600 ईसा पूर्व) के दौरान आर्यों ने यमुना, गंगा और सदानीरा जैसी नदियों द्वारा सिंचित उपजाऊ मैदानों को पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया। उत्तर वैदिक काल में बड़े राज्यों का निर्माण हुआ। उत्तर वैदिक काल में कई जन या जनजातियों को जनपद या राष्ट्र बनाने के लिए मिला दिया गया था। इसलिए राज्य के आकार में वृद्धि के साथ-साथ शाही शक्ति में वृद्धि हुई थी।

उत्तर वैदिक काल के दौरान विदेशी व्यापार व्यापक हो गया। उत्तर वैदिक लोग समुद्र से परिचित थे और उन्होंने बेबीलोन जैसे देशों के साथ व्यापार किया। वंशानुगत व्यापारियों (वनिया) का एक वर्ग अस्तित्व में आया। वैश्य व्यापार और वाणिज्य भी करते थे। उन्होंने खुद को गण के नाम से जाने जाने वाले गिल्डों में संगठित किया। ऋग्वैदिक काल के निष्क (सोने के सिक्के) के अलावा, सोने और चांदी के सिक्के जैसे 'शतमान' और 'कृष्णला' का उपयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया जाता था।

इस अवधि में लोहे का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया था और इसने लोगों को जंगलों को साफ करने और अधिक भूमि को खेती के अंतर्गत लाने में सक्षम बनाया। बाद के वैदिक ग्रंथों में लोहे को संदर्भित करने के लिए 'श्यामा' या 'कृष्ण अयस' शब्द का इस्तेमाल किया गया था।

समाज के चार विभाजन (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) या वर्ण व्यवस्था उत्तर वैदिक काल के दौरान पूरी तरह से स्थापित हो गई थी। प्रारंभिक वैदिक काल के देवताओं जैसे इंद्र और अग्नि ने अपना महत्व खो दिया। प्रजापति (निर्माता), विष्णु (रक्षक) और रुद्र (विनाशक) उत्तर वैदिक काल के दौरान प्रमुख हो गए। यज्ञ अभी भी महत्वपूर्ण थे और उनसे जुड़े अनुष्ठान अधिक विस्तृत हो गए थे।

प्रार्थना का महत्व कम हो गया और यज्ञ का महत्व बढ़ गया। पुजारी का पद में ययाति श्रृ एक पेशा और एक वंशानुगत व्यवसाय बन गया। यज्ञ के सूत्रों का आविष्कार और विस्तार पुरोहित वर्ग द्वारा किया गया था। इसलिए, इस अवधि के अंत में पुरोहितों के वर्चस्व के खिलाफ और बलिदानों और कर्मकांडों के खिलाफ एक मजबूत प्रतिक्रिया थी, जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध और जैन धर्मों का उदय हुआ।

Q. 49) निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही हैं?

1. यजुर्वेद में यज्ञ के समय पालन किए जाने वाले नियमों के विभिन्न विवरण शामिल हैं।
2. ब्राह्मण दार्शनिक ग्रंथ हैं जो आत्मा, निरपेक्ष, दुनिया की उत्पत्ति और प्रकृति के रहस्यों जैसे विषयों से संबंधित हैं।
3. आरण्यक वन संबंधी पुस्तकें हैं जो रहस्यवाद, संस्कार, अनुष्ठान और बलिदान से संबंधित हैं।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 49) Solution (c)

'वेद' शब्द 'विद' से बना है, जिसका अर्थ है जानना। दूसरे शब्दों में, 'वेद' शब्द 'श्रेष्ठ ज्ञान' का प्रतीक है।

वैदिक साहित्य में चार वेद शामिल हैं - ऋग्, यजुर्वे, साम और अथर्व। ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे प्राचीन है और इसमें 1028 सूक्त हैं। विभिन्न देवताओं की स्तुति में ऋचाएं हैं। यजुर्वेद में यज्ञ के समय पालन किए जाने वाले नियमों के विभिन्न विवरण शामिल हैं। यज्ञ के दौरान जप के उद्देश्य से सामवेद की धुन तैयार की जाती है। इसे मंत्रों की पुस्तक कहा जाता है और इसमें भारतीय संगीत की उत्पत्ति का पता लगाया जाता है। अथर्ववेद में कर्मकांडों का विवरण है।

वेदों के अलावा, ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक और महाकाव्य रामायण और महाभारत जैसे अन्य पवित्र कार्य हैं। ब्राह्मण प्रार्थना और बलिदान समारोह से संबंधित ग्रंथ हैं। उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं जो आत्मा, निरपेक्ष, दुनिया की उत्पत्ति और प्रकृति के रहस्यों जैसे विषयों से संबंधित हैं। आरण्यकों को वन ग्रंथ कहा जाता है और वे रहस्यवाद, संस्कार, अनुष्ठान और बलिदान से संबंधित हैं।

Q.50) वैदिक संस्कृति के संदर्भ में, "विश्ववरा, घोषा और लोपामुद्रा" हैं:

a) पंजाब की पवित्र नदियों के वैदिक नाम

b) प्रारंभिक वैदिक युग की महिला कवयित्री

c) आदिवासी राज्यों के नाम

d) उत्तर वैदिक युग के छोटे देवता

Q. 50) Solution (b)

विश्ववरा, घोषा और लोपामुद्रा प्रारंभिक वैदिक युग की महिला कवि थीं।

प्रारंभिक वैदिक सभ्यता में महिलाओं को सम्मानजनक स्थिति के साथ सम्मानित किया गया था। घर और परिवार के मामलों में महिलाओं को सम्मान के साथ-साथ सशक्त भी किया गया। सभी सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी से उन्हें सम्मानित भी किया गया। महिलाएं सभाओं में शामिल हो सकती थीं और अपने पति के साथ बलि चढ़ा सकती थीं।

लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की पत्नी थीं। ऋग्वेद में एक ऋचा का श्रेय उन्हें दिया गया है।

ऋग्वेद के दसवें मंडल (पुस्तक) के दो सूक्त (भजन), जिनमें से प्रत्येक में 14 छंद हैं, घोषा को समर्पित है।

Q. 51) मौर्य प्रशासन के संदर्भ में, मौर्य साम्राज्य के दौरान निम्नलिखित में से कौन सी संस्था मौजूद थी?

1. पुलिस स्टेशन
2. सर्वोच्च न्यायालय
3. जनगणना
4. वाणिज्य और उद्योग विभाग

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1, 2 और 3

b) केवल 2, 3 और 4

c) केवल 1, 3 और 4

d) 1, 2, 3 और 4

Q. 51) Solution (d)

कौटिल्य ने दीवानी और फौजदारी दोनों अदालतों के अस्तित्व का उल्लेख किया है। राजधानी में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को धर्मथिकरिन (Dharmathikarin) कहा जाता था। अमात्य के अधीन प्रांतीय राजधानियों और जिलों में अधीनस्थ न्यायालय भी थे। अपराधियों को विभिन्न प्रकार की सजा जैसे जुर्माना, कारावास, अंग-भंग और मृत्युदंड दिया जाता था। सच्चाई निकलवाने के लिए अत्याचार किया जाता था। सभी प्रमुख केंद्रों पर पुलिस थाने पाए गए।

कौटिल्य और अशोक दोनों अभिलेखों में जेलों और जेल अधिकारियों का उल्लेख है। धम्म महामात्रों को अशोक ने अन्यायपूर्ण कारावास के खिलाफ कदम उठाने के लिए कहा था। अशोक के शिलालेखों में भी दंड में छूट का उल्लेख है।

मौर्य काल में जनगणना नियमित होती थी। गांव के अधिकारी उनकी जाति और व्यवसाय जैसी अन्य बारीकियों के साथ लोगों की संख्या गिनते थे। उन्हें हर घर में जानवरों की गिनती भी करनी थी। नगरों में जनगणना नगर निगम के अधिकारियों द्वारा विदेशी और स्वदेशी दोनों तरह की आबादी की आवाजाही पर नज़र रखने के लिए की गई थी। एकत्र किए गए डेटा को जासूसों द्वारा क्रॉस चेक किया गया था। मौर्य प्रशासन में जनगणना एक स्थायी संस्था प्रतीत होती है।

वाणिज्य और उद्योग विभाग ने वस्तुओं के खुदरा और थोक मूल्यों को नियंत्रित किया था और अपने अधिकारियों के माध्यम से उनकी स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने का प्रयास किया था जिन्हें अध्यक्ष कहा जाता था। यह बाट और माप को भी नियंत्रित करता था, सीमा शुल्क लगाता था और विदेशी व्यापार को नियंत्रित करता था।

Q. 52) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. अशोक के शिलालेख पाली, प्राकृत और संस्कृत में उत्कीर्ण किए गए थे।
2. मौर्य साम्राज्य के दौरान धूप में सुखाई गई और जली हुई ईंटें मुख्य निर्माण सामग्री थीं।
3. विशाखदत्त की मुद्राराक्षस कलिंग के साथ अशोक के युद्ध के बारे में विवरण देती है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) 1, 2 और 3
d) इनमे से कोई भी नहीं

Q. 52) Solution (d)

अशोक के शिलालेखों को सबसे पहले 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने डिक्रिप्ट किया था। वे पाली भाषा में लिखे गए हैं और कुछ जगहों पर प्राकृत का इस्तेमाल किया गया था। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग लेखन के लिए किया जाता था। पश्चिमोत्तर भारत में अशोक के शिलालेख खरोष्टी लिपि में मिले हैं। चौदह प्रमुख शिलालेख हैं। दो कलिंग शिलालेख नए विजय प्राप्त क्षेत्र में पाए जाते हैं। प्रमुख स्तम्भ शिलालेख महत्वपूर्ण नगरों में बनवाए गए थे। अशोक के ये शिलालेख अशोक के धम्म और उसके अधिकारियों को दिए गए निर्देशों से संबंधित हैं। XIII शिलालेख कलिंग के साथ उसके युद्ध के बारे में विवरण देता है। स्तंभ शिलालेख VII अपने राज्य के भीतर धम्म को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों का सारांश देता है।

मौर्य साम्राज्य के दौरान लकड़ी मुख्य निर्माण सामग्री थी। पत्थर का प्रयोग अशोक के समय से ही शुरू हो गया था।

विशाखदत्त द्वारा लिखित मुद्राराक्षस संस्कृत में एक नाटक है। यद्यपि गुप्त काल के दौरान लिखा गया था, यह वर्णन करता है कि कैसे चंद्रगुप्त ने कौटिल्य की सहायता से नंदों को उखाड़ फेंका। यह मौर्यों के तहत सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर एक दृश्य भी प्रस्तुत करता है।

Q. 53) फ़ारसी शासकों जैसे साइरस, डेरियस प्रथम और जरक्सीज ने प्राचीन काल में भारत पर आक्रमण किया था। भारत पर फारसी आक्रमण के क्या प्रभाव थे/ थे?

1. बढ़ा हुआ भारत-ईरानी वाणिज्य

2. उत्तर पश्चिमी भारत में खरोष्ठी लिपि का प्रयोग लोकप्रिय हुआ
3. मौर्यों के अधीन उत्तर भारत का राजनीतिक एकीकरण

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 53) Solution (a)

छठी शताब्दी ई.पू. में जब मगध भारत में एक व्यापक साम्राज्य का निर्माण करने का प्रयास कर रहा था, उत्तर-पश्चिम सीमा पर विदेशियों के आक्रमण शुरू हो गए। भारत में प्रवेश करने की कोशिश करने वाले पहले फारसी थे और अगले ग्रीक थे जिन्होंने अपने प्रसिद्ध शासक और विजेता, मैसेडोनिया के सिकंदर के अंतर्गत भारत में प्रवेश किया।

साइरस द ग्रेट अखमनी साम्राज्य का सबसे बड़ा विजेता था। वह पहला विजेता था जिसने एक अभियान का नेतृत्व किया और भारत में प्रवेश किया। उसने गांधार क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। सिंधु नदी के पश्चिम में सभी भारतीय जनजातियों ने उन्हें पेशकश किया और श्रद्धांजलि अर्पित की।

साइरस के पोते डेरियस प्रथम ने 518 ईसा पूर्व में सिंधु घाटी पर विजय प्राप्त की थी। और पंजाब और सिंध को मिला लिया। यह क्षेत्र उसके साम्राज्य का 20वां क्षत्रप बना।

जरक्सीज ने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए अपने भारतीय प्रांत का उपयोग किया। उसने अपने विरोधियों से लड़ने के लिए भारतीय पैदल सेना और घुड़सवार सेना को ग्रीस में तैनात किया। लेकिन जरक्सीज को ग्रीस में हार का सामना करने के बाद वे पीछे हट गए। इस विफलता के बाद, अखमनी भारत में आगे की नीति का पालन नहीं कर सके। हालाँकि, भारतीय प्रांत अभी भी उनके नियंत्रण में था।

फारसी आक्रमण ने भारत-ईरानी वाणिज्य के विकास को गति प्रदान की। साथ ही इसने सिकंदर के आक्रमण के लिए जमीन तैयार की। खरोष्ठी लिपि का उपयोग, ईरानी लेखन का एक रूप उत्तर-पश्चिमी भारत में लोकप्रिय हो गया और अशोक के कुछ शिलालेख उस लिपि में लिखे गए। हम मौर्यों की कला पर फारसी कला के प्रभाव को देख सकते हैं, विशेष रूप से अशोक के एकाश्म स्तंभ और उन पर मिली मूर्तियों में। अशोक द्वारा शिलालेख जारी करने का विचार और शिलालेखों में प्रयुक्त शब्दों का पता ईरानी प्रभाव से लगाया जाता है। संक्षेप में, भारत के साथ ईरानी संबंध अल्पकालिक इंडो-मैसेडोनियन संपर्क की तुलना में अधिक उपयोगी साबित हुए

मौर्यों के अधीन उत्तर भारत का राजनीतिक एकीकरण सिकंदर के आक्रमण (327-325 ईसा पूर्व) का तत्काल प्रभाव था। छोटे स्वतंत्र राज्यों की व्यवस्था समाप्त हो गई।

Q. 54) छठी और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच, मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। उसके क्या कारण थे?

1. गोदावरी घाटी के ऊपरी और निचले हिस्से के बीच मगध की सामरिक भौगोलिक स्थिति।

2. लौह अयस्क खदानों तक आसान पहुंच।

3. हाथी, सेना का एक महत्वपूर्ण घटक, इस क्षेत्र के वनों में आसानी से पाए जाते थे।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 54) Solution (b)

छठी और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच, मगध (वर्तमान बिहार में) सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। आधुनिक इतिहासकार इस विकास की कई तरह से व्याख्या करते हैं: मगध प्रकृति द्वारा कुछ भौगोलिक और सामरिक लाभों के साथ संपन्न था। इसने उन्हें शाही महानता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

- गंगा घाटी के ऊपरी और निचले हिस्से के बीच उसकी सामरिक स्थिति एक बड़ा फायदा था। इसकी उपजाऊ मिट्टी थी।
- राजगीर के पास की पहाड़ियों में लौह अयस्क और गया के पास तांबे और लोहे के भंडार ने इसकी प्राकृतिक संपत्ति में इजाफा किया।
- उन दिनों के व्यापार के राजमार्गों के केंद्र में उसका स्थान उसके धन में योगदान देता था।
- हाथी, सेना का एक महत्वपूर्ण घटक, इस क्षेत्र के वनों में पाए जाते थे।

मगध के बारे में लिखने वाले प्रारंभिक बौद्ध और जैन लेखकों ने भी इसकी शक्ति को व्यक्तियों की नीतियों के लिए जिम्मेदार ठहराया: निर्मम महत्वाकांक्षी राजा जिनमें से बिंबिसार, अजातशत्रु और महापद्मनंद सबसे प्रसिद्ध हैं, और उनके मंत्री, जिन्होंने उनकी नीतियों को लागू करने में मदद की।

Q. 55) महरौली और इलाहाबाद के स्तंभ शिलालेख किसके बारे में जानकारी देते हैं:

a) सातवाहन का शासनकाल

b) मौर्यों का शासनकाल

c) गुप्तों का शासनकाल

d) चोलों का शासनकाल

Q.55) Solution (c)

महरौली और इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख गुप्त वंश के शासन के बारे में जानकारी देते हैं।

महरौली स्तंभ शिलालेख चंद्रगुप्त प्रथम की उपलब्धियों को संदर्भित करता है। यह स्तंभ चंद्रगुप्त को वंग देशों की विजय के लिए उनके खिलाफ एकजुट दुश्मनों के संघ के खिलाफ अकेले लड़ने का श्रेय देता है। यह उन्हें सिंधु के सात मुहानों के बीच हुई लड़ाई में वाकाटकों की विजय का श्रेय भी देता है। इसमें संस्कृत भाषा में रचित छंद हैं।

इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रदान करता है। यह उनके सैन्य अभियान में तीन चरणों को संदर्भित करता है:

- उत्तर भारत के कुछ शासकों के विरुद्ध
- दक्षिण भारतीय शासकों के खिलाफ उनका प्रसिद्ध दक्षिणापथ अभियान
- उत्तर भारत के कुछ अन्य शासकों के खिलाफ दूसरा अभियान।

इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में उल्लेख है कि समुद्रगुप्त ने अपने दक्षिण भारतीय अभियान में बारह शासकों को हराया था। वे थे कोसल के महेंद्र, महाकाथार के व्याघरराज, कौरला के मंतिराज, पिष्टपुर के महेंद्रगिरि, कोट्टुरा के स्वामीदत्त, एरंडापल्ला के दमन, कांची के विष्णुगुप्त, अवमुक्त के निलाराज, वेंगी के हस्तीवर्मन, पलक्का के उग्रसेन, देवराष्ट्र के कुबेर और कुशतालपुर के धनंजय।

Q. 56) गुप्त वंश के शासनकाल के दौरान निम्नलिखित में से कौन सा विदेशी यात्री भारत आया था?

1. मेगस्थनीज
2. फाह्यान
3. ह्वेन-सांग

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 56) Solution (b)

1. मेगस्थनीज: वह एक प्राचीन यूनानी इतिहासकार, राजनयिक और भारतीय नृवंशविज्ञानी और खोजकर्ता थे। उन्होंने अपनी पुस्तक इंडिका में भारत का वर्णन किया, जो अब खो गया है, लेकिन बाद के लेखकों में पाए गए साहित्यिक अंशों से आंशिक रूप से पुनर्निर्माण किया गया है। मेगस्थनीज भारत का लिखित विवरण छोड़ने वाले पहले व्यक्ति थे। मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस I निकेटर का यूनानी राजदूत था।

2. फाह्यान: प्रसिद्ध चीनी तीर्थयात्री फाह्यान चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत आए थे। भारत में अपने नौ साल के प्रवास में से, उन्होंने गुप्त साम्राज्य में छह साल बिताए। वह खोतान, काशगर, गांधार और पंजाब के रास्ते भूमि मार्ग से भारत आया था। उन्होंने पेशावर, मथुरा, कन्नौज, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, पाटलिपुत्र, काशी और बोधगया सहित अन्य स्थानों का दौरा किया। वह सीलोन और जावा के रास्ते का दौरा करते हुए समुद्री मार्ग से लौटा। उनकी यात्रा का मुख्य उद्देश्य बुद्ध की भूमि को देखना और भारत से

बौद्ध पांडुलिपियों को एकत्र करना था। वह तीन साल तक पाटलिपुत्र में रहे और उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया और बौद्ध ग्रंथों की नकल की।

फाह्यान गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।उनके अनुसार, उत्तर पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म समृद्ध स्थिति में था लेकिन गंगा घाटी में यह उपेक्षा की स्थिति में था। वह गंगा की घाटी को 'ब्राह्मणवाद की भूमि' के रूप में संदर्भित करता है। फाह्यान ने कुछ बौद्ध पवित्र स्थानों जैसे कपिलवस्तु और कुशीनगर की असंतोषजनक स्थिति का उल्लेख किया है। उनके अनुसार साम्राज्य की आर्थिक स्थिति समृद्ध थी।

यद्यपि उनका लेखा-जोखा कई मायनों में मूल्यवान है, उन्होंने चंद्रगुप्त द्वितीय के नाम का उल्लेख नहीं किया। उन्हें राजनीतिक मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी रुचि मुख्य रूप से धर्म थी। उन्होंने बौद्ध दृष्टिकोण से हर चीज का आकलन किया। सामाजिक परिस्थितियों पर उनकी टिप्पणियों को अतिरंजित पाया जाता है। फिर भी, उनके लेख देश की सामान्य स्थिति जानने के लिए उपयोगी हैं।

3. ह्वेनसांग: वह एक चीनी बौद्ध भिक्षु, विद्वान, यात्री और अनुवादक थे जिन्होंने सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा की और हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान चीनी बौद्ध धर्म और भारतीय बौद्ध धर्म के बीच बातचीत का वर्णन किया।

उन्होंने बिहार राज्य के तत्कालीन महान भारतीय विश्वविद्यालय नालंदा में लगभग पाँच वर्ष बिताए। ह्वेनसांग ने नालंदा में अपने समय के दौरान तर्क, व्याकरण, संस्कृत और बौद्ध धर्म के योगकारा स्कूल का अध्ययन किया।

Q. 57) गुप्त साम्राज्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए::

1. व्यक्ति के जीवन में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं था।
2. सजा की व्यवस्था कठोर थी और जासूसी प्रणाली प्रचलित थी।
3. इस काल में अस्पृश्यता की प्रथा शुरू हुई।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 57) Solution (c)

गुप्त प्रशासन पर फाह्यान का लेखा-जोखा उपयोगी जानकारी प्रदान करता है। वह गुप्त प्रशासन को सौम्य और परोपकारी बताते हैं। लोगों के आने जाने पर कोई प्रतिबंध नहीं था और उन्हें अधिक मात्रा में व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त थी। व्यक्ति के जीवन में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं था। सजा गंभीर नहीं थी। जुर्माना लगाना एक सामान्य सजा थी। कोई जासूसी प्रणाली नहीं थी। प्रशासन इतना कुशल था कि सड़कों को यात्रियों के लिए सुरक्षित रखा जाता था, और चोरों का कोई डर नहीं होता था। उन्होंने उल्लेख किया कि लोग आम तौर पर समृद्ध थे और अपराध नगण्य थे।

फाह्यान ने गुप्त प्रशासन की दक्षता की भी सराहना की थी क्योंकि वह गंगा की घाटी में बिना किसी डर के यात्रा करने में सक्षम था। कुल मिलाकर प्रशासन मौर्यों की तुलना में अधिक उदार था।

भारत में पूर्व-गुप्त काल में विदेशी आक्रमणों की एक श्रृंखला देखी गई। भारतीय समाज ने उन विदेशियों को रास्ता दिया था जो यहां के स्थायी निवासी बन गए थे। लेकिन गुप्त काल के दौरान, जाति व्यवस्था कठोर हो गई। ब्राह्मणों ने समाज की शीर्ष पद पर कब्जा कर लिया। उन्हें शासकों के साथ-साथ अन्य धनी लोगों द्वारा भारी उपहार दिए गए थे। इस काल में अस्पृश्यता की प्रथा धीरे-धीरे शुरू हो गई थी। फाह्यान का उल्लेख है कि चांडालों को समाज से अलग कर दिया गया था। उनकी दयनीय स्थिति को चीनी यात्री ने विस्तार से बताया।

Q. 58) गुप्त युग निम्नलिखित में से किस साहित्यिक योगदान का साक्षी था?

1. वराहमिहिर द्वारा बृहद्संहिता
2. आनंद द्वारा सुत्त पिटक (Sutta pitaka)
3. भद्रबाहु का कल्पसूत्र
4. विष्णुगुप्त द्वारा पंचतंत्र

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 3 और 4

d) केवल 1 और 4

Q. 58) Solution (d)

वराहमिहिर द्वारा बृहद्संहिता गुप्तों के शासनकाल के दौरान लिखी गई थी। संस्कृत साहित्य में यह एक महान कृति है। इसमें मानव हित के व्यापक विषयों को शामिल किया गया है, जिसमें खगोल विज्ञान, ग्रहों की चाल, ग्रहण, वर्षा, बादल, वास्तुकला, फसलों की वृद्धि, इत्र का निर्माण, विवाह और घरेलू संबंध शामिल हैं। गरुड़ पुराण में पाए गए रत्न मूल्यांकन मानदंड पर मात्रा का विस्तार होता है, और उसी पाठ से पवित्र नौ मोतियों पर विस्तार से बताया गया है। इसमें 106 अध्याय हैं और इसे "महान संकलन" के रूप में जाना जाता है।

आनंद द्वारा सुत्त पिटक थेरवाद बौद्ध धर्म के बौद्ध लेखन का एक पाली संग्रह है। यह मौर्यों के शासनकाल के दौरान लिखा गया था। यह नैतिकता पर संवाद और प्रवचन से संबंधित है और धर्म से संबंधित है।

भद्रबाहु का कल्पसूत्र प्राकृत में लिखा गया एक जैन ग्रंथ है। यह मौर्यों के शासनकाल के दौरान लिखा गया था। यह पिछले दो जैन तीर्थंकरों, पार्श्वनाथ और महावीर के जीवन की कहानियों से संबंधित है। जैन मुनियों द्वारा आठ दिवसीय पर्युषण पर्व में सामान्य जैन लोगों के लिए कल्पसूत्र का पाठ किया जाता है।

पंचतंत्र की कहानियों की रचना विष्णुशर्मा ने गुप्त काल में की थी। यह संस्कृत पद्य और गद्य में परस्पर संबंधित पशु दंतकथाओं का एक प्राचीन भारतीय संग्रह है, जिसे एक फ्रेम कहानी के भीतर व्यवस्थित किया गया है।

Q. 59) चोल प्रशासन के सन्दर्भ में, जिसे "पुरवुवरिथिनैक्कलम" (puravuvarithinaikkalam) कहा जाता था"?

a) भू-राजस्व विभाग

b) ग्राम सभाएं

c) शाही सेनाएँ

d) सैन्य छावनी

Q. 59) Solution (a)

चोलों के पास प्रशासन की एक उत्कृष्ट प्रणाली थी। प्रशासन के शीर्ष पर सम्राट या राजा था। चोल साम्राज्य की सीमा और संसाधनों ने राजशाही की शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाया। तंजौर और गंगईकोंडाचोलपुरम जैसे बड़े राजधानी शहर, बड़े शाही दरबार और मंदिरों को व्यापक अनुदान, राजा के अधिकार को प्रकट करते हैं। उन्होंने प्रशासन की दक्षता बढ़ाने के लिए शाही दौरे किए। पेरुन्दनम और सिरुदनम (perundanam and sirudanam) नामक विभिन्न अधिकारियों से युक्त विस्तृत प्रशासनिक तंत्र था।

भू-राजस्व विभाग सुव्यवस्थित था। इसे पुरवुवरिथिनैक्कलम कहा जाता था। राजस्व के निर्धारण के लिए सभी भूमियों का सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण और वर्गीकरण किया गया। गाँव के रिहायशी हिस्से को उर नट्टम (ur nattam) कहा जाता था। इन और अन्य भूमि जैसे मंदिरों से संबंधित भूमि को कर से छूट दी गई थी। भू-राजस्व के अलावा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाले सामानों पर टोल और सीमा शुल्क, विभिन्न प्रकार के पेशेवर कर, विवाह और न्यायिक जुर्माना जैसे औपचारिक अवसरों पर लगाए गए कर थे। कठिन समय के दौरान, करों की छूट थी और कुलोत्तुंगा I ने टोल को समाप्त करके प्रसिद्ध हो गया और उपाधि अर्जित किया - संगम तविर्ता चोलन। शासकीय व्यय की मुख्य मदें राजा और उसका दरबार, सेना और नौसेना, सड़कें, सिंचाई के टैंक और नहरें थीं।

Q.60) निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित हैं?

	(शब्द)	**(विवरण)**
1.	कोट्टम	पल्लव साम्राज्य का प्रशासनिक प्रभाग
2.	विषय	राष्ट्रकूट साम्राज्य के प्रशासनिक प्रभाग
3.	मंडलम	चोल साम्राज्य का प्रशासनिक प्रभाग

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 60) Solution (d)

पल्लवों के पास एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था थी। पल्लव राज्य कोट्टम (Kottams) में विभाजित किया गया था। कोट्टम का प्रशासन राजा द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा किया जाता था। राजा प्रशासन के केंद्र में था जिसमें उसे सक्षम मंत्रियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। वह न्याय का स्रोत था। उन्होंने एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना बनाए रखी।

राष्ट्रकूट साम्राज्य को कई प्रांतों में विभाजित किया गया था जिन्हें राष्ट्र कहा जाता था, जो राष्ट्रपति के नियंत्रण में थे। उन्हें आगे विषयों या जिलों में विभाजित किया गया था, जो विषयपतियों द्वारा शासित थे। अगला उपखंड भुक्ति (bhukti) था जिसमें भोगपति के नियंत्रण में 50 से 70 गांव शामिल थे। इन अधिकारियों को सीधे केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता था। ग्राम प्रशासन का संचालन ग्राम प्रधानों द्वारा किया जाता था। हालाँकि, ग्राम सभाओं ने ग्राम प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चोल साम्राज्य मंडलों में विभाजित था और प्रत्येक मंडल वालनाड और नाडु में। प्रत्येक नाडु में कई स्वायत्त गाँव थे। मंडलों के प्रभारी शाही राजकुमार या अधिकारी थे। वलनाडु पेरियनाट्टर (periyanattar) के अधीन था और नाडु नत्तार के अधीन था। शहर को नगरम् के नाम से जाना जाता था और यह नगरत्तर (nagarattar) नामक एक परिषद के प्रशासन के अधीन था।

Q. 61) निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए:

1. हर्षचरित
2. रत्नावली
3. नागानंद

निम्नलिखित में से किसकी रचना हर्षवर्धन ने की थी?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 61) Solution (b)

हर्ष, जिसे हर्षवर्धन के नाम से भी जाना जाता है, प्रभाकरवर्धन के दूसरे पुत्र और राज्यवर्धन के छोटे भाई ने 606 से 647 ईस्वी तक उत्तरी भारत में एक बड़े साम्राज्य पर शासन किया।

सम्राट हर्ष स्वयं एक महान विद्वान थे जिन्होंने बाणभट्ट और मयूर जैसे कई कवियों को संरक्षण और प्रायोजित किया। हम उनके जीवन-इतिहास को प्रसिद्ध संस्कृत गद्य लेखक बाणभट्ट द्वारा रचित प्रसिद्ध कृति हर्षचरित से जानते हैं।

हर्ष तीन संस्कृत कृतियों के रचयिता हैं: नागानंद, रत्नावली और प्रियदर्शिका

नागानंद पांच कृत्यों में एक नाटक है जो विद्याधर नरेश जिमुतवाहन के आत्म-बलिदान का वर्णन करता है। मुख्य विषय के अलावा, नाटक में एक दिलचस्प उप-कथा है जिसमें माल्यवती के लिए नायक के प्रेम को चित्रित किया गया है।

रत्नावली, हर्ष की उत्कृष्ट कृति चार कृत्यों में एक नाटिका है जो राजा उदयन और सीलोन के राजा की बेटी रत्नावली के मिलन की कहानी से संबंधित है।

प्रियदर्शिका भी चार कृत्यों में एक नाटिका है, जिसका विषय उदयन और राजा द्रिधवर्मन की पुत्री प्रियदर्शिका का मिलन है।

Q. 62) प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, "निलोपितु" (nilopitu) शब्द का प्रयोग किसे निरूपित करने के लिए किया गया था:

a) राजा द्वारा ब्राह्मणों को गांवों से करों का योगदान

b) सार्वजनिक रिकॉर्ड का पुरालेख

c) हिंदू मंदिर का एक पवित्र स्थान

d) सिक्के के लिए प्रयुक्त एक शब्द

Q. 62) Solution (b)

सार्वजनिक अभिलेखों का रखरखाव हर्षवर्धन के प्रशासन की मुख्य विशेषता थी। हर्षवर्धन काल के संग्रह को "नीलोपितु" के रूप में जाना जाता था और यह विशेष अधिकारियों के नियंत्रण में था। कई अच्छी और बुरी घटनाएं थीं जो उस समय के दौरान हुईं और दर्ज की गईं थीं।

Q. 63) हर्षवर्धन के शासन काल में प्रशासन और समाज के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बलात श्रम बहुत अधिक प्रचलित था।
2. मौर्य काल के क्रूर दंड हर्ष के समय में बंद कर दिए गए थे।
3. दहेज प्रथा प्रचलित थी।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 63) Solution (c)

हर्ष का प्रशासन

- हर्ष का प्रशासन उसी तर्ज पर आयोजित किया गया था जैसे गुप्तों ने किया था। ह्वेन त्सांग इस बारे में एक विस्तृत चित्र देता है।
- राजा अपने प्रशासन में न्यायपूर्ण और अपने कर्तव्यों के निर्वहन में समय का पाबंद था। उन्होंने अपने पूरे राज्य में निरीक्षण के लगातार दौरे किए। उसके लिए दिन बहुत छोटा था।

- कराधान भी कम था और बलात/जबरन श्रम भी दुर्लभ थी। उपज का छठा भाग भूमि कर के रूप में वसूल किया जाता था।
- मौर्य काल के क्रूर दंड हर्ष के समय में भी जारी रहे। ह्वेन त्सांग ने जाँच के तरीके को बर्बर और अंधविश्वासी बताया।
- हर्ष की सेना में पारंपरिक चार विभाग शामिल थे – पैदल, घोड़ा, रथ और हाथी।
- घुड़सवारों की संख्या एक लाख से अधिक और हाथियों की संख्या साठ हजार से अधिक थी। यह मौर्य सेना की तुलना में बहुत अधिक था।

हर्ष के समय समाज

- बाना और ह्वेन त्सांग दोनों हर्ष के समय के सामाजिक जीवन को चित्रित करते हैं।
- समाज का विभाजन - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - प्रचलित था।
- ब्राह्मण समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग थे और उन्हें राजाओं द्वारा भूमि अनुदान दिया जाता था।
- क्षत्रिय शासक वर्ग थे।
- वैश्य मुख्यतः व्यापारी थे।
- ह्वेनसांग का उल्लेख है कि शूद्र कृषि का अभ्यास करते थे।
- अनेक उपजातियाँ थीं।
- महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं थी। स्वयंवर की संस्था (अपने पति को चुनने का विकल्प) अस्वीकार कर दिया गया था।
- विधवाओं के पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी, विशेषकर उच्च जातियों में। दहेज प्रथा भी आम हो गई थी।
- सती प्रथा भी प्रचलित थी।
- ह्वेन त्सांग ने मृतकों के निपटान के तीन तरीकों का उल्लेख किया है - दाह संस्कार, जल दफन (water burial) और जंगल में छोड़ना

Q. 64) हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक प्रगति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. गुप्त काल की अर्थव्यवस्था की तुलना में महत्वपूर्ण आर्थिक प्रगति हुई थी।
2. मतंग दिवाकर और बरथरिहरि हर्षवर्धन के दरबारी कवि थे।
3. हर्षवर्धन शुरुआत में शैव अनुयायी थे लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 64) Solution (d)

हर्ष के काल में व्यापार और वाणिज्य में गिरावट आई थी। यह व्यापार केंद्रों के पतन, सिक्कों की कम संख्या और व्यापारी संघों की धीमी गतिविधियों से स्पष्ट है। बदले में व्यापार में गिरावट ने हस्तशिल्प उद्योग और कृषि को प्रभावित किया। चूंकि माल की बड़े पैमाने पर मांग नहीं थी, इसलिए किसान सीमित तरीके से ही उत्पादन करने लगे। इससे आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उदय हुआ। संक्षेप में, गुप्त काल की अर्थव्यवस्था की तुलना में तीव्र आर्थिक गिरावट आई।

हर्ष विद्या के महान संरक्षक थे। उनके जीवनी लेखक बाणभट्ट ने उनके शाही दरबार को सुशोभित किया। हर्षचरित के अलावा, उन्होंने कादंबरी लिखी। हर्ष के दरबार में अन्य साहित्यिक हस्तियां मातंग दिवाकर और प्रसिद्ध बार्थीरहरि थे,जो कवि, दार्शनिक और व्याकरणविद् थे। हर्ष ने नालंदा विश्वविद्यालय को अपनी उदार निधि से संरक्षण दिया। इसने अपने शासनकाल के दौरान सीखने के केंद्र के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। ह्वेन त्सांग ने नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा किया और कुछ समय के लिए एक छात्र के रूप में रहे।

अपने प्रारंभिक जीवन में, हर्ष एक शैव भक्त थे, लेकिन बाद में वे एक उत्साही हीनयान बौद्ध बन गए। ह्वेन त्सांग ने उन्हें महायान बौद्ध धर्म में परिवर्तित कर दिया। हर्ष ने अपने राज्य में जानवरों के भोजन के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया और किसी भी जीवित प्राणी को मारने वालों को दंडित किया। उसने अपने राज्य में हजारों स्तूप बनवाए और यात्रियों के विश्राम गृह की स्थापना की। उन्होंने बौद्धों के पवित्र स्थानों पर मठ भी बनवाए

Q. 65) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पल्लवों के शासनकाल में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय हुआ और शैववाद और वैष्णववाद का भी पतन हुआ।
2. पल्लवों के शासनकाल के दौरान ब्रह्मदेय और देवधन भूमि को कर से मुक्त किया गया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 65) Solution (b)

पल्लव प्रशासन:

- भूमि कर सरकारी राजस्व का प्राथमिक स्रोत था।
- पल्लव राजा ने देवधन के नाम से जाने जाने वाले मंदिरों और ब्रह्मदेय के नाम से जाने जाने वाले ब्राह्मणों को भी भूमि-अनुदान प्रदान किया। ब्रह्मदेय और देवधन भूमि को कर से छूट दी गई थी।

- बढ़ई, सुनार, धोबी, तेल-निकालने वाले और बुनकरों जैसे व्यापारियों और कारीगरों ने सरकार को करों का भुगतान किया।
- पल्लव अभिलेखों से ग्राम सभाओं, सभाओं और उनकी समितियों पर बहुत प्रकाश पड़ता है। वे सभी गाँव की भूमि का रिकॉर्ड रखते थे, स्थानीय मामलों की देखभाल करते थे और मंदिरों का प्रबंधन करते थे।

पल्लवों के अधीन समाज

- पल्लव काल के दौरान तमिल समाज में एक महान परिवर्तन देखा गया।
- जाति व्यवस्था कठोर हो गई। ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्थान था। उन्हें राजाओं और कुलीनों द्वारा भूमि-अनुदान दिया जाता था। उन्हें मंदिरों की देखभाल की जिम्मेदारी भी दी गई थी।
- पल्लव काल में शैववाद और वैष्णववाद का उदय हुआ तथा बौद्ध और जैन धर्म का पतन हुआ। शैव नयनमार और वैष्णव अलवर ने शैववाद और वैष्णववाद के विकास में योगदान दिया। इसे भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है।
- उन्होंने तमिल भाषा में अपनी ऋचाओं की रचना की। इन ऋचाओं से भक्ति या भक्ति के महत्व का पता चलता है। पल्लव राजाओं द्वारा मंदिरों के निर्माण ने इन दोनों धर्मों के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया

Q. 66) पल्लवों के शासनकाल में साहित्य के विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कांची में घटिका शिक्षा का एक लोकप्रिय केंद्र था तथा इसने भारत और विदेशों के सभी हिस्सों से छात्रों को आकर्षित किया।
2. नलयरादिव्याप्रबंधम नयनार द्वारा रचित 4,000 तमिल छंदों का एक संग्रह है।
3. पेरुंडेवनार द्वारा महाभारत का तमिल में अनुवाद किया गया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q.66) Solution (b)

पल्लवों के शासनकाल के दौरान शिक्षा और साहित्य:

- पल्लव शिक्षा के महान संरक्षक थे। उनकी राजधानी कांची शिक्षा का एक प्राचीन केंद्र था। कांची में घटिका लोकप्रिय थी और इसने भारत और विदेशों के सभी हिस्सों से छात्रों को आकर्षित किया।
- कदंब वंश के संस्थापक मयूरशर्मन ने कांची में वेदों का अध्ययन किया। एक बौद्ध लेखक दिंगनांग कांची में अध्ययन करने आया था।
- धर्मपाल, जो बाद में नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख बने, कांची के थे।

- महान संस्कृत विद्वान भारवि सिंहविष्णु के समय में रहते थे। एक अन्य संस्कृत लेखक दंडिन ने नरसिंहवर्मन द्वितीय के दरबार को सुशोभित किया।
- महेंद्रवरमन प्रथम ने संस्कृत नाटक मत्विलासप्रहसनम् की रचना की।
- तमिल साहित्य का भी विकास हुआ था। नयनमार और अलवर ने तमिल में धार्मिक भजनों की रचना की।
- नयनमारों द्वारा रचित देवरम और अलवरों द्वारा रचित नलयरादिव्यप्रबंधम पल्लव काल के धार्मिक साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- पेरुंडेवनार को नंदीवर्मन द्वितीय द्वारा संरक्षण दिया गया था और उन्होंने महाभारत का तमिल में भारतवेनबा (Bharathavenba) के रूप में अनुवाद किया था।
- नंदीक्कलंबगम (Nandikkalambagam) एक और महत्वपूर्ण काम था लेकिन इस काम के लेखक का नाम ज्ञात नहीं है।

Q. 67) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. संरचनात्मक मंदिरों के निर्माण में बेसर शैली का विकास पल्लवों द्वारा किया गया था।
2. महाबलीपुरम में शोर/ तटीय मंदिर और तंजावुर में बृहदीश्वर मंदिर बेसर शैली में बनाए गए थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 67) Solution (d)

चालुक्य कला के महान संरक्षक थे। उन्होंने संरचनात्मक मंदिरों के निर्माण में बेसर शैली का विकास किया। हालाँकि, बेसर शैली राष्ट्रकूटों और होयसालों के अधीन ही अपनी परिणति तक पहुँची।

बेसर शैली में द्रविड़ और नागर दोनों शैलियों के तत्व शामिल हैं। विशेष रूप से गर्भगृह के ऊपर अधिरचना का आकार आमतौर पर रूपरेखा में पिरामिडनुमा होता है, और उत्तरी शिखर टॉवर से छोटा होता है।

चालुक्यों के संरचनात्मक मंदिर ऐहोल, बादामी और पट्टाडकल में मौजूद हैं। उनके गुफा मंदिर अजंता, एलोरा और नासिक में पाए जाते हैं।

बादामी मंदिर, ऐहोल में दुर्गा मंदिर और पट्टाडकल में विरुपाक्ष मंदिर बेसर शैली में बनाया गया था।

महाबलीपुरम में शोर/तटीय मंदिर और तंजावुर में बृहदीश्वर मंदिर मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली में बनाए गए थे।

Q. 68) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एलोरा में एकाश्म कैलाश मंदिर चालुक्य शासन के दौरान बनाया गया था।
2. राष्ट्रकूट शासन के दौरान कन्नड़ एक साहित्यिक भाषा के रूप में अधिक प्रमुख हो गयी।
3. कविराजमार्ग कन्नड़ भाषा की पहली काव्य कृति थी।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 68) Solution (d)

एलोरा में शानदार चट्टानों को काटकर मोनोलिथिक/ एकाश्म कैलाश मंदिर कृष्ण प्रथम द्वारा बनाया गया था जो राष्ट्रकूट साम्राज्य के एक प्रसिद्ध शासक थे।

राष्ट्रकूट शासन के दौरान कन्नड़ एक साहित्यिक भाषा के रूप में अधिक प्रमुख हो गई, इसकी लिपि और साहित्य में उल्लेखनीय वृद्धि, गरिमा और उत्पादकता दिखाई गई। इस अवधि ने प्रभावी रूप से शास्त्रीय प्राकृत और संस्कृत युग के अंत को चिह्नित किया। दरबारी कवियों और राजघरानों ने कन्नड़ और संस्कृत में प्रख्यात रचनाएँ की, जिन्होंने गद्य, कविता, आलंकारिक, हिंदू महाकाव्य और जैन तीर्थंकरों के जीवन इतिहास जैसे साहित्यिक रूपों को विस्तृत किया।

राजा अमोघवर्ष प्रथम द्वारा कविराजमार्ग कन्नड़ में आलंकारिक और काव्य पर सबसे पहली उपलब्ध पुस्तक है। कविराजमार्ग कवियों (कविशिक्षा) के लिए एक मार्गदर्शक है जिसका उद्देश्य इन विभिन्न शैलियों का मानकीकरण करना है।

Q. 69) प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, "पुरवुवरिथिनैक्कलम" (puravuvarithinaikkalam) शब्द का प्रयोग निरूपित करने के लिए किया गया था:

a) भू-राजस्व विभाग

b) युद्ध लड़ने हेतु बनाया गया चलायमान किला

c) कराधान के निर्धारण के प्रभारी सर्वोच्च अधिकारी

d) व्यापारियों से सीमा शुल्क वसूलने वाले टोल अधिकारी

Q. 69) Solution (a)

पुरवुवरिथिनैक्कलम शाही चोलों के शासन के दौरान भू-राजस्व विभाग था

चोलों के शासन के दौरान राजस्व के आकलन के लिए सभी भूमि का सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण और वर्गीकरण किया गया था। गाँव के रिहायशी हिस्से को उर नट्टम (ur nattam) कहा जाता था। ये और अन्य भूमि जैसे मंदिरों से संबंधित भूमि को कर से छूट दी गई थी। भू-राजस्व के अलावा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाले सामानों पर टोल और सीमा शुल्क, विभिन्न प्रकार के पेशेवर कर, विवाह

और न्यायिक जुर्माना जैसे औपचारिक अवसरों पर लगाए गए बकाया थे। कठिन समय के दौरान, करों की छूट थी और कुलोत्तुंगा I ने टोल को समाप्त करके प्रसिद्ध हो गया और संगम तविर्ता चोल की उपाधि ग्रहण किया था। शासकीय व्यय की मुख्य मदें राजा और उनके दरबार, सेना और नौसेना, सड़कें, सिंचाई के टैंक और नहरें थीं।

Q.70) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. चोल काल में तमिल साहित्य का विकास अपने चरम पर था।
2. चोल काल के दौरान शैववाद और वैष्णववाद का पतन हुआ।
3. चोलों के चीन, सुमात्रा, जावा और अरब के साथ व्यावसायिक संपर्क थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 70) Solution (c)

चोल काल के दौरान साहित्य का विकास:

- चोल काल में तमिल साहित्य का विकास अपने चरम पर था।
- तिरुथक्कदेवर और कुंडलकेशी द्वारा लिखित शिवकासिंतामणि 10वीं शताब्दी की है।
- कंबन द्वारा रचित रामायण और सेक्कीळार द्वारा पेरियापुराणम या तिरुत्तोंदरपुराणम इस युग की दो उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।
- जयंकोन्दर की कलिंगट्टुपरानी (Kalingattupparani) में कुलोत्तुंग प्रथम द्वारा लड़े गए कलिंग युद्ध का वर्णन है।
- ओट्टाकुथार (Ottakuthar) द्वारा लिखित मुवारुला (Moovarula) में तीन चोल राजाओं के जीवन को दर्शाया गया है।
- नालवेनबा को पुगलेंडी ने लिखा था। तमिल व्याकरण पर की गई कृतियाँ जैसे कल्लदनार द्वारा कल्लादम, अमृतसागर द्वारा यप्परुंगलम, एक जैन, पवनानंदी द्वारा नन्नुल और बुद्धमित्र द्वारा विरासोलियम चोल युग के प्रमुख थे।

चोल काल के दौरान सामाजिक-आर्थिक जीवन:

- चोल काल के दौरान शैववाद और वैष्णववाद दोनों ही फलते-फूलते रहे।
- चोल राजाओं और रानियों के संरक्षण में कई मंदिरों का निर्माण किया गया था।
- इस अवधि के दौरान मंदिर आर्थिक गतिविधियों के केंद्र बने रहे।
- कृषि और उद्योग दोनों फले-फूले।

- वन भूमि के पुनर्ग्रहण और सिंचाई टैंकों के निर्माण और रखरखाव से कृषि समृद्धि हुई।
- बुनाई उद्योग, विशेष रूप से कांची में रेशम-बुनाई का विकास हुआ।
- मंदिरों और बर्तनों के लिए छवियों की अत्यधिक मांग के कारण धातु के कामों का विकास हुआ। ट्रंक रोड या पेरुवाज़ी और मर्चेंट गिल्ड के साथ वाणिज्य और व्यापार तेज था।
- विभिन्न संप्रदायों में सोने, चांदी और तांबे के सिक्के बहुतायत में जारी किए गए थे।
- चोल साम्राज्य और चीन, सुमात्रा, जावा और अरब के बीच वाणिज्यिक संपर्क व्यापक रूप से प्रचलित थे। घुड़सवार सेना को मजबूत करने के लिए अरब के घोड़ों को बड़ी संख्या में आयात किया गया था

Q. 71) प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, "मुचचंगम" (Muchchangam) के नाम से क्या जाना जाता था?

a) भूमि का पांच भागों में विभाजन

b) तमिल कवियों की अकादमी

c) जातियों का चार भागों में विभाजन

d) प्रारंभिक तमिल साहित्यिक कृति

Q. 71) Solution (b)

संगम युग दक्षिण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। तमिल किंवदंतियों के अनुसार, प्राचीन तमिलनाडु में तीन संगम (तमिल कवियों की अकादमी) मौजूद थे, जिन्हें लोकप्रिय रूप से मुचचंगम कहा जाता था। ये संगम पांड्यों के शाही संरक्षण में विकसित हुए थे।

Q. 72) निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित हैं?

क्र.सं.	संगम (तमिल कवियों की अकादमी)	स्थान
1.	पहला संगम	मदुरई
2.	दूसरा संगम	मदुरई
3.	तीसरा संगम	कपाटपुरम्

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 72) Solution (a)

संगम (तमिल कवियों की अकादमी) पांड्यों के शाही संरक्षण में फला-फूला।

- मदुरई में आयोजित पहले संगम में देवताओं और महान संतों ने भाग लिया था लेकिन इस संगम का कोई साहित्यिक कार्य उपलब्ध नहीं था।
- दूसरा संगम कपाटपुरम् में आयोजित किया गया था लेकिन तोल्लकापियम को छोड़कर सभी साहित्यिक कार्य नष्ट हो गए थे।
- मदुरै में तीसरे संगम की स्थापना मुदाथिरुमारन ने की थी। इसमें बड़ी संख्या में कवियों ने भाग लिया जिन्होंने विशाल साहित्य का निर्माण किया लेकिन केवल कुछ ही बच पाए।

ये तमिल साहित्यिक कृतियाँ संगम युग के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उपयोगी स्रोत हैं।

Q. 73) संगम युग की राजनीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संगम काल के दौरान वंशानुगत राजतंत्र सरकार का रूप था।
2. बाघ (Tiger) पांड्यों का शाही प्रतीक था।
3. बंदरगाह में कार्यरत सीमा शुल्क अधिकारियों को पट्टिनप्पलई (Pattinappalai) के नाम से जाना जाता था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 73) Solution (c)

संगम राजव्यवस्था:

- संगम काल के दौरान वंशानुगत राजतंत्र सरकार का रूप था। राजा ने अपने मंत्री, दरबारी-कवि और शाही दरबार या अवाई (avai) की सलाह भी ली थी।
- चेर राजाओं ने वनवरम्बन, वनवन, कुट्टुवन, इरुम्पोराई और विलावर, चोल राजाओं जैसे सेनी, वलवन और किल्ली और पांड्य राजाओं थेनावर और मिनावर (Thennavar and Minavar) जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
- संगम राजवंशों में से प्रत्येक के पास एक शाही प्रतीक था – जो पांड्यों के लिए मछली (carp), चोलों के लिए बाघ और चेरों के लिए धनुष था।
- शाही दरबार या अवई में कई प्रमुख और अधिकारी भाग लेते थे।
- राजा को अधिकारियों के एक बड़े निकाय द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी जो पाँच परिषदों में विभाजित थे। वे मंत्री (अमाइचर), पुजारी (अंथनार), सैन्य कमांडर (सेनापति), दूत (थुथर) और जासूस (ओरार) थे।

- संगम युग के दौरान सैन्य प्रशासन भी कुशलतापूर्वक व्यवस्थित किया गया था। प्रत्येक शासक के पास एक नियमित सेना और उनके संबंधित कोडीमाराम (टटलरी वृक्ष) थे।
- भू-राजस्व राज्य की आय का मुख्य स्रोत था जबकि विदेशी व्यापार पर सीमा शुल्क भी लगाया जाता था।
- पट्टिनप्पलई (Pattinappalai) पुहार के बंदरगाह में कार्यरत सीमा शुल्क अधिकारियों को संदर्भित करता है। युद्धों में पकड़ी गई लूट भी शाही खजाने की एक बड़ी आय थी।
- डकैती और तस्करी को रोकने के लिए सड़कों और राजमार्गों को अच्छी तरह से बनाए रखा जाता था और रात-दिन पहरा दिया जाता था।

Q. 74) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. तोलकप्पियम में संगम युग के दौरान भूमि के पांच प्रकार के विभाजन को संदर्भित किया गया है।
2. संगम काल के प्राथमिक देवता सियोन (Seyon) थे।
3. अव्वय्यार, नचचेलैय्यार और कक्कईपदिनीयर जैसी महिला कवियों ने संगम युग के दौरान विकास किया।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 74) Solution (d)

संगम समाज:

तोल्काप्पियम भूमि के पांच प्रकार के विभाजन को संदर्भित करता है - कुरिंजी (पहाड़ी ट्रैक), मुलई (देहाती), मरुदम (कृषि), नेडल (तटीय) और पलई (रेगिस्तान)। इन पांच मंडलों में रहने वाले लोगों के अपने-अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ पूजा के लिए देवता भी थे।

तोलकाप्पियम में चार जातियों का भी उल्लेख है, जैसे अरसार, अनंतार, वंजीयर और वेल्लार। शासक वर्ग को अरसार (arasar) कहा जाता था। संगम की राजनीति और धर्म में अंथानारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वंजीयर व्यापार और वाणिज्य पर निर्भर थे। वेल्लाल कृषक थे।

संगम युग के दौरान धर्म:

संगम काल के प्राथमिक देवता सियोन या मुरुगन थे, जिन्हें तमिल भगवान के रूप में जाना जाता है। मुरुगन की पूजा का एक प्राचीन मूल था और संगम साहित्य में भगवान मुरुगन से संबंधित त्योहारों का उल्लेख किया गया था। उन्हें अरुपदाई वीदु (Arupadai Veedu) के नाम से जाने जाने वाले छह पदों से सम्मानित किया गया था।

संगम युग में महिलाओं की स्थिति:

अव्वैयार, नच्चेलैयार और कक्कईपदिनीयर जैसी महिला कवियों ने इस अवधि में विकास किया और तमिल साहित्य में योगदान दिया। कई कविताओं में भी महिलाओं के साहस की सराहना की गई। कर्पू या पवित्र जीवन महिलाओं का सर्वोच्च गुण माना जाता था। प्रेम विवाह एक आम बात थी। महिलाओं को अपना जीवन साथी चुनने की छूट थी। हालाँकि, विधवाओं का जीवन दयनीय था। सती प्रथा समाज के उच्च तबके में भी प्रचलित थी। नर्तकों के वर्ग को राजाओं और कुलीनों का संरक्षण प्राप्त था।

Q. 75) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. संगम काल की सबसे पहली तमिल व्याकरण की कृति तोलकाप्पियम थी।
2. संगम युग के दौरान पुहार एक बंदरगाह शहर था।
3. संगम युग के दौरान सोना और घोड़े निर्यात की प्रमुख वस्तुएं थीं।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 75) Solution (a)

तोल्काप्पियार द्वारा लिखित तोल्काप्पियम तमिल साहित्य में सबसे प्राचीन है। यह तमिल व्याकरण पर एक कार्य है लेकिन यह संगम काल की राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक स्थितियों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

संगम युग के दौरान दक्षिण भारत और ग्रीक राज्यों के बीच बाहरी व्यापार किया जाता था। रोमन साम्राज्य के प्रभाव के बाद, रोमन व्यापार ने महत्व ग्रहण किया।

पुहार का बंदरगाह शहर विदेशी व्यापार का एक एम्पोरियम बन गया, क्योंकि बड़े जहाज कीमती सामान के साथ इस बंदरगाह में प्रवेश करते थे। वाणिज्यिक गतिविधि के अन्य बंदरगाहों में टोंडी, मुसिरी, कोरकाई, अरिकामेडु और मरक्कनम शामिल हैं।

पेरिप्लस के लेखक विदेशी व्यापार पर सबसे मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं।

रोमन सम्राटों जैसे ऑगस्टस, टिबेरियस और नीरो द्वारा जारी किए गए बहुत सारे सोने और चांदी के सिक्के तमिलनाडु के सभी हिस्सों में पाए गए थे। वे तमिल देश में व्यापार की सीमा और रोमन व्यापारियों की उपस्थिति को प्रकट करते हैं।

संगम युग के मुख्य निर्यात सूती कपड़े, मसाले जैसे काली मिर्च, अदरक, इलायची, दालचीनी और हल्दी, हाथी दांत के उत्पाद, मोती और कीमती पत्थर थे।

संगम युग के दौरान सोना, घोड़े और मीठी शराब मुख्य आयात वस्तुएं थीं।

Q. 76) भारत में सूफी आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सूफी संत निजामुद्दीन औलिया सुहारावर्दी संप्रदाय से संबंधित थे।
2. सूफियों का मानना था कि मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के समान है।
3. सूफीवाद इस बात पर जोर देता है कि किसी को पीर या गुरु का मार्गदर्शन होना चाहिए, जिसके बिना आध्यात्मिक विकास असंभव है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 76) Solution (d)

निजामुद्दीन औलिया चिश्ती संप्रदाय के सूफी संत थे, और भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्रसिद्ध सूफियों में से एक थे। निजामुद्दीन औलिया ने अपने पूर्ववर्तियों की तरह प्रेम को ईश्वर की प्राप्ति के साधन के रूप में महत्व दिया। उनके लिए ईश्वर के प्रति उनके प्रेम का अर्थ मानवता के प्रति प्रेम था।

सूफीवाद ने प्रेम और भक्ति के तत्वों को ईश्वर की प्राप्ति के प्रभावी साधन के रूप में बल दिया। ईश्वर के प्रेम का अर्थ मानवता से प्रेम था और इसलिए सूफियों का मानना था कि मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के समान है।

सूफीवाद में, आत्म-अनुशासन को धारणा की भावना से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक शर्त माना जाता था।

जबकि रूढ़िवादी मुसलमान बाहरी आचरण पर जोर देते हैं, सूफी आंतरिक शुद्धता पर जोर देते हैं। रूढ़िवादी अनुष्ठानों के अंध-पालन में विश्वास करते हैं, सूफी प्रेम और भक्ति को मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र साधन मानते हैं। उनके अनुसार पीर या गुरु का मार्गदर्शन होना चाहिए, जिसके बिना आध्यात्मिक विकास असंभव है।

सूफीवाद ने भी अपने अनुयायियों के बीच सहिष्णुता की भावना पैदा की। सूफीवाद द्वारा जोर दिए गए अन्य विचारों में ध्यान, अच्छे कर्म, पापों के लिए पश्चाताप, प्रार्थना और तीर्थयात्रा, उपवास, दान तथा तपस्या प्रथाओं द्वारा तृष्णा का दमन शामिल हैं।

Q. 77) निम्नलिखित में से किसने विशिष्टाद्वैत (Visishtadvaita) के दर्शन का प्रचार किया?

a) शंकर

b) रामानुजाचार्य

c) माधव

d) वल्लभाचार्य

Q.77) Solution (b)

बारहवीं शताब्दी में, आधुनिक चेन्नई के पास श्रीपेरंबदूर में पैदा हुए रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत का उपदेश दिया।

उनके अनुसार भगवान सगुणब्रह्म हैं।रचनात्मक प्रक्रिया और सृष्टि की सभी वस्तुएँ वास्तविक हैं लेकिन भ्रमपूर्ण नहीं हैं जैसा कि शंकराचार्य ने कहा था।

इसलिए, भगवान, आत्मा, पदार्थ वास्तविक हैं। लेकिन ईश्वर आंतरिक पदार्थ है और बाकी उसके गुण हैं। उन्होंने प्रबत्तीमार्ग या ईश्वर के प्रति आत्म-समर्पण के मार्ग की भी वकालत की। उन्होंने समाज के निचले तबके को भी वैष्णववाद में आमंत्रित किया।

Q. 78) भारत में भक्ति आंदोलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नयनार और अलवार बौद्ध और जैन धर्म के आलोचक थे।
2. अलवर शिव के भक्त थे।
3. शंकराचार्य द्वैताद्वैत के सिद्धांत के समर्थक थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 78) Solution (a)

नयनार और अलवार:

- सातवीं से नौवीं शताब्दी में नयनार (शिव को समर्पित संत) और अलवर (विष्णु को समर्पित संत) के नेतृत्व में नए धार्मिक आंदोलनों का उदय हुआ, जहां पुलैयार और पनार जैसे "अछूत" माने जाने वाले लोगों सहित सभी जातियों से आए थे।
- वे बौद्धों और जैनियों के प्रबल आलोचक थे और उन्होंने शिव या विष्णु के प्रति प्रेम को मुक्ति के मार्ग के रूप में प्रचारित किया।
- उन्होंने संगम साहित्य में पाए जाने वाले प्रेम और वीरता के आदर्शों (सामान्य युग की प्रारंभिक शताब्दियों के दौरान रचित तमिल साहित्य का सबसे पहला उदाहरण) को आकर्षित किया और उन्हें भक्ति के मूल्यों के साथ मिश्रित किया।
- नयनार और अलवर जगह-जगह गए और जिन गाँवों में वे गए, वहाँ देवताओं की स्तुति में उत्तम कविताएँ रची और उन्हें संगीत के लिए स्थापित किया।

शंकराचार्य:

- भारत के सबसे प्रभावशाली दार्शनिकों में से एक शंकराचार्य का जन्म आठवीं शताब्दी में केरल में हुआ था।
- वह अद्वैत या व्यक्तिगत आत्मा और सर्वोच्च ईश्वर की एकता के सिद्धांत के पैरोकार थे जो कि परम वास्तविकता है।

- उन्होंने सिखाया कि ब्रह्म, एकमात्र या परम वास्तविकता, निराकार और बिना किसी विशेषता के था। उन्होंने हमारे चारों ओर की दुनिया को एक भ्रम या माया माना, और दुनिया के त्याग और ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को समझने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए ज्ञान के मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया।

Q. 79) भारत में भक्ति आंदोलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भक्ति संत चैतन्य ने बंगाल में कृष्ण पंथ को लोकप्रिय बनाया।
2. ज्ञानदेव पंजाब में भक्ति आंदोलन के संस्थापक थे।
3. भक्ति संत तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 79) Solution (b)

चैतन्य:

- वह बंगाल के प्रसिद्ध संत और सुधारक थे जिन्होंने कृष्ण पंथ को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने संसार को त्याग दिया, एक तपस्वी बन गए और अपने विचारों का प्रचार करते हुए पूरे देश में विचरण करते रहे।
- उन्होंने मनुष्य के सार्वभौमिक भाईचारे की घोषणा की और धर्म और जाति के आधार पर सभी भेदों की निंदा की। उन्होंने प्रेम और शांति पर जोर दिया और अन्य लोगों, विशेषकर गरीबों और कमजोरों के कष्टों के प्रति बहुत सहानुभूति दिखाई।
- उनका मानना था कि प्रेम और भक्ति, गीत और नृत्य के माध्यम से एक भक्त भगवान की उपस्थिति को महसूस कर सकता है। उन्होंने सभी वर्गों और जातियों के शिष्यों को स्वीकार किया और उनकी शिक्षाओं का आज भी बंगाल में व्यापक रूप से पालन किया जाता है

ज्ञानदेव:

- वह तेरहवीं शताब्दी में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के संस्थापक थे। इसे महाराष्ट्र धर्म कहा गया।
- उन्होंने ज्ञानेश्वरी नामक भगवत गीता की एक टीका लिखी।

तुकाराम:

- महाराष्ट्र के भक्ति संत तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे।
- वह मराठा राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि बनाने के लिए उत्तरदायी थे।

- उन्होंने सभी सामाजिक भेदों का विरोध किया।

Q.80) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भक्ति आंदोलन ने संस्कृत भाषा के विकास को गति प्रदान की।
2. भक्ति आंदोलन के दौरान निम्न वर्गों को अधिक महत्व की स्थिति में ऊपर उठाया गया था।
3. भक्ति आंदोलन ने लोगों को जटिल कर्मकांडों के बिना एक सरल धर्म प्रदान किया।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) केवल 1, 2 और 3

Q. 80) Solution (c)

भक्ति आंदोलन का महत्व:

- भक्ति आंदोलन का महत्व बहुत बड़ा था। विभिन्न प्रचारक क्षेत्रीय भाषाओं में बोलते और लिखते थे। इसलिए, भक्ति आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषाओं जैसे हिंदी, मराठी, बंगाली, कन्नड़, आदि के विकास के लिए एक प्रोत्साहन प्रदान किया। इन भाषाओं के माध्यम से उन्होंने जनता से सीधे अपील की।
- चूंकि भक्ति संतों द्वारा जाति व्यवस्था की निंदा की गई थी, इसने निम्न वर्गों को अधिक महत्व की स्थिति में ऊपर उठाया था।
- समाज में महिलाओं का महत्व इसलिए भी बढ़ गया क्योंकि भक्ति आंदोलन ने उन्हें समान महत्व दिया था।
- इसके अलावा, भक्ति आंदोलन ने लोगों को जटिल कर्मकांडों के बिना एक सरल धर्म प्रदान किया। उन्हें परमेश्वर के प्रति सच्ची भक्ति दिखाने की आवश्यकता थी। साथी लोगों के लिए दान और सेवा के जीवन का नया विचार विकसित हुआ।

Q. 81) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. बुद्ध ने चरम सीमाओं से परहेज किया लेकिन साथ ही साथ चार्वाक दर्शन के सकारात्मक तत्वों को अपनी शिक्षाओं में एकीकृत किया।
2. बुद्ध की मुख्य चिंता जीवन में समस्याओं का व्यावहारिक समाधान खोजना था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 81) Solution (c)

वैदिक परंपरा में अनुष्ठानों और बलिदानों को अत्यधिक महत्व देने के कारण बौद्ध धर्म एक वैकल्पिक परंपरा के रूप में उत्पन्न हुआ। यह उस समय की सामाजिक समस्याओं की घोर उपेक्षा के साथ-साथ समाज में ब्राह्मणों के आधिपत्य के विरुद्ध विद्रोह की प्रतिक्रिया भी थी।

बौद्ध धर्म के उदय के मुख्य कारण हैं:

- सामाजिक (Social): एक ब्राह्मण केंद्रित, जाति आधारित, पदानुक्रमित व्यवस्था समाज में प्रचलित थी। शास्त्रों की व्याख्या करने का अधिकार ब्राह्मण के पास निहित था। /मंदिर, जो सामाजिक जीवन के केंद्र थे, उन्हीं के नियंत्रण में थे। निम्न जाति के लोगों पर प्रदूषण के कानून (Laws of pollution) सख्ती से लागू किए गए थे। जनजाति और द्रविड़ जाति संरचना से बाहर थे।
- आर्थिक: कृषि और पशुपालन लोगों के लिए धन और आजीविका का मुख्य स्रोत था। ब्राह्मणों ने समाज में निम्न वर्गों के शोषण के तरीके और साधन खोजे। राजाओं को यज्ञ, यजना और दिग्विजय करने के लिए कहा जाता था जिससे ब्राह्मणों को बहुत लाभ होता था। आम लोगों को अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा राजाओं, ब्राह्मणों और मंदिरों में देना पड़ता था।
- धार्मिक (Religious): पूजा के तरीके, कर्मकांड और धार्मिक समारोहों की व्याख्या ब्राह्मणों द्वारा उनकी रुचि के अनुरूप की जाती थी। ब्राह्मणों के आधिपत्य को बनाए रखने के लिए वेद, आरण्यक, मीमांसा और उपनिषद लिखे गए थे। आध्यात्मिक अनुमान अपने चरम पर थे, जो शिक्षित वर्ग का विशेषाधिकार था। ऊंची जातियों द्वारा शोषण और आम जनता की पीड़ा बढ़ती ही जा रही थी।

यह दो चरम सीमाओं का समय था: वैदिक, उपनिषद में निरपेक्ष में विश्वास, बलिदान, अनुष्ठान (यज्ञ) और चार्वाक के भौतिकवादी दर्शन द्वारा समर्थित। बुद्ध ने चरम सीमाओं को टाला और नकारा, और साथ ही साथ इन दोनों प्रणालियों के सकारात्मक तत्वों को एकीकृत किया।

बुद्ध को घटनाओं के अनुमानित या सैद्धांतिक विश्लेषण में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन वे जीवन में समस्याओं के व्यावहारिक समाधान खोजने के बारे में चिंतित थे। प्रारंभिक उपनिषदों का प्रभाव बुद्ध की शिक्षाओं में स्पष्ट है। करुणा और प्रेम बुद्ध के प्रमुख लक्षण थे। दान बौद्ध धर्म का आधार था।

Q. 82) निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित हैं?

S. No.	बौद्ध सिद्धांत	शामिल है
1.	सुत्त पिटक	मठवासी अनुशासन के नियम
2.	अभिधम्म पिटक	धार्मिक प्रवचन और बुद्ध की बातें
3.	विनय पिटक	बुद्ध की शिक्षाओं के दार्शनिक विचार

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 82) Solution (c)

बौद्ध धर्म में ग्रंथों के एक निश्चित संग्रह के बजाय कई विहित संग्रह हैं जिन्हें सभी बौद्ध "कैनन" (पवित्र/ ईश्वरी वाक्य) मानते हैं। त्रिपिटक (संस्कृत) शब्द तीन टोकरी या ग्रंथों के समूह को संदर्भित करता है जो आदर्श रूप से एक सिद्धांत का निर्माण करते हैं, जो विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक हैं।

- सुत्त पिटक में बुद्ध के धार्मिक प्रवचनों और कथनों के पाँच खंड (निकाय) हैं।
- विनय पिटक में मठवासी अनुशासन के नियम हैं।
- अभिधम्म पिटक में बुद्ध की शिक्षाओं के दार्शनिक विचार हैं। यह प्रश्न और उत्तर के रूप में लिखा जाता है।

Q. 83) बौद्ध परिषदों (Buddhist Councils) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्रथम बौद्ध संगीति की अध्यक्षता महाकश्यप ने की थी।
2. त्रिपिटक का अंतिम संस्करण दूसरी बौद्ध परिषद में पूरा हुआ।
3. तीसरी बौद्ध परिषद अशोक के संरक्षण में आयोजित की गई थी।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 83) Solution (b)

बौद्ध परिषदों:

- बुद्ध की मृत्यु के तुरंत बाद महाकश्यप की अध्यक्षता में राजग्रह में पहली बौद्ध परिषद आयोजित की गई थी। इसका उद्देश्य बुद्ध की शिक्षाओं की शुद्धता को बनाए रखना था।
- दूसरी बौद्ध परिषद 383 ईसा पूर्व में राजा कालशोक के संरक्षण में बिहार के एक गाँव वैशाली में आयोजित की गई थी। इसकी अध्यक्षता सबकामी ने की।

- तीसरी बौद्ध परिषद अशोक के संरक्षण में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी। इसकी अध्यक्षता मोगलीपुत्त तिस्सा ने की। इस परिषद में त्रिपिटक का अंतिम संस्करण पूरा हुआ।
- कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति वसुमित्र की अध्यक्षता में कनिष्क द्वारा बुलाई गई थी। अश्वगोश ने इस परिषद में भाग लिया। इस परिषद के दौरान बौद्ध धर्म का नया स्कूल महायान बौद्ध धर्म अस्तित्व में आया। बुद्ध द्वारा प्रचारित और अशोक द्वारा प्रचारित बौद्ध धर्म को हीनयान (Hinayana) के नाम से जाना जाता था।

Q. 84) स्थावीरवादिनों और महासंगिकों की बौद्ध व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. तीसरी बौद्ध परिषद बौद्ध व्यवस्था के स्थायी रूप से स्थाविरवादिन और महासंगिकों में अलगाव के साथ समाप्त हुई।
2. महासंगिकों ने सख्त मठवासी जीवन और कठोर अनुशासनात्मक कानूनों का पालन किया जैसा कि मूल रूप से विनय पिटक में निर्धारित है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 84) Solution (d)

दूसरी बौद्ध संगीति वैशाली में 383 ई.पू. वैशाली और पाटलिपुत्र के भिक्षुओं ने कुछ नियमों को स्वीकार किया था जिन्हें कौशाम्बी और अवंती के भिक्षुओं द्वारा बुद्ध की शिक्षाओं के विपरीत घोषित किया गया था।

परिषद दो विरोधी समूहों के बीच समझौता करने में विफल रही। इसलिए परिषद बौद्ध व्यवस्था के स्थायी रूप से स्थाविरवादिन और महासंगिकों में अलगाव के रूप में समाप्त हो गई।

- मूल रूप से विनय पिटक में निर्धारित अनुसार स्थाविरवादिनों ने सख्त मठवासी जीवन और कठोर अनुशासनात्मक कानूनों का पालन किया।
- एक संशोधित अनुशासनात्मक नियम का पालन करने वाले समूह को महासंगिका (Mahasangika) कहा जाता था।

Q. 85) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. थेरवाद सबसे पुराना जीवित बौद्ध स्कूल है।
2. हीनयान बौद्ध धर्म मानव रूप में बुद्ध के प्रतिनिधित्व को प्रतिबंधित करता है।
3. महायान बौद्ध धर्म के ग्रंथ पाली में लिखे गए थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 85) Solution (a)

समय के साथ, बौद्ध धर्म कई शाखाओं में विकसित हुआ। उनमें से कुछ हैं -

- थेरवाद - शाब्दिक रूप से, 'बुजुर्गों की शिक्षा' या 'प्राचीन शिक्षण' सबसे पुराना जीवित बौद्ध स्कूल है। इसकी स्थापना भारत में हुई थी। यह अपेक्षाकृत रूढ़िवादी और प्रारंभिक बौद्ध धर्म के करीब है और अभी भी श्रीलंका, म्यांमार, इंडोनेशिया आदि में प्रचलित है।
- हीनयान - यह केवल प्रतीकों के माध्यम से बुद्ध और उनके जीवन से जुड़ी घटनाओं को दर्शाता है और मानव रूप में बुद्ध के प्रतिनिधित्व को प्रतिबंधित करता है। यह मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता है और आत्म अनुशासन और ध्यान के माध्यम से व्यक्तिगत मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करता है। हीनयान बौद्ध धर्म के ग्रंथ पाली में लिखे गए थे।
- महायान- महायान (शाब्दिक रूप से 'महान वाहन') बौद्ध धर्म की दो मुख्य मौजूदा शाखाओं में से एक है और बौद्ध दर्शन और अभ्यास के वर्गीकरण के लिए एक शब्द है। महायान बौद्ध धर्म भारत में कुषाण काल में उत्पन्न हुआ था। इसका जोर आत्मसंयम के बजाय भक्ति, दान और प्रार्थना पर अधिक है। इसमें बुद्ध को मानव रूप में दर्शाया गया है, जबकि पहले और मूल हीनयान रूप में इसे प्रतिबंधित किया गया है। महायान बौद्ध धर्म के ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए थे।

Q. 86) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कनिष्क के युग में हीनयान बौद्ध धर्म प्रचलन में आया।
2. भागवतवाद के उदय से बौद्ध धर्म की लोकप्रियता में गिरावट आई।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 86) Solution (b)

कनिष्क और बौद्ध धर्म:

- कनिष्क ने अपने शासनकाल के प्रारंभिक भाग में बौद्ध धर्म ग्रहण किया। हालाँकि, उनके सिक्के न केवल बुद्ध बल्कि ग्रीक और हिंदू देवताओं की छवियों को प्रदर्शित करते हैं।

- यह अन्य धर्मों के प्रति कनिष्क की सहनशीलता को दर्शाता है। कनिष्क के युग में महायान बौद्ध धर्म प्रचलन में आया।
- यह बुद्ध द्वारा सिखाए गए और अशोक द्वारा प्रचारित धर्म से कई मायनों में अलग है।
- बुद्ध की पूजा फूल, वस्त्र, इत्र और दीपों से की जाने लगी। इस प्रकार महायान बौद्ध धर्म में छवि पूजा और अनुष्ठान विकसित हुए।

भारत में बौद्ध धर्म के पतन के कारण:

- ब्राह्मणवाद के पुनरुद्धार और भागवतवाद के उदय ने बौद्ध धर्म की लोकप्रियता को कम कर दिया।
- बौद्ध धर्म की भाषा के रूप में जनता की भाषा पाली का उपयोग पहली शताब्दी ईस्वी से छोड़ दिया गया था। बौद्धों ने संस्कृत, कुलीन वर्ग की भाषा को अपनाना शुरू कर दिया था।
- महायान बौद्ध धर्म के जन्म के बाद, मूर्ति पूजा और प्रसाद चढ़ाने की प्रथा के कारण नैतिक मानकों का ह्रास हुआ।
- इसके अलावा, 5वीं और 6वीं शताब्दी में हूणों के हमले और 12वीं शताब्दी में तुर्की आक्रमणकारियों ने मठों को नष्ट कर दिया।

Q. 87) चार्वाक दर्शन के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड निम्नलिखित में से किस तत्व से मिलकर बना है?

1. पृथ्वी (Earth)
2. पानी
3. आग
4. आकाश (Ether)

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) 1, 2, 3 और 4
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1, 3 और 4
d) केवल 1, 2 और 3

Q. 87) Solution (d)

चार्वाक दर्शन:

- बृहस्पति को चार्वाक दर्शनशास्त्र का संस्थापक माना जाता है। इसका उल्लेख वेदों और बृहदारण्यक उपनिषद में मिलता है। इस प्रकार इसे दार्शनिक ज्ञान के विकास में सबसे प्रारंभिक माना जाता है।
- यह मानता है कि ज्ञान चार तत्वों के संयोजन का उत्पाद है जो मृत्यु के बाद कोई निशान नहीं छोड़ता है।
- चार्वाक दर्शन भौतिकवादी दर्शन से संबंधित है। इसे लोकायत दर्शन के रूप में भी जाना जाता है - जनता का दर्शन।

- चार्वाक के अनुसार कोई दूसरा संसार नहीं है। इसलिए, मृत्यु मनुष्य का अंत है और जीवन में आनंद अंतिम वस्तु है।
- चार्वाक इस भौतिक संसार के अलावा किसी अन्य अस्तित्व को नहीं पहचानते हैं। चूंकि भगवान, आत्मा और स्वर्ग को नहीं देखा जा सकता है, इसलिए वे चार्वाक द्वारा पहचाने नहीं जाते हैं।
- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पांच तत्वों में से, चार्वाक आकाश को नहीं पहचानते हैं क्योंकि यह धारणा के माध्यम से नहीं जाना जाता है। उनके अनुसार पूरा ब्रह्मांड इस प्रकार चार तत्वों से बना है।

Q. 88) निम्नलिखित में से कौन जैन धर्म के त्रिरत्न हैं?

1. सम्यक विश्वास
2. सम्यक वाक
3. सम्यक ज्ञान
4. सम्यक आचरण

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) 1, 2 और 3

b) 2, 3 और 4

c) 1, 3 और 4

d) 1, 2 और 4

Q.88) Solution (c)

जैन धर्म के तीन सिद्धांत, जिन्हें त्रिरत्न (तीन रत्न) भी कहा जाता है, हैं:

- सम्यक विश्वास
- सम्यक ज्ञान
- सम्यक आचरण

सम्यक विश्वास महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास है। सम्यक ज्ञान इस सिद्धांत की स्वीकृति है कि कोई ईश्वर नहीं है और यह कि दुनिया एक निर्माता के बिना मौजूद है और सभी वस्तुओं में एक आत्मा है। सम्यक आचरण पांच महान प्रतिज्ञाओं के पालन को दर्शाता है:

- जीवन को चोट नहीं पहुंचाना
- झूठ नहीं बोलना
- चोरी नहीं करना
- संपत्ति अर्जित नहीं करना

- अनैतिक जीवन व्यतीत नहीं करना

Q. 89) बुद्ध के जीवन की महान घटनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. महाभिनिष्क्रमण (Mahabhinishkraman) एक तपस्वी के रूप में जीवन जीने के लिए गौतम बुद्ध के अपने महल से प्रस्थान के लिए पारंपरिक शब्द है।
2. महाभिनिष्क्रमण को चित्रित करने के लिए प्रयुक्त प्रतीक, चक्र (Wheel) है।
3. बुद्ध के जन्म को कमल और घोड़े के प्रतीक द्वारा दर्शाया गया है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q. 89) Solution (a)

महाभिनिष्क्रमण या महान त्याग या महान प्रस्थान एक तपस्वी के रूप में जीवन जीने के लिए कपिलवस्तु में अपने महल से गौतम बुद्ध के प्रस्थान के लिए पारंपरिक शब्द है। इसे महान त्याग कहा जाता है क्योंकि इसे एक महान बलिदान माना जाता है।

कला और साहित्य में, महान त्याग को अश्व द्वारा दर्शाया गया है।

बुद्ध का जन्म कमल और बैल के प्रतीक द्वारा दर्शाया गया है।

Q.90) "अनत्ता" (Anatta) का सिद्धांत संबंधित है:

a) बुद्ध धर्म

b) जैन धर्म

c) चार्वाक

d) ब्राह्मणवाद

Q. 90) Solution (a)

अनत्ता का तात्पर्य ऐसा सिद्धान्त जो कहता है कि जीवित प्राणियों में अविनाशी, शाश्वत आत्मा नहीं होती।, जिसे बौद्ध धर्म द्वारा प्रचारित किया जाता है।

अधिकांश धर्म आत्मा के अस्तित्व की पूर्व-कल्पना करते हैं। बौद्ध धर्म एक आत्मा या आत्मा के अस्तित्व को नकारने में अद्वितीय है।

अनत्ता की अवधारणा पांच समुच्चय और आश्रित उत्पत्ति के सिद्धांत के साथ निकटता से जुड़ी हुई है।

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति ऐसे समय में हुई जब भारत के बौद्धिक परिवेश में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ थीं, अर्थात् शक्तिशाली और लोकप्रिय अध्यात्मवादी सोच और भौतिकवादी सोच। पहले जिन्होंने वेदों के अधिकार को स्वीकार किया जबकि उत्तरार्ध ने इसे अस्वीकार कर दिया। लगभग सभी धर्मों ने आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया, जबकि भौतिकवाद ने आत्मा के अस्तित्व को दृढ़ता से खारिज कर दिया।

बौद्ध धर्म ने किसी भी प्रचलित प्रवृत्ति का अनुसरण नहीं किया बल्कि मध्य मार्ग का अनुसरण किया। आत्मा के अस्तित्व को नकारने में बौद्ध धर्म एक अपवाद था, लेकिन साथ ही इसने भौतिकवादी दर्शन को भी खारिज कर दिया। किसी भी धर्म में अहंकार या स्वयं का विचार आत्मरक्षा और आत्म-संरक्षण के उद्देश्य से है।

Q. 91) प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में, "थेरिगाथा" (Therigatha) शब्द का क्या अर्थ है?

a) यह बौद्धों का एक समारोह है जिसके दौरान भिक्षु अपने मठ प्रवास के दौरान अपने द्वारा किए गए अपराधों को स्वीकार करते हैं।

b) यह बौद्ध साहित्य का एक हिस्सा है जिसे बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा संकलित किया गया था।

c) यह जैन समारोह है जिसमें उन कर्मों को दूर करने के लिए प्रार्थनाओं की एक श्रृंखला शामिल है जो आत्मा की आध्यात्मिक उत्थान शक्ति में बाधा डालते हैं।

d) यह एक जैन अनुष्ठान है जिसमें मंदिरों और चिह्नों को सजाया जाता है और पवित्र ग्रंथों का पाठ किया जाता है।

Q. 91) Solution (b)

थेरिगाथा बौद्ध साहित्य का एक हिस्सा है जिसे बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा संकलित किया गया था।

थेरिगाथा (शाब्दिक रूप से, 'बूढ़ी महिलाओं के छंद') बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा 300 वर्षों की अवधि में लिखी गई 73 कविताओं का एक संग्रह है। 'थेरी' बुजुर्ग महिलाओं को संदर्भित करता है, हालांकि सुसान मुर्कोट का तर्क है कि इसमें बुद्धि और चरित्र की विशिष्ट स्त्रियों का उल्लेख है, न कि केवल बुज़ुर्ग भिक्षुणियां।

ऐसा कहा जाता है कि पहली शताब्दी ईसा पूर्व में पाली में संकलित होने से पहले कुछ सौ वर्षों के लिए कविताओं को मौखिक रूप से मगधी में आगे बढ़ाया गया था।

कविताएँ कहानियों, स्थितियों और भावनाओं की प्रस्तुतियाँ हैं जो उल्लेखनीय रूप से विद्यमान हैं। अवसाद, हानि, विवाह, मातृत्व, विश्वासघात, रजोनिवृत्ति और मृत्यु - ये सभी दुख के कारणों के रूप में हैं, जिन्हें बाद में बौद्ध शिक्षाओं के माध्यम से दूर किया जाता है।

छोटे आकार के बावजूद, थेरिगाथा प्रारंभिक बौद्ध धर्म के अध्ययन के साथ-साथ महिला साहित्य के सबसे पुराने ज्ञात संग्रह में एक बहुत ही महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

थेरिगाथा में इस दृष्टिकोण की पुष्टि करने वाले मार्ग शामिल हैं कि महिलाएं आध्यात्मिक प्राप्ति के मामले में पुरुषों के बराबर हैं और साथ ही छंद जो प्राचीन दक्षिण एशियाई समाज में महिलाओं के लिए विशेष रुचि के मुद्दों को संबोधित करते हैं।

Q. 92) माध्यमिक मार्ग के विचारधारा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह हीनयान बौद्ध दर्शन के प्रमुख मार्ग में से एक है।

2. इसकी स्थापना नागार्जुन ने की थी।
3. इसने सर्वस्तिवाद मार्ग के यथार्थवाद और योगाचार मार्ग के आदर्शवाद के बीच एक मध्य स्थिति की मांग की।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 3
d) केवल 2 और 3

Q. 92) Solution (d)

माध्यमिक मार्ग - यह महायान बौद्ध दर्शन के प्रमुख विद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना आचार्य नागार्जुन ने की थी जो सातवाहन साम्राज्य के एक महत्वपूर्ण बौद्ध शिक्षक और दार्शनिक थे। अपने शिष्य आर्यदेव के साथ, उन्हें महायान बौद्ध धर्म के माध्यमिक विद्यालय की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।

माध्यमिक मार्ग सर्वस्तिवाद ("सिद्धांत जो सब वास्तविक है") मार्ग के यथार्थवाद और योगचार ("माइंड ओनली") मार्ग के आदर्शवाद के बीच एक मध्य स्थिति की तलाश से निकला है।

Q. 93) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जैन धर्म में सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य के सिद्धांतों की वकालत पार्श्वनाथ ने की थी।
2. आगम महावीर की शिक्षाओं वाले ग्रंथ थे।
3. जैन भिक्षुओं और भिक्षुणियों को गैर-अधिग्रहण की अपनी प्रतिज्ञा के भाग के रूप में धार्मिक पुस्तकें रखने की अनुमति नहीं थी।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 3
d) केवल 2 और 3

Q. 93) Solution (d)

महावीर ने पार्श्वनाथ द्वारा निर्धारित अधिकांश धार्मिक सिद्धांतों को स्वीकार किया। हालाँकि, उन्होंने उनमें कुछ बदलाव और परिवर्धन किए।

पार्श्वनाथ ने निम्नलिखित चार सिद्धांतों की वकालत की:

- सत्य,
- अहिंसा,
- अपरिग्रह, और
- कुछ भी प्राप्त नहीं करना जो स्वेच्छा से नहीं दिया गया था

इसमें महावीर ने ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य) जोड़ा।

महावीर का मानना था कि आत्मा (जीव) और पदार्थ (अजीव) दो बुनियादी मौजूदा तत्व हैं। निरंतर प्रयासों से आत्मा को बंधन से मुक्त किया जा सकता है। यह आत्मा की अंतिम मुक्ति (मोक्ष) है। मुक्त आत्मा तब 'शुद्ध आत्मा' बन जाती है।

जैन धर्म के धार्मिक ग्रंथ:

- आगम- महावीर की शिक्षाओं वाले ग्रंथों को आगम कहा जाता है, और श्वेतांबर जैन धर्म के विहित साहित्य - शास्त्र हैं।
- महावीर के शिष्यों ने उनके शब्दों को ग्रंथों या सूत्रों में संकलित किया और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए याद किया।
- ग्रंथों को याद किया जाना था क्योंकि जैन भिक्षुओं और भिक्षुणियों को गैर-अधिग्रहण की प्रतिज्ञा के हिस्से के रूप में धार्मिक पुस्तकें रखने की अनुमति नहीं थी, न ही उन्हें लिखने की अनुमति थी।
- जैन धर्मशास्त्र महावीर के बाद विशेष रूप से विद्वान भिक्षुओं की शिक्षाओं के माध्यम से विकसित हुआ - इन शिक्षाओं को भी याद किया जाना था - और इसलिए भिक्षुओं को जो राशि याद रखनी थी वह लगातार बढ़ती गई।

Q. 94) जैन आदेश के छठे थेर, भद्रबाहु, किसके समकालीन थे:

a) चंद्रगुप्त मौर्य

b) अशोक

c) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य

d) हर्षवर्धन

Q. 94) Solution (a)

महावीर की ग्यारह शिष्यों को गणधर या संप्रदाय का मुखिया कहा जाता था। आर्य सुधार ही एकमात्र गणधर थे जो महावीर से बच गए और जैन आदेश के पहले 'थेरा' (मुख्य उपदेशक) बने। महावीर की मृत्यु के 20 साल बाद उनकी मृत्यु हो गई।

स्वर्गीय नंद राजा के दिनों में जैन आदेश दो थेरों द्वारा प्रशासित किया गया था:

a) संभुतविजय, और

बी) भद्रबाहु।

छठे थेर भद्रबाहु थे, जो मौर्य राजा चंद्रगुप्त मौर्य के समकालीन थे। वे अविभाजित जैन संघ के अंतिम आचार्य थे।

चंद्रगुप्त मौर्य जैन धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने भद्रबाहु के साथ दक्षिण में प्रवास किया और जैन धर्म का प्रसार किया।

Q. 95) जैन परिषदों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. महावीर की पवित्र शिक्षाओं को प्रथम जैन परिषद में बारह अंगो (twelve angas) में विभाजित किया गया था।
2. दूसरी जैन परिषद की अध्यक्षता देवर्षि क्षमासेमन ने की थी।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 95) Solution (c)

चंद्रगुप्त मौर्य के शासन के अंत में दक्षिण बिहार में भयानक अकाल पड़ा। यह करीब 12 साल तक चला। भद्रबाहु और उनके शिष्य कर्नाटक के श्रवणबेलगोला चले गए। अन्य जैन अपने नेता के रूप में स्थूलभद्र के साथ मगध में रहे।

प्रथम परिषद - प्रथम जैन परिषद 300 ई.पू. में स्थूलभद्र की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी। इसके परिणामस्वरूप खोए हुए 14 पूर्वाओं की जगह 12 अंगों का संकलन हुआ।

दूसरी परिषद - दूसरी जैन परिषद 521 ईस्वी में देवर्धि क्षमासेमन की अध्यक्षता में वल्लभी में आयोजित की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप 12 अंग और 12 उपांगों का अंतिम संकलन हुआ।

Q. 96) निम्नलिखित में से कौन महावीर और गौतम बुद्ध के समकालीन होने के साथ-साथ आजिविका संप्रदाय के प्रमुख प्रस्तावक थे?

a) कस्सप

b) मक्खली गोसाल

c) पाकुध कच्चायन

d) आनंद

Q. 96) Solution (b)

आजिविका को शूद्र संन्यासी कहा गया है। कहा जाता है कि इस संप्रदाय की स्थापना नंदा वच्चा ने की थी, जिसके बाद किसा सांकिच्छा ने इसका अनुसरण किया। तीसरे धार्मिक प्रमुख मक्खली गोसाल थे, जिन्होंने इस संप्रदाय को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने 'कर्म' के सिद्धांत का खंडन किया और तर्क दिया कि मनुष्य प्रकृति के नियमों के अधीन है। आजीविकों का मानना था कि किसी व्यक्ति के विचार और कर्म पूर्व निर्धारित (जन्म से पहले तय) होते हैं। वे यह नहीं मानते थे कि मनुष्य के दुख या उनके उद्धार का कोई विशेष कारण है। वे मानव प्रयास में विश्वास नहीं करते थे और मानते थे कि सभी प्राणी भाग्य के सामने असहाय हैं। गोसाल ने कहा कि सभी प्राणियों को दुख का

सामना करना पड़ता है और यह निश्चित चक्रों के पूरा होने के बाद समाप्त हो जाएगा। कोई भी मानवीय प्रयास अवधि को कम या लंबा नहीं करेगा।

गोसाल को प्राचीन ग्रंथों में महावीर, जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर और गौतम बुद्ध के समकालीन के रूप में वर्णित किया गया है।

Q. 97) श्वेतांबर और दिगंबर के बीच अंतर के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. श्वेतांबर का मत है कि पुरुष के रूप में पुनर्जन्म के बिना महिलाएं मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती हैं।
2. दिगंबर का मत है कि पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वाले संत को भोजन की आवश्यकता नहीं होती है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 97) Solution (b)

जैन आदेश दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित था:

- दिगंबर संप्रदाय- दिगंबर (नग्न) परंपरा कपड़े नहीं पहनती है। दिगंबर संप्रदाय की महिला मठवासी बिना सिले सादे सफेद साड़ी पहनती हैं और उन्हें आर्यिका (Aryikas) कहा जाता है। इनका नेतृत्व आचार्य भद्रबाहु ने किया था।
- श्वेतांबर संप्रदाय- श्वेतांबर (अर्थात् सफेद-पहने) मठवासी, दूसरी ओर, निर्बाध सफेद कपड़े पहनते हैं। इनका नेतृत्व स्थूलभद्र ने किया था

दिगंबर का मानना है कि एक महिला में अडिग शरीर की कमी होती है और मोक्ष यानी मुक्ति प्राप्त करने के लिए कठोर इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है: इसलिए ऐसी प्राप्ति संभव होने से पहले उसे एक पुरुष के रूप में पुनर्जन्म होना चाहिए। लेकिन श्वेतांबर इसके विपरीत विचार रखते हैं और मानते हैं कि महिलाएं वर्तमान जीवन काल में पुरुषों के समान आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए सक्षम हैं।

दिगंबर का मत है कि पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वाले संत को भोजन की आवश्यकता नहीं होती है। श्वेतांबर इस मत को स्वीकार नहीं करते।

दिगंबर संप्रदाय का मानना है कि इस अकाल के दौरान सभी आगम नष्ट हो गए थे। दक्षिण के दिगंबर जैन के धार्मिक ग्रंथ महाराष्ट्री और सौरसेनी प्राकृत में लिखे गए थे, जबकि श्वेतांबर संप्रदाय का मानना है कि इनमें से अधिकांश ग्रंथ बच गए हैं। श्वेतांबर जैन पवित्र ग्रंथ अर्ध-मगधी प्राकृत में लिखा गया था।

तीर्थंकरों की दिगंबर मूर्ति की आंखें नीची हैं। दिगंबर की छवियां सादी हैं (और हमेशा नग्न आकृतियों के रूप में उत्कीर्ण हैं) जबकि श्वेतांबर की मूर्ति में प्रमुख घूरने वाली आंखें हैं। श्वेतांबर की छवियों को बड़े पैमाने पर सजाया गया है।

Q. 98) निम्नलिखित में से कौन श्वेतांबर संप्रदाय के उप-संप्रदाय हैं?

1. बिसपंथ (Bisapantha)
2. तेरापंथ (Terapantha)
3. स्थानकवासी (Sthanakvasi)

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 98) Solution (c)

श्वेतांबर संप्रदाय को तीन मुख्य उप-संप्रदायों में विभाजित किया गया है:

1. मूर्तिपूजक- वे मूर्तियों के पूर्ण उपासक हैं। वे अपनी मूर्तियों को फूल, फल, केसर आदि चढ़ाते हैं और हमेशा उन्हें समृद्ध कपड़े और गहनों से सजाते हैं।
2. स्थानकवासी- उन्होंने स्थानकवासी (एक सुधारक) का नाम लिया, जिसका अर्थ है कि जो मंदिरों में अपनी धार्मिक गतिविधियाँ नहीं करते हैं, लेकिन अपने धार्मिक कर्तव्यों को स्थानक के रूप में जाने जाते हैं जो प्रार्थना-हॉल की तरह हैं। स्थानकवासी मूर्ति-पूजा में विश्वास नहीं करते हैं।
3. तेरापंथी- तेरापंथी उप-संप्रदाय की स्थापना स्वामी भिक्कनजी महाराज ने की थी। उन्होंने 13 धार्मिक सिद्धांतों पर जोर दिया, अर्थात्, (i) पांच महाव्रत (महान प्रतिज्ञा), (ii) पांच समितियां (नियम) और (iii) तीन गुप्ती (नियंत्रण या संयम)।

दिगंबर संप्रदाय, हाल की शताब्दियों में, निम्नलिखित उप-संप्रदायों में विभाजित किया गया है::

1. बिसपंथ- बिसपंथ के अनुयायी भट्टारकों (धर्म-गुरु) यानी धार्मिक अधिकारियों का समर्थन करते हैं जो जैन मठों (धार्मिक मठों) के प्रमुख हैं। बिसपंथ अपने मंदिरों में तीर्थंकरों की मूर्तियों और क्षेत्रपाल, पद्मावती और अन्य देवताओं की मूर्तियों की भी पूजा करते हैं।
2. तेरापंथ- तेरापंथियों ने तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित कीं, न कि क्षत्रपाल, पद्मावती और अन्य देवताओं की।
3. तरानापंथ या समायपंथ- इसके संस्थापक तराना-स्वामी या तराना-तरानास्वामी (1448-1515 ई.) हैं

Q. 99) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. महावीर सर्वोच्च निर्माता (supreme creator) में विश्वास नहीं करते थे।
2. बौद्ध और जैन धर्म में 'निर्वाण' की अवधारणा समान है।
3. महावीर के सिद्धांतों के मूल ग्रंथों को 'पूर्वा' (Purvas) के रूप में जाना जाता है

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q.99) Solution (c)

महावीर ने 'निर्वाण' या सर्वोच्च आध्यात्मिक अवस्था की प्राप्ति के लिए गंभीर तपस्या और अत्यधिक तपस्या के जीवन की वकालत की। उनका मानना था कि दुनिया किसी सर्वोच्च निर्माता द्वारा नहीं बनाई गई है। संसार क्षय और विकास के शाश्वत नियम के अनुसार कार्य करता है।

उन्होंने सोचा कि सभी वस्तुओं, चेतन और निर्जीव में एक आत्मा होती है। उनका मानना था कि वे दर्द या चोट के प्रभाव को महसूस करते हैं। उन्होंने वेदों की सत्ता को खारिज कर दिया और वैदिक अनुष्ठानों और ब्राह्मणों की सर्वोच्चता पर आपत्ति जताई।

जैन धर्म में, मोक्ष (निर्वाण) दुखों से मुक्ति है और मृत्यु के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है, जबकि बौद्ध धर्म के अनुसार, एक व्यक्ति मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त करता है जब वह सभी इच्छाओं को समाप्त कर देता है और दुनिया में रहते हुए इसे प्राप्त कर सकता है।

महावीर की शिक्षाओं को पहले पवित्र ग्रंथों के रूप में संरक्षित किया गया था जिन्हें 'पूर्वा' कहा जाता है। प्राचीन या पूर्व ज्ञान के रूप में अनुवादित चौदह पूर्वज, जैन धर्मग्रंथों का एक बड़ा निकाय है जिसका प्रचार जैन धर्म के सभी तीर्थंकरों द्वारा किया गया था, जिसमें इस ब्रह्मांड में उपलब्ध ज्ञान के संपूर्ण प्रसार शामिल थे।

दोनों जैन परंपराएं, श्वेतांबर और दिगंबर मानते हैं कि सभी चौदह पूर्वा खो गए हैं।

Q.100) निम्नलिखित में से कौन से कारण भारत में जैन धर्म के पतन के लिए उत्तरदायी हैं?

1. शाही संरक्षण का अभाव
2. अस्पष्ट दर्शन
3. जैन धर्म में कठोर तप

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 100) Solution (d)

भारत में जैन धर्म के पतन के लिए जिम्मेदार कुछ प्रमुख कारण हैं:

शाही संरक्षण का अभाव: बिंबिसार, अजातशत्रु, उदयिन और खारवेल द्वारा जैन धर्म के शाही संरक्षण की प्रारंभिक गति बाद के समय के राजाओं और राजकुमारों द्वारा नहीं प्रदान की गई थी जिसके कारण इसका पतन हुआ।

अस्पष्ट दर्शन: अधिकांश जैन दर्शन जनता के लिए समझ से बाहर थे। जीव, अजीव, पुद्गल, स्यादवाद आदि की अवधारणाओं को लोग ठीक से समझ नहीं पाए। बहुत से लोग इस विचार को स्वीकार नहीं कर सकते थे कि पत्थर, पानी, पेड़ या पृथ्वी की अपनी आत्मा होती है। इस प्रकार, जैन धर्म के लिए लोकप्रिय आस्था में धीरे-धीरे गिरावट आई। इसने इसके पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

जैन धर्म में कठोर तप: बौद्ध धर्म के 'मध्य मार्ग' के विपरीत, जैन धर्म घोर तपस्या, ध्यान, उपवास और संयम आदि का समर्थक था। ये सभी सहन करने के लिए बहुत कठिन थे। इससे लोगों का जल्द ही मोहभंग हो गया। समय के साथ, जैन धर्म, जिसे एक समय लोकप्रिय था, आम जन से अलग हो गया।

Q. 101) मंदिर वास्तुकला की नायक शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मंदिर वास्तुकला की इस शैली की मुख्य विशेषता उच्च और बहुमंजिला गोपुरम है।
2. मंदिर वास्तुकला की नायक शैली का सबसे बड़ा उदाहरण मदुरै में मीनाक्षी मंदिर है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 101) Solution (c)

1565 में विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिण भारत में नायक राजवंशों का उदय हुआ, जब नायक सैन्य शासकों ने स्वतंत्रता की घोषणा की; फिर उन्होंने 16वीं से 18वीं शताब्दी तक शासन किया।

नायक शासन अपने प्रशासनिक सुधारों, अपनी कलात्मक और सांस्कृतिक उपलब्धियों और मंदिर वास्तुकला की एक अनूठी शैली के निर्माण के लिए विख्यात था। उन्होंने उन मंदिरों का भी जीर्णोद्धार किया जिन्हें दिल्ली के सुल्तानों ने विध्वंस कर दिया था।

मदुरै और तंजौर के नायकों द्वारा अग्रणी नायक मंदिर वास्तुकला की कई विशिष्ट विशेषताएं हैं। मुख्य विशेषताओं में से हैं:

- लंबे गलियारे;
- नक्काशीदार सौ-खंभे और हजार-स्तंभों वाले मंडप (बाहरी मंदिर हॉल या बरामदे); तथा
- ऊंचे, बहु-मंजिला गोपुरम (मंदिर के प्रवेश द्वार को सुशोभित करने वाले टॉवर), चमकीले रंग के पत्थर और जानवरों, देवताओं और राक्षसों की प्लास्टर की मूर्तियों से समृद्ध रूप से सजाए गए हैं।

नायक शैली का सबसे बड़ा उदाहरण मदुरै में मीनाक्षी अम्मन मंदिर (Meenakshi Amman Temple) है जिसे 1623 और 1655 के बीच बनाया गया था। मंदिर में 10 अलंकृत गोपुरम और 985 स्तंभों वाला एक हॉल है, जिनमें से प्रत्येक द्रविड़ शैली में एक मूर्ति है।

मंदिर परिसर में एक पवित्र मंदिर तालाब, पोर्थमराय कुलम या गोल्डन लोटस वाला तालाब भी शामिल है। टैंक के पश्चिम की ओर एक द्वारमंडप में 17वीं और 18वीं शताब्दी के नायक चित्रों के अवशेष हैं।

Q. 102) एलोरा की गुफाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं:

1. यहाँ केवल बौद्ध गुफाएं हैं।
2. इनका निर्माण चोल वंश के शासनकाल में हुआ था।
3. इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया है।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 102) Solution (c)

एलोरा की गुफाएं:

- यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।
- इनमें 17 हिंदू (गुफाएं 13-29), 12 बौद्ध (गुफाएं 1-12) और 5 जैन (गुफाएं 30-34) गुफाएं हैं।
- इसमें दुनिया का सबसे बड़ा एकल अखंड रॉक उत्खनन, कैलाश मंदिर, भगवान शिव को समर्पित एक रथ के आकार का स्मारक है।
- एलोरा के सभी स्मारक राष्ट्रकूट राजवंश के दौरान बनाए गए थे, जिसने हिंदू और बौद्ध गुफाओं का हिस्सा बनाया था, और यादव वंश, जिसने कई जैन गुफाओं का निर्माण किया था। स्मारकों के निर्माण के लिए धन कुलीनों, व्यापारियों और क्षेत्र के धनी लोगों द्वारा प्रदान किया गया था।
- हालाँकि गुफाएँ मंदिरों के रूप में काम करती थीं और तीर्थयात्रियों के लिए विश्राम स्थल के रूप में, एक प्राचीन दक्षिण एशियाई व्यापार मार्ग पर स्थल के स्थान ने भी इसे दक्कन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र बना दिया।

Q. 103) विभिन्न प्रकार की मंदिर स्थापत्य कला के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए::

1. नागर शैली का मंदिर शिखर मंदिर का सबसे प्रमुख तत्व बना हुआ है और प्रवेश द्वार आमतौर पर मामूली या अनुपस्थित भी है।

2. द्रविड़ शैली के मंदिर में गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर गंगा और यमुना नदियों को मूर्त रूप में दर्शाया गया है।

3. देवगढ़ में विष्णु मंदिर मंदिर वास्तुकला की नागर शैली का एक उदाहरण है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 103) Solution (b)

वास्तुकला की नागर शैली:

- यह पूरे देश में फैला हुआ है, लेकिन मुख्य रूप से यह उत्तरी भारत से जुड़ा हुआ है।
- 5 वीं शताब्दी के आसपास विकसित, नागर शैली की विशेषता एक छत्ते के आकार के टॉवर की विशेषता है, जिसे क्रॉसरूपी आधार पर शिखर कहा जाता है, उत्तरी शब्दावली में वास्तु तत्वों की परत दर परत बनी हुई है।
- मंदिर वास्तुकला की नागर शैली में शिखर मंदिर का सबसे प्रमुख तत्व बना हुआ है और प्रवेश द्वार आमतौर पर मामूली या अनुपस्थित भी होता है।
- नागर शैली में, गर्भगृह या गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर गंगा और यमुना नदियों को मूर्त रूप में चित्रित किया गया है।
- मंदिर वास्तुकला की उत्तर भारतीय शैली (नागरा शैली) के कुछ बेहतरीन उदाहरण खजुराहो समूह के मंदिर, देवगढ़ में विष्णु मंदिर, सूर्य मंदिर, कोणार्क, मोढेरा, गुजरात में सूर्य मंदिर आदि हैं।

वास्तुकला की द्रविड़ शैली:

- यह मुख्य रूप से दक्षिणी भारत की मंदिर निर्माण शैली से संबंधित है।
- द्रविड़ वास्तुकला, वास्तुकला की एक शैली थी जो हजारों साल पहले भारतीय उपमहाद्वीप या दक्षिण भारत के दक्षिणी भाग में उभरी थी।
- यह पल्लवों के दौरान शुरू हुआ और चोलों के दौरान अपने शिखर पर पहुंच गया।
- मुख्य भाग, मंदिर को ही विमान कहा जाता है। यह योजना में लगभग हमेशा 'वर्ग' होता है और एक या एक से अधिक कहानियों की पिरामिडनुमा छत से घिरा होता है।
- बरामदे या मंडपम, जो केंद्रीय मंदिर या गर्भगृह की ओर जाने वाले दरवाजे से पहले होते हैं।
- गेट-पिरामिड, गोपुरम, जो कि अधिक उल्लेखनीय मंदिरों को घेरने वाले चतुर्भुज बाड़ों में प्रमुख विशेषताएं हैं।
- पिलर हॉल (चौल्ट्री या चावड़ी) का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है और ये इन मंदिरों की अचल सहायक हैं।

- मुकुट वाले भाग को उत्तरी मंदिरों के विपरीत शिखर (shikhara) कहा जाता है जिसमें संपूर्ण ऊर्ध्वाधर संरचना को शिखर कहा जाता है।
- एक बड़ा जलाशय, या एक मंदिर का तालाब की उपस्थिति सामान्य बात है।
- द्रविड़ शैली में 'द्वारपाल' (Dwarpala) प्रवेश द्वार पर हैं।
- द्रविड़ शैली (दक्षिण भारतीय शैली) के बेहतरीन उदाहरण तंजौर, मदुरै, महाबलीपुरम और कांचीपुरम के मंदिर हैं।

Q. 104) निम्नलिखित में से कौन-सी गांधार कला विद्यालय की विशेषता है/हैं?

1. भौतिक विशेषताओं पर सूक्ष्म ध्यान देकर मानव शरीर को वास्तविक रूप में ढालना।
2. बुद्ध के चित्र उनके चेहरे पर आध्यात्मिक भावना को प्रदर्शित करते हैं।
3. मुख्य विषय हीनयान बौद्ध धर्म था।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 104) Solution (a)

गांधार कला

गांधार कला विद्यालय का घर उत्तर पश्चिमी भारत में पेशावर और उसके आसपास का क्षेत्र है। सबसे अच्छी गांधार मूर्तिकला पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान बनाई गई थी। इसकी उत्पत्ति भारत-यूनानी शासकों के शासनकाल के दौरान हुई थी, लेकिन कला के इस स्कूल के वास्तविक संरक्षक शक और कुषाण थे, विशेष रूप से कनिष्क। गांधार कला भारतीय और ग्रीको-रोमन तत्वों का मिश्रण थी। गांधार मूर्तिकला के नमूने तक्षशिला, पेशावर और उत्तर पश्चिम भारत के कई स्थानों में पाए गए हैं। गांधार संप्रदाय ने विभिन्न आकारों, आकृतियों और मुद्राओं में बुद्ध की मूर्तियां बनाईं। उभारे बुद्ध के जन्म, उनके त्याग और उनके उपदेश को दर्शाती हैं। गांधार कला की मुख्य विशेषताएं हैं:

- मांसपेशियों, मूंछों और घुँघराले बालों जैसी शारीरिक विशेषताओं पर सूक्ष्म ध्यान देकर मानव शरीर को यथार्थवादी तरीके से ढालना।
- बड़ी और बोल्ड फ़ोल्ड लाइनों के साथ मोटे वस्त्रविन्यास।
- समृद्ध नक्काशी, विस्तृत अलंकरण और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ।
- मुख्य विषय बौद्ध धर्म का नया रूप था - महायानवाद और बुद्ध की छवि का विकास।

मथुरा कला स्कूल:

आधुनिक उत्तर प्रदेश के मथुरा में विकसित कला के स्कूल को मथुरा कला कहा जाता है। यह पहली शताब्दी ईस्वी में फला-फूला। अपने प्रारंभिक चरण में, मथुरा कला स्कूल स्वदेशी तर्ज पर विकसित हुआ। बुद्ध के चित्र उनके चेहरे पर आध्यात्मिक भावना को प्रदर्शित करते हैं जो गांधार स्कूल में काफी हद तक अनुपस्थित था।

मथुरा स्कूल ने अपनी पत्नी पार्वती और लक्ष्मी के साथ शिव और विष्णु की छवियों को भी उकेरा। मथुरा स्कूल की यक्षिणियों और अप्सराओं की महिला आकृतियों को खूबसूरती से उकेरा गया था।

Q.105) धामेख स्तूप (Dhamek Stupa) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

1. यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।
2. यह सारनाथ में स्थित है।
3. यह उस स्थान को चिह्नित करता है जहां बुद्ध ने अपने पहले पांच शिष्यों को पहला उपदेश दिया था।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 105) Solution (d)

धमेक स्तूप:

- यह उत्तर प्रदेश राज्य में वाराणसी से 13 किमी दूर सारनाथ में स्थित है।
- मौर्य राजवंश के राजा अशोक के शासनकाल के दौरान मूल रूप से 249 ईसा पूर्व में निर्मित, यह विशाल और प्रमुख संरचना समय के साथ कई विस्तार और परिवर्धन के माध्यम से चली गई है।
- यह लाल ईंटों और पत्थर से बना एक बेलनाकार आकार का स्तूप है।
- इस पवित्र स्थान का महत्व यह है कि यह उस स्थान को चिह्नित करता है जहां बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद भगवान बुद्ध ने अपने पांच शिष्यों को पहला उपदेश दिया था।
- यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल नहीं है।

Q. 106) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पल्लवों ने चट्टान से मंदिरों की खुदाई की कला की शुरुआत की।
2. कांची में कैलाशनाथ मंदिर पल्लव कला की सबसे बड़ा स्थापत्य कला है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 106) Solution (c)

पल्लव वास्तुकला:

- पल्लवों ने चट्टान से मंदिरों की खुदाई की कला की शुरुआत की। वास्तव में, मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली की शुरुआत पल्लव शासन से हुई थी।
- यह एक क्रमिक विकास था जो गुफा मंदिरों से शुरू होकर अखंड रथों तक और संरचनात्मक मंदिरों में परिणत हुआ।

पल्लवों के अधीन मंदिर वास्तुकला का विकास चार चरणों में देखा जा सकता है:

- महेंद्रवर्मन प्रथम ने चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों की शुरुआत की। पल्लव मंदिरों की यह शैली मंडागपट्टू, महेंद्रवादी, मामंदूर, दलवनूर, तिरुचिरापल्ली, वल्लम, सियामंगलम और तिरुकलुक्कुनराम जैसे स्थानों पर देखी जाती है।
- पल्लव वास्तुकला के दूसरे चरण का प्रतिनिधित्व ममल्लापुरम में पाए गए अखंड रथों और मंडपों द्वारा किया जाता है।
- नरसिंहवर्मन प्रथम ने इन अद्भुत स्थापत्य स्मारकों का श्रेय लिया। पांच रथ, जिन्हें लोकप्रिय रूप से पंचपांड्व रथ कहा जाता है, मंदिर वास्तुकला की पांच अलग-अलग शैलियों को दर्शाता है। मंडपों की दीवारों पर सुंदर मूर्तियां हैं।
- इन मंडपों में सबसे लोकप्रिय हैं महिषासुरमर्दिनी मंडप, तिरुमूर्ति मंडपम और वराह मदपम।
- अगले चरण में, राजसिम्हा ने संरचनात्मक मंदिरों की शुरुआत की। इन मंदिरों का निर्माण नरम रेत की चट्टानों का उपयोग करके किया गया था। कांची में कैलासनाथ मंदिर और ममल्लापुरम में शोर मंदिर पल्लवों के प्रारंभिक संरचनात्मक मंदिरों के बेहतरीन उदाहरण हैं। कांची में कैलासनाथ मंदिर पल्लव कला का सबसे बड़ा स्थापत्य कला है।
- पल्लव कला के अंतिम चरण को बाद के पल्लवों द्वारा निर्मित संरचनात्मक मंदिरों द्वारा भी दर्शाया गया है। कांचीपुरम में वैकुंदपेरुमल मंदिर, मुक्तिश्वर मंदिर और मातागनेश्वर मंदिर वास्तुकला के इस चरण से संबंधित हैं।

Q. 107) नटराज की कांसे की मूर्ति किस राजवंश की स्थापत्य कला की उत्कृष्ट कृति है?

a) चेर

b) पंड्य

c) राष्ट्रकूट

d) चोल

Q. 107) Solution (d)

नटराज हिंदू भगवान शिव का दिव्य ब्रह्मांडीय नर्तक के रूप में चित्रण है। नृत्य के संदर्भ के आधार पर उनके नृत्य को तांडवम या नदंत कहा जाता है।

चित्रण का शास्त्रीय रूप पत्थर की उभारों में प्रकट होता है, जैसा कि एलोरा गुफाओं और बादामी गुफाओं में, लगभग 6 ठी शताब्दी तक था।

10 वीं शताब्दी के आसपास, यह तमिलनाडु में चोल कांस्य में अपनी परिपक्व और सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति के रूप में उभरी, जो चार फुट से भी कम थी।

शिव के नृत्य के दो सबसे सामान्य रूप हैं लस्या (नृत्य का कोमल रूप), जो दुनिया के निर्माण से जुड़ा है, और तांडव (नृत्य का सशक्त रूप), जो थके हुए विश्वदृष्टि-थके हुए दृष्टिकोण और जीवन शैली के विनाश से जुड़ा है। .

Q. 108) बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कर्ण मुद्रा (Karana Mudra) उग्र वज्र को दर्शाती है जो पांच तत्वों-वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी और धातु का प्रतीक है।
2. वरद मुद्रा (Varada mudra) भेंट, स्वागत, परोपकार, दान, करुणा और निष्कपटता का प्रतिनिधित्व करती है।
3. वितर्क मुद्रा (Vitarka mudra) बुद्ध की शिक्षाओं की चर्चा और प्रसारण का प्रतीक है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 108) Solution (b)

कर्ण मुद्रा

- यह बुराई को दूर करने का प्रतीक है जो तर्जनी और छोटी उंगली को ऊपर उठाकर और दूसरी उंगलियों को मोड़कर किया जाता है।
- यह बीमारी या नकारात्मक विचारों को कम करने में मदद करता है।

वरद मुद्रा

- यह मुद्रा भेंट, स्वागत, परोपकार, दान, करुणा और निष्कपटता का प्रतिनिधित्व करती है।
- यह दोनों हाथों की मदद से किया जाता है जिसमें दाहिने हाथ की हथेली आगे की ओर होती है और अंगुलियों को बढ़ाया जाता है और बाएं हाथ की हथेली को विस्तारित उंगलियों के साथ केंद्र के पास रखा जाता है।

वितर्क मुद्रा

- यह बुद्ध की शिक्षाओं की चर्चा और प्रसारण का प्रतीक है।
- यह अंगूठे और तर्जनी के सुझावों को एक साथ जोड़कर दूसरी उंगलियों को सीधा रखते हुए किया जाता है, जो कि अभय मुद्रा और वरद मुद्रा की तरह है लेकिन इस मुद्रा में अंगूठे तर्जनी को छूते हैं।

Q. 109) लोमस ऋषि गुफा (Lomus Rishi Cave) किसको समर्पित है:

a) जैन धर्म

b) बुद्ध धर्म

c) आजीविक

d) भगवान शिव

Q. 109) Solution (c)

लोमास ऋषि गुफा बिहार में बराबर और नागार्जुन पहाड़ियों में मानव निर्मित बराबर गुफाओं में से एक है।

चट्टानों को काटकर बनाई गई इस गुफा को एक अभयारण्य के रूप में उकेरा गया था। यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य के अशोक काल के दौरान, भारत के एक प्राचीन धार्मिक और दार्शनिक समूह, आजिविका की पवित्र वास्तुकला के हिस्से के रूप में बनाया गया था।

लोमास ऋषि गुफा में अन्य बराबर गुफाओं के विपरीत, अजीविकों के लिए एक स्पष्ट अभिलेखीय समर्पण का अभाव है, और संभवतः अशोक द्वारा बौद्धों के लिए बनाया गया हो सकता है।

चट्टानों को काट दी गई गुफा का अग्रभाग लकड़ी के खंभों से युक्त एक फूस की झोपड़ी के रूप में है और इसमें एक द्वार है जो लकड़ी की वास्तुकला को द्विगुणित करने के लिए जटिल रूप से उत्कीर्णित द्वार है। इसके नुकीले सिरे घुमावदार होते हैं और अंतिम भाग एक बर्तन के आकार का होता है। "घुमावदार वास्तुकला" पर अलंकरण में स्तूप जैसी संरचना के रास्ते में हाथियों की नक्काशी होती है।

Q. 110) मंदिर वास्तुकला के संदर्भ में, 'अंतराल' शब्द का क्या अर्थ है?

a) एक मंदिर के गर्भगृह के लिए एक उपकक्ष।

b) एक मंदिर का बरामदा जो प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है।

c) सजावटी उठा हुआ चबूतरा जिस पर मंदिर बना है।

d) एक टावर के शीर्ष पर एक घंटी के आकार का कलश।

Q. 110) Solution (a)

अंतराल गर्भगृह (मंदिर) और मंडप के बीच एक छोटा सा उपकक्ष या पार्श्व कक्ष है, जो उत्तर भारतीय मंदिरों के अधिक विशिष्ट है।

अंतराल आमतौर पर चालुक्य शैली के मंदिरों में देखा जाता है जिसमें 'विमान' और 'मंडप' 'अंतराल' के माध्यम से जुड़े होते हैं।

Q. 111) निम्नलिखित में से कौन से मानदंड हैं जिनके आधार पर भारत में किसी भाषा को 'शास्त्रीय दर्जा' (classical status) दिया जाता है?

1. यह कम से कम 1,500-2000 साल पुरानी होना चाहिए।
2. इसमें वक्ताओं द्वारा विरासत के रूप में माने जाने वाले प्राचीन साहित्य का अनूठा संग्रह होना चाहिए।
3. साहित्यिक परंपरा मौलिक होनी चाहिए, न कि उधार ली गयी हो।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 111) Solution (d)

शास्त्रीय भाषा का दर्जा भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी के परामर्श से प्रदान किया जाता है जिसने निम्नलिखित मानदंड स्थापित किए हैं:

- 1500-2000 वर्षों की अवधि में इसके प्रारंभिक ग्रंथों / दर्ज इतिहास की उच्च पुरातनता;
- प्राचीन साहित्य/ग्रंथों का एक समूह, जिसे वक्ताओं की पीढ़ियों द्वारा एक मूल्यवान विरासत माना जाता है;
- साहित्यिक परंपरा मौलिक हो और किसी अन्य भाषण समुदाय से उधार न ली गई हो;
- शास्त्रीय भाषा और साहित्य आधुनिक से अलग होने के कारण, शास्त्रीय भाषा और उसके बाद के रूपों या उसकी शाखाओं के बीच एक असंतुलन भी हो सकता है।

एक बार जब किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित कर दिया जाता है तो उसे निम्नलिखित लाभ मिलते हैं:

- शास्त्रीय भारतीय भाषाओं में प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए दो प्रमुख वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार
- शास्त्रीय भाषाओं में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किया गया है
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरोध है कि वह कम से कम केंद्रीय विश्वविद्यालयों में इस प्रकार घोषित शास्त्रीय भाषाओं के लिए एक निश्चित संख्या में व्यावसायिक पीठों का सृजन करे।

अब तक निम्नलिखित भाषाओं को शास्त्रीय घोषित किया गया है - संस्कृत, तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और उड़िया।

Q. 112) निम्नलिखित में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

क्रमांक	साहित्यिक रचना	लेखक
1.	वाक्यापडिय (Vakyapadiya)	दण्डी

2.	अर्थशास्त्र	चाणक्य
3.	दासकुमारचरित	भर्तृहरि

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 112) Solution (b)

वाक्यापडिय भर्तृहरि द्वारा लिखित संस्कृत व्याकरण और भाषाई दर्शन पर एक ग्रंथ है। यह भारतीय व्याकरणिक परंपरा में एक मूलभूत पाठ है, जिसमें शब्द और वाक्य पर कई सिद्धांतों की व्याख्या की गई है, जिसमें सिद्धांत भी शामिल हैं जिन्हें स्पोआ के नाम से जाना जाने लगा; इस काम में भर्तृहरि ने तार्किक समस्याओं जैसे झूठा विरोधाभास और नामहीनता या अहस्ताक्षरितता के एक विरोधाभास पर भी चर्चा की जिसे भर्तृहरि के विरोधाभास के रूप में जाना जाता है

अर्थशास्त्र राज्य कला, आर्थिक नीति और सैन्य रणनीति पर एक प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथ है। इसे कौटिल्य ने लिखा है। इसमें सरकार की प्रकृति, कानून, नागरिक और आपराधिक अदालत प्रणाली, नैतिकता, अर्थशास्त्र, बाजार और व्यापार, मंत्रियों की जांच के तरीके, कूटनीति, युद्ध पर सिद्धांत, शांति की प्रकृति, और एक राजा के कर्तव्यों और दायित्वों संबंधी पुस्तकें शामिल हैं।

दशकुमारचरित संस्कृत में एक गद्य रोमांस है, जिसे दंडिन ने लिखा है। यह दस युवकों, कुमारों के कारनामों का वर्णन करता है, जिनमें से सभी या तो राजकुमार हैं या शाही मंत्रियों के पुत्र हैं, जैसा कि स्वयं पुरुषों द्वारा बताया गया है (हालांकि, पाठ में अनियमितताएं हैं)। ये आख्यान देवताओं, भूतों, वेश्याओं, जुआरी, कामुक महिलाओं के साथ साज़िशों, आश्चर्यजनक संयोगों, मुर्गों की लड़ाई, मानवविज्ञान, टोना, डकैती, हत्या और युद्धों के वृत्तांतों से भरे हुए हैं।

Q. 113) वैदिक साहित्य (Vedic literature) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अथर्ववेद में ऋग्वेद से लिए गए श्लोक हैं और पाठ के उद्देश्य से धुन पर व्यवस्थित हैं।
2. ऋग्वेद में पुरुषसूक्त स्तोत्र है जो वर्ण व्यवस्था की व्याख्या करता है
3. ब्राह्मण गद्य ग्रंथ हैं जो वेदों में ऋचाओं की व्याख्या करते हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 113) Solution (c)

वेद मुख्य रूप से यज्ञ (अनुष्ठान) करने के लिए हैं। मोटे तौर पर पूरे वैदिक साहित्य (अपरा विद्या) को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है:

1. वेद:

'वेद' चार वेदों को इंगित करने वाला एक सामूहिक शब्द है -

- ऋग्वेद
- यजुर्वेद:
- सामवेद:
- अथर्ववेद:

इसके अलावा, प्रत्येक वेद में इसके अंतिम अध्याय के रूप में निम्नलिखित भाग शामिल हैं:

- ब्राह्मण
- अरण्यक
- उपनिषद

ऋग्वेद

- यह चार वेदों में सबसे पुराना है और इसमें दस मंडल या पुस्तकें शामिल हैं।
- 'रिक' उन मंत्रों को दिया गया नाम है जो देवताओं की स्तुति के लिए हैं। इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण और अन्य देवताओं की स्तुति में भजन गाए गए।
- इसमें प्रसिद्ध पुरुषसूक्त भजन है जो बताता है कि चार वर्ण, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रमशः सृष्टिकर्ता के मुंह, हाथ, जांघ और पैरों से उत्पन्न हुए थे।
- सार्वभौमिक रूप से प्रसिद्ध गायत्री मंत्र (सावित्री) ऋग्वेद में भी है।

अथर्ववेद:

- अथर्ववेद विशेष रूप से बुराई और कठिनाई को दूर करने के संबंध में दिशाओं और मंत्रों को दर्शाता है और इसमें दार्शनिक विचार भी शामिल हैं। इसमें कर्मकांडों का विवरण है।
- अथर्ववेद भारतीय चिकित्सा का सबसे पुराना साहित्यिक स्मारक है। इसे भारतीय चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद की उत्पत्ति माना जाता है।
- विभिन्न शारीरिक और मानसिक रोगों को ठीक करने के लिए मंत्रों की एक श्रृंखला है।
- भजनों के एक अन्य वर्ग में सांप या हानिकारक कीड़ों के काटने से सुरक्षा के लिए प्रार्थना शामिल है।

- हम दवाओं और औषधीय जड़ी बूटियों का उल्लेख और उपयोग पाते हैं।
- यह विशेषता अथर्ववेद को शेष वेदों से अलग करती है।

ब्राह्मण:

- ब्राह्मण' का अर्थ है एक विद्वान पुजारी द्वारा एक अनुष्ठान की व्याख्या। बाद में इस शब्द का अर्थ यज्ञ के विज्ञान पर पुजारी द्वारा इस तरह के स्पष्टीकरण का संग्रह हुआ।
- इस प्रकार ब्राह्मण यज्ञ या यज्ञ के विवरण पर अनुष्ठान पाठ्य-पुस्तकें हैं।
- ब्राह्मण वेदों के सूक्तों की व्याख्या करते हैं। वे वेदों के परिशिष्ट के रूप में कार्य करते हैं।
- वे गद्य में लिखे गए हैं और वे अपने रहस्यमय अर्थों के साथ-साथ विभिन्न बलिदानों और अनुष्ठानों का विस्तार से वर्णन करते हैं।
- प्रत्येक वेद में कई ब्राह्मण हैं।
- ऋग्वेद से जुड़े दो ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण और कौशिकी ब्राह्मण हैं

Q. 114) उपनिषदों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वे वेदों के अंत के रूप में कार्य करते हैं।
2. ये दार्शनिक ग्रंथ हैं जो आत्मा, निरपेक्ष, विश्व की उत्पत्ति और प्रकृति के रहस्यों जैसे विषयों से संबंधित हैं।
3. बृहदारण्यक उपनिषद में "सत्यमेव जयते" मंत्र है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 114) Solution (a)

उपनिषद:

- उपनिषदों को अक्सर 'वेदांत' कहा जाता है क्योंकि वे वेदों के अंत के रूप में कार्य करते हैं।
- वस्तुतः वेदांत का अर्थ है वेद का अंत, वेदस्य अंतः, निष्कर्ष (अंत) और साथ ही वेदों का लक्ष्य (अंत)।
- उपनिषद मुख्य रूप से ज्ञान-कांड या ज्ञान भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- इसका अर्थ "किसी के पास बैठना" भी है।

- उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं जो आत्मा, निरपेक्ष, दुनिया की उत्पत्ति और प्रकृति के रहस्यों जैसे विषयों से संबंधित हैं।
- यह अनुष्ठानों की आलोचना करता है और सही विश्वास और ज्ञान के मूल्य पर जोर देता है।
- उपनिषदों की भाषा शास्त्रीय संस्कृत थी न कि वैदिक संस्कृत।
- इसमें कहा गया है कि जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है जो आत्मसंयम से संभव है।
- उपनिषद शब्द मुख्य रूप से ज्ञान का प्रतीक है, फिर भी निहितार्थ से, यह उस ज्ञान को शामिल करने वाली पुस्तक को भी संदर्भित करता है।
- मुंडकोपनिषद में "सत्यमेव जयते" (सत्य की ही जीत होती है) मंत्र शामिल है जो भारत के राष्ट्रीय प्रतीक में उधार लिया गया है।

Q. 115) निम्नलिखित में से किस बौद्ध साहित्य में बुद्ध की शिक्षाओं का विद्वतापूर्ण विश्लेषण और विस्तृत सारांश है?

a) सुत्तपिट्क

b) सुत्तविभंगा

c) खंडका

d) अभिधम्मपिटक

Q. 115) Solution (d)

त्रिपिटक या तीन पिटक एक पारंपरिक शब्द है जिसका इस्तेमाल विभिन्न बौद्ध धर्मग्रंथों के लिए किया जाता है। इसे अंग्रेजी में पाली कैनन (pali Canon) के नाम से जाना जाता है। तीन पिटक हैं:

- सुत्त पिटक
- विनय पिटक
- अभिधम्म पिटक

अभिधम्मपिटक में विस्तृत विद्वतापूर्ण विश्लेषण और बुद्ध की शिक्षाओं का सारांश। अभिधम्म पिटक की 7 कृतियाँ हैं जिनसे अधिकांश विद्वान सहमत हैं कि स्वयं बुद्ध के शब्दों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

7 पुस्तकें हैं:

- धम्मसंगनी: इसमें एक मैट्रिक्स होता है जो धम्मों या विचारों के वर्गीकरण को सूचीबद्ध करता है।
- विभंग: इसमें बौद्ध धर्म की विभिन्न शिक्षाओं से संबंधित 18 अध्याय हैं। यह 3 खंडों में है और तीसरा खंड प्रश्न उत्तर प्रारूप में है।
- धतूकथा: इसमें एक मैट्रिक्स और विभिन्न विषय हैं।
- पुग्गलपन्नट्टी: इसमें एक मैट्रिक्स है जो व्यक्तियों की सूची से संबंधित है।

- कथावत्थु: इसमें इन वाद-विवादों पर वाद-विवाद और भाष्य शामिल हैं।
- यामाका: यामाका में प्रश्नों के जोड़े और अन्य भाग समझ से संबंधित है
- पाठन: इसमें प्रश्न और उत्तर भी होते हैं।

Q. 116) बौद्ध दर्शन के मध्यमा स्कूल का मूलभूत पाठ, "मुलमाध्यामाकारिका" (Mulamadhyamakakarika) किसके द्वारा लिखा गया था:

a) बुद्धघोष

b) नागार्जुन

c) मोगलीपुट्टतिस्स

d) आसंग

Q. 116) Solution (b)

मुलमाध्यामाकारिका महायान बौद्ध दर्शन के मध्यम स्कूल का मूलभूत पाठ है। इसकी रचना भारतीय दार्शनिक नागार्जुन ने की थी।

यह एक ऐसी कृति है जो परम "शून्यता" के सिद्धांत की एक स्पष्ट प्रस्तुति में कड़े तर्क और धार्मिक दृष्टि को जोड़ता है।

Q. 117) कल्प सूत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे अश्वघोष ने लिखा था
2. इसमें गौतम बुद्ध की जीवनी शामिल है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 117) Solution (d)

कल्प सूत्र:

- यह एक जैन पाठ है।
- इसे भद्रबाहु ने लिखा था।
- इसमें जैन तीर्थंकरों की आत्मकथाएँ शामिल हैं, विशेष रूप से पार्श्वनाथ और महावीर, जिनमें बाद का निर्वाण भी शामिल है।

- यह संभवतः महावीर के निर्वाण (मोक्ष) के 980 या 993 साल बाद लिखित रूप में दिया गया था।
- चूंकि भद्रबाहु चंद्रगुप्त मौर्य के शिक्षक थे, इसलिए हम कह सकते हैं कि इसका संकलन मौर्य काल में हुआ था।
- इस पुस्तक को जैन भिक्षुओं द्वारा आम लोगों के लिए आठ दिवसीय पर्युषण पर्व में पढ़ा और चित्रित किया गया है। केवल भिक्षु ही शास्त्रों को पढ़ सकते हैं, जैसा कि जैन धर्म में, इस पुस्तक में बहुत उच्च आध्यात्मिक मूल्य हैं।

Q. 118) निम्नलिखित में से कौन वराहमिहिर द्वारा लिखा गया था?

1. पंचसिद्धांतिका
2. सिद्धांत शिरोमणि
3. बृहतसंहिता

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 118) Solution (c)

वराहमिहिर उज्जैन में रहते थे और चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार के नौ रत्नों (नवरत्नों) में से एक थे।

वराहमिहिर ने बृहतसंहिता और पंचसिद्धांतिका लिखा:

- बृहतसंहिता को ज्योतिष पर एक विश्वकोश कार्य माना जाता है।
- पंचसिद्धांतिका का अर्थ है पांच खगोलीय सिद्धांत। यह मूल रूप से खगोल विज्ञान की पांच अन्य पुस्तकों का सारांश प्रस्तुत करता है। सूर्य, रोमक, पौलिसा, वशिष्ठ और पैतमाह सिद्धांत। पुस्तक 575 सीई के दौरान लिखी गई थी।

सिद्धांत शिरोमणि भास्कर द्वारा लिखी गई थी, जो कर्नाटक क्षेत्र के एक उत्कृष्ट गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। सिद्धांत शिरोमणि चार भागों में एक पुस्तक है:

- अंकगणित पर लीलावती
- बीजगणित पर बीजगणित
- खगोल विज्ञान पर गणिताध्याय
- खगोल विज्ञान पर गोलाध्याय

Q. 119) निम्नलिखित में से कौन कालिदास की कृतियाँ हैं/हैं?

1. किरातरर्जुनियम
2. ऋतुसंहार
3. विक्रमोर्वशीय

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 119) Solution (d)

कालिदास एक शास्त्रीय संस्कृत लेखक थे, जिन्हें व्यापक रूप से भारत की संस्कृत भाषा में सबसे महान कवि और नाटककार माना जाता था। उनके नाटक और कविता मुख्य रूप से वेदों, रामायण, महाभारत और पुराणों पर आधारित हैं। कालिदास की कृतियाँ हैं:

- ऋतुसंहार जो प्रत्येक ऋतु में दो प्रेमियों के अनुभवों का वर्णन करते हुए छह ऋतुओं का वर्णन करता है।
- विक्रमोर्वशीय (उर्वशी को वीरता से जीता) जो नश्वर राजा पुरुरवास और आकाशीय अप्सरा उर्वशी की कहानी बताती है जो प्रेम में पड़ जाती है।

किरातरर्जुनिया: यह भारवी द्वारा लिखी गई एक महाकाव्य कविता है। इसे संस्कृत की सबसे शक्तिशाली कविता माना जाता है। इस महाकाव्य कविता में किरात शिव हैं जो पहाड़ पर रहने वाले शिकारी के रूप में अर्जुन से बात करते हैं।

Q.120) जातकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. ये साहित्य का एक निकाय है जिसमें बुद्ध के पिछले जीवन की कहानियों के बारे में बताया गया है।
2. ये प्राकृत भाषा में लिखे गए थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 120) Solution (a)

जातक भारत का एक प्रकार का साहित्य है जिसे जातक या जातक कथाओं के रूप में भी जाना जाता है। इनमें गौतम बुद्ध के पिछले जीवन की कहानियां हैं। इनमें पशु और मानव दोनों रूपों में बुद्ध शामिल हैं। ये कहानियाँ अत्यंत लोकप्रिय हैं और बौद्ध धर्म की सभी शाखाओं में मूल्यवान हैं।

जातक कथाएँ महत्वपूर्ण हैं क्योंकि, प्रत्येक कहानी में, बुद्ध सभी मानवता के लिए प्रेरित करने और एक उदाहरण स्थापित करने के लिए कुछ गुण प्रदर्शित करते हैं। ये ग्रंथ पुनर्जन्म की अवधारणा को स्पष्ट रूप करते हैं, जो हिंदू और योग दर्शन में भी महत्वपूर्ण है।

जातक कथाएं बौद्ध साहित्य के कुछ शुरुआती उदाहरण हैं, जो ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के आसपास की हैं। माना जाता है कि वे बुद्ध की प्रसिद्ध आत्मकथाओं के अग्रदूत थे, जिनकी रचना बाद में हुई थी।

कुछ जातक कथाएँ बौद्ध साहित्य के पाली सिद्धांत में निहित हैं। ऐसी 35 कथाएँ हैं जिन्हें शिक्षण के उद्देश्य से एकत्र किया गया था और वे "कैरिय पिटक," (Carriya Pitaka)या "आचरण की सिद्धांत" निर्मित करते हैं। थेरवाद जातक 547 कविताओं से बने हैं जिनमें छंदों को संदर्भ देने के लिए भाष्य शामिल हैं।

Q. 121) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. जोगीमारा गुफा चित्र बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।
2. अजंता की गुफाओं के चित्र जातक कथाओं को दर्शाते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 121) Solution (b)

जोगीमारा गुफा चित्र:

- अजंता और बाग गुफाओं से पहले बनाई गई चित्र पूर्व-बुद्ध गुफाओं की हैं।
- यह पूर्व-बुद्ध चित्रों का सबसे अच्छा उदाहरण है।
- यह छत्तीसगढ़ में सरगुजा में, नर्मदा की उत्पत्ति के निकट अमरनाथ में स्थित है।
- इन गुफाओं के चित्र 300 ईसा पूर्व से लेकर 1000 ईसा पूर्व तक के हैं। गुफा की छत पर कुछ सात पेंटिंग हैं जिनमें मानव आकृतियां, मछली और हाथी शामिल हैं।
- जोगीमारा गुफाएं विशेषज्ञ चित्रों के रूप में पहला मानव प्रयास प्रतीत होती हैं।

अजंता चित्र:

- महाराष्ट्र, भारत में अजंता गुफाएं 31 रॉक-कट गुफा स्मारक हैं जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की हैं।
- गुफाओं में पेंटिंग और मूर्तियां शामिल हैं जिन्हें बौद्ध धार्मिक कला (जो जातक कथाओं को दर्शाती है) और साथ ही श्रीलंका में सिगिरिया चित्रों (Sigiriya paintings) की याद ताजा करती है।
- जातक उनके पिछले जन्मों में बुद्ध की कहानियां हैं, जब वे ज्ञान के मार्ग पर थे। ये कहानियाँ एक सदाचारी जीवन के गुणों को दर्शाती हैं और बुद्ध के अनुयायियों के लिए उदाहरण के रूप में काम करने के लिए कहा जाता है।
- गुफाओं की छतों पर संसार के परिपूर्ण जीवन, उसके फूलों और फलों, संसार के जानवरों और पौराणिक जीवों का चित्रण है।

Q. 122) लघु चित्रों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बौद्ध पाठ, प्रज्ञापारमिता, चित्रकला का सबसे पहला ज्ञात उदाहरण है जहाँ लघु आकार के कैनवस का उपयोग किया जाता है।
2. भारत में, मुगल लघु चित्र लघु चित्रकला परंपरा के शुरुआती प्रमाण हैं।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 122) Solution (a)

कागज और कपड़े जैसी खराब होने वाली सामग्री पर किताबों या एल्बमों के लिए लघु चित्रों को बहुत छोटे पैमाने पर निष्पादित किया जाता है।

10वीं शताब्दी का सचित्र बौद्ध पाठ, प्रज्ञापारमिता, चित्रकला का सबसे पहला ज्ञात उदाहरण है जहाँ सूक्ष्म, या लघु आकार के कैनवास ने अपनी शुरुआत की।

भारत में, पाल लघु चित्र, जो 11वीं शताब्दी के हैं, लघु चित्रकला परंपरा के सबसे पुराने प्रमाण हैं।

हालाँकि, लघु चित्रों के लिए स्वर्ण काल 16 वीं शताब्दी था जब मुगलों, दक्कन और मालवा के शासकों और राजस्थान के हिंदू सरदारों द्वारा चित्रों के विभिन्न स्कूलों को संरक्षण प्रदान किया गया था। इससे मुगल, राजपूत और दक्कन शैली जैसे चित्रों के महत्वपूर्ण शैलियों का विकास हुआ।

Q. 123) मुगल चित्रकला शैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मुगल शैली चित्रकला की सफाविद् शैली से प्रभावित थी।
2. शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान मुगल चित्रकारी अपने चरम पर पहुंच गई।
3. चित्र प्रकृति के निकट अवलोकन पर आधारित थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 123) Solution (d)

मुगल शैली की उत्पत्ति भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक मील का पत्थर है। मुगल शैली की उत्पत्ति भारतीय चित्रकला की स्वदेशी शैली और फारसी चित्रकला की सफविद शैली के संश्लेषण का परिणाम थी।

मुगल चित्रकारी भारतीय, फारसी और इस्लामी शैलियों का एक अनूठा मिश्रण थी। मुगल चित्रकला शैली की प्रमुख विशेषताएं हैं:

- प्रकृति के करीब से अवलोकन पर आधारित चित्रकारी
- सुलेख पाठ विवरण के साथ बारीक और नाजुक चित्रकारी, सामान्य रूप से सीमा पर किया जाता है।
- उच्च सौंदर्य योग्यता
- मुख्य रूप से कुलीन
- अधिकतर धर्मनिरपेक्ष

जहाँगीर के अधीन, मुगल शैली की चित्रकारी अपने चरम पर पहुंच गई और अधिक आकर्षण, परिष्कार और गरिमा प्राप्त कर ली। बादशाह जहाँगीर को प्रकृति से बहुत लगाव था और वह पक्षियों, जानवरों और फूलों के चित्रांकन का आनंद लेता था।

Q. 124) निम्नलिखित में से कौन-सा/से अकबर के शासनकाल के दौरान किए गए सबसे प्रसिद्ध कलात्मक कार्य हैं/हैं?

1. अनवर-ए-सुनावली (Anwar-i-sunavli)
2. तूती-नामा (Tuti-nama)
3. हमजा-नामा (Hamza-nama)

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 124) Solution (c)

अकबर के समय में किए गए सबसे प्रसिद्ध कार्य तूती-नामा और हमजानामा थे।

तूती-नामा मुगल विचारधारा की प्रथम कृति प्रतीत होती है। तूती-नामा का शाब्दिक अर्थ है "एक तोते की दास्तां"। यह 250 लघु चित्रों में 52 कहानियों का सचित्र संकलन है। काम अकबर ने करवाया था। विषय और कहानियां 12 वीं शताब्दी के संस्कृत संकलन से ली गई हैं, जिसका शीर्षक शुकसप्तती या "सेवेंटी टेल्स ऑफ तोता" है। तोता लगातार 52 रातों में 52 कहानियाँ सुनाता है और इन कहानियों में वह अपने मालिक को कुछ नैतिक कहानियाँ सिखाता है। कृति मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद के तहत पांच साल की अवधि में पूरा किया गया। पाठ नख्शाबी, एक जातीय फारसी चिकित्सक और एक सूफी संत द्वारा लिखा गया था जो बदायूं चले गए थे। यह फारसी में लिखा गया था।

हमजा-नामा अधिक परिष्कृत और विकसित कार्य था, जिसमें कपड़े पर चित्र शामिल हैं, मूल रूप से सत्रह खंडों में 1400 पत्ते शामिल हैं। प्रत्येक पत्ती का माप लगभग 27″x20″ होता है। ये पेंटिंग एक फ़ारसी हमज़ानामा या दास्तान-ए-अमीर हमज़ा (Dastan-e-Amir Hamza) पर आधारित थीं। अमीर हमजा इस्लाम के पैगंबर या नबी के चाचा थे। हमजानामा एक बहुत ही काल्पनिक कहानी थी, जिसे बाबर ने नापसंद किया था, लेकिन उसके पोते अकबर को इतना पसंद आया कि उसने इस कल्पित कहानी पर एक सचित्र पांडुलिपि बनाने के लिए दरबारी कार्यशाला शुरू की, और इसे पूरा होने में 14 साल लग गए।

अनवर-ए-सुनावली (Anwar-i-sunavli) जहांगीर के समय की एक सचित्र पांडुलिपि है जो एक पशु कथा पुस्तक है।

Q. 125) दक्षिण भारतीय चित्रकला शैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए?

1. श्रीतत्वनिधि (Sritattvanidhi) नामक पाण्डुलिपि मैसूर चित्रकला शैली का एक प्रसिद्ध उदाहरण है।
2. तंजौर पेंटिंग विजयनगर शैली की एक शाखा थी।
3. जबकि गेसो का काम मैसूर चित्रों की मुख्य विशेषता है, यह तंजौर चित्रों में अनुपस्थित है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 1 और 3

c) केवल 2 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 125) Solution (a)

मैसूर चित्रकला आमतौर पर हिंदू देवी-देवताओं और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों को दर्शाती हैं। मैसूर चित्रकला शैली का प्रसिद्ध उदाहरण एक पांडुलिपि है जिसे श्रीतत्वनिधि (Sritattvanidhi) कहा जाता है। यह 1500 पृष्ठों का एक सचित्र डाइजेस्ट है और इसमें देवी-देवताओं और पौराणिक आकृतियों के चित्र हैं। इस प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मैसूर चित्रों में हिंदू पौराणिक कथाओं का प्रमुख विषय है।

मैसूर चित्रकला और तंजौर चित्रकला दोनों पहले के विजयनगर चित्रकला शैली की शाखाएं हैं। विजयनगर चित्रकला शैली मूल रूप से मंदिर की दीवारों और छत पर हिंदू देवताओं के विभिन्न पौराणिक विषयों के भित्तिचित्रों और भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता था, और

स्वयं अजंता से प्रेरित था। विजयनगर कला में हम्पी के विरुपाक्ष मंदिर में दशावतार (विष्णु के दस अवतार) और गिरिजाकल्याण (पार्वती का विवाह) की दीवार-पेंटिंग शामिल हैं।

जैसे ही विजयनगर साम्राज्य का पतन हुआ, चित्रकार तंजावुर, मैसूर, शाहपुर और सुरपुर की ओर पलायन करने लगे। जो लोग तंजावुर और मैसूर चले गए वे अन्य शैलियों के भारी प्रभाव में आए और इस प्रकार, ये दोनों चित्रकला की दो अलग शैलियों के रूप में विकसित हुए।

तंजौर कला के संरक्षक तंजौर के नायक थे। यह स्कूल जीवंत रंगों, भव्य सतह और सोने की पन्नी के अत्यधिक उपयोग के लिए जाना जाता था। प्रमुख विषय हिंदू देवी-देवता और संत हैं। ये चित्रकला लकड़ी के तख़्त पर बनाई गई हैं, इसलिए इसे स्थानीय भाषा में पलगई पदम (पलगई-लकड़ी का तख़्त, पदम-चित्र) के रूप में भी जाना जाता है।

गेसो, सफेद लेड पाउडर, गैम्बोज और गोंद के पेस्ट को संदर्भित करता है और इसका उपयोग सोने की पन्नी से ढके एम्बॉसिंग सामग्री के रूप में किया जाता है। मैसूर के साथ-साथ तंजौर चित्रों में भी गेसो का काम पाया जाता है। मैसूर चित्रकला में, काम कम जटिल और आराम का है, जबकि तंजौर स्कूल में, गेसो का काम थोड़ा मोटा है।

Q. 126) राजस्थानी चित्रकला शैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वैष्णववाद का पुनरुद्धार और भक्ति पंथ का विकास मुख्य कारक था जिसके कारण राजस्थानी चित्रकला शैली का विकास हुआ।
2. रागमाला पेंटिंग राजपूत लघु चित्रों की एक विशिष्ट विशेषता है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 126) Solution (c)

राजस्थानी चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रमुख कारक थे:

- राजपुताना का वाणिज्यिक समुदाय आर्थिक रूप से समृद्ध था।
- 'वैष्णववाद' के पुनरुद्धार और भक्ति पंथ के विकास ने एक अलग शैली के विकास को एक दिशा प्रदान की।

14वीं शताब्दी में रामानुज (विष्णु के उपासक) जैसे कवियों और संतों और जयदेव (कृष्ण के उपासक) जैसे लेखकों के प्रभाव ने भारत के बड़े हिस्से के लोगों की सोच, आध्यात्मिक जागृति और कला को बहुत प्रभावित किया। राजस्थानी स्कूल, कई अन्य लोगों के समान, रामानंद, तुलसीदास, कबीर, रैदास आदि के आगमन से बहुत प्रभावित था। इस तरह राजपूत चित्रों के विषयों में श्री राम चरित मानस, गीत-गोविंद, राधा और कृष्ण का दिव्य प्रेम शामिल था। प्राचीन कथाएं, संतों का जीवन, बारामासा (वर्ष का मासिक उत्सव) और रागमाला (रागरागिनी) और धार्मिक ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, कृष्ण लीला और देवी महात्म्य।

रागमाला पेंटिंग राजपूत लघु चित्रों की एक विशिष्ट विशेषता है। ये भारतीय रागों और रागिनी के सचित्र प्रतिनिधित्व हैं। राग की विधा और समय शानदार रंगों और रंगीन पोशाक वाले नायक और नायक के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। वे आम तौर पर समकालीन शाही फैशन में तैयार होते हैं।

Q. 127) हाडोती चित्रकला शैली की उप शैलियाँ निम्नलिखित में से कौन-सी हैं ?

1. कोटा
2. बूंदी
3. किशनगढ़

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 127) Solution (b)

हाडोती शैली में कोटा, बूंदी और झालावाड़ शैली शामिल हैं।

हाडोती चित्रकला शैली राव छत्तर शाल (1631-1659 ईस्वी) के तहत शुरू हुआ, जिसे शाहजहाँ ने दिल्ली का राज्यपाल बनाया था।

चौहान वंश के शासकों की भूमिका और प्रभाव बूंदी, कोटा और झालावाड़ के क्षेत्रों तक ही सीमित था। इसलिए इस क्षेत्र को हातोदी क्षेत्र कहा गया है। यह क्षेत्र कला का खजाना था।

राजस्थान में प्रागैतिहासिक शैल चित्रों के सबसे पुराने नमूने कोटा के पास चंबाई नदी के किनारे की गुफाओं में हैं। इसकी मंदिर वास्तुकला और प्रतिमा प्राचीन काल से प्रसिद्ध थी। कंसुआ, बडोली और रामगढ़ में स्थित कई कलात्मक मंदिर इस बात की गवाही देते हैं।

हाडोती चित्रकला को अक्सर राजपूत शैली में उच्चतम गुणवत्ता वाले चित्रों में से एक माना जाता है।

Q. 128) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. राजपूत चित्र प्रकृति में कुलीनतंत्रीय वर्ग के थे।
2. मारवाड़ चित्रकला शैली किशनगढ़, बीकानेर और जोधपुर के शाही परिवारों में विकसित हुआ।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 128) Solution (b)

राजपूत चित्र उत्तर भारत में राजपुताना के शाही दरबारों में विकसित और विकसित हुए, मुख्यतः 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान।

मुगल लघु की परंपरा में प्रशिक्षित कलाकारों को शाही मुगल दरबार से तितर-बितर कर दिया गया था, और उनमें चित्रांकन की स्थानीय परंपराओं, विशेषकर हिंदू धार्मिक महाकाव्यों, महाभारत और रामायण के चित्रांकन की शैलियों का विकास हुआ।

राजपूत चित्रकला लोगों की कला थी, विषय विविध थे, लेकिन शासक परिवार के चित्र, जो अक्सर शिकार या उनकी दैनिक गतिविधियों में लगे रहते थे, आम तौर पर लोकप्रिय थे, जैसे कि महाकाव्यों या हिंदू पौराणिक कथाओं के कथा दृश्य, साथ ही साथ अनाम लोगों की कुछ शैली के दृश्य भी थे।

किशनगढ़, बीकानेर, जोधपुर, नागौर, पाली और घनेराव के शाही परिवारों में मारवाड़ चित्रकला शैली विकसित हुआ।

Q. 129) कालीघाट चित्रकला के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए::

1. कालीघाट चित्रकला ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
2. कालीघाट चित्रकला कांगड़ा चित्रकला शैली की एक शाखा है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 129) Solution (a)

कालीघाट चित्रकला मुगलों के बाद की घटना थी। इसकी उत्पत्ति 19वीं शताब्दी में कालीघाट काली मंदिर, कालीघाट (कोलकाता, भारत) के आसपास हुई थी। कालीघाट मंदिर को मुख्य केंद्र माना जाता था जिसके चारों ओर 'पटौस' या 'कपड़े के चित्रकार' कहे जाने वाले पारंपरिक कलाकार केंद्रित थे। बाद में ब्रिटिश संरक्षकों द्वारा भारतीय कलाकारों के लिए यूरोपीय शैली की कला प्रदान करने के लिए बंगाल में अकादमिक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किए गए। इसने पारंपरिक कलाकारों को ग्रामीण क्षेत्रों से शहर की ओर जाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने नई तकनीकों से सीखना शुरू किया। उन्होंने नवीन और नए कला रूपों का भी निर्माण किया। इससे अंततः कालीघाट चित्रकला का जन्म हुआ।

कालीघाट चित्रकला के कलाकारों ने अपने चित्रों में धर्मनिरपेक्ष विषयों और व्यक्तित्वों के चित्रण के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धार्मिक विषयों को चित्रित करने के अलावा चित्रों ने विभिन्न व्यवसायों और वेशभूषा को भी चित्रित किया जो पर्यटकों के बीच लोकप्रिय थे। कभी-कभी, अपराध जैसी समकालीन घटनाएं भी कई चित्रों का विषय थीं।

कालीघाट कलाकारों के बीच देवी की छवियां लोकप्रिय थीं। सभी देवताओं में काली सबसे प्रिय देवी थीं। कलाकारों ने सीता-राम, राधा-कृष्ण और हनुमान के कारनामों जैसे विषयों को भी चित्रित किया। बंग्ली लोकाचार के प्रिय विषय चैतन्य महाप्रभु और उनके शिष्यों का विषय था।

Q.130) निम्नलिखित में से कौन-सा/से नंदलाल बोस की प्रसिद्ध कृतियाँ हैं/हैं?

1. चार भुजाओं वाली हिंदू देवी के रूप में भारत माता की पेंटिंग।
2. भारत के संविधान की मूल पांडुलिपि का सौंदर्यीकरण।
3. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान एक कर्मचारी के साथ चलते हुए महात्मा गांधी का चित्र ।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 130) Solution (d)

नंदलाल बोस (1882 - 1966) अबनिंद्रनाथ टैगोर के शिष्य थे। वे 1922 में कला भवन, शांति निकेतन के प्राचार्य बने। उनके चित्रों में भारतीय पौराणिक कथाओं, महिलाओं और ग्रामीण जीवन के दृश्य दिखाई देते हैं। भारतीय कला में उनके योगदान पर कुछ उल्लेखनीय विषयवस्तु यहां दिए गए हैं:

नमक पर ब्रिटिश कर का विरोध करने के लिए महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के 1930 के अवसर को चिह्नित करने के लिए, बोस ने गांधी जी के कर्मचारियों के साथ चल रहे सफेद लिनोकट प्रिंट पर एक काला निशान बनाया। यह अहिंसा आंदोलन की प्रतिष्ठित छवि बन गई।

उन्हें जवाहरलाल नेहरू द्वारा भारत रत्न और पद्म श्री सहित भारत सरकार के पुरस्कारों के लिए प्रतीकों को स्केच करने के लिए भी कहा गया था। अपने छात्रों के साथ, नंदलाल बोस ने भारत के संविधान की मूल पांडुलिपि को सुशोभित/सजाने का ऐतिहासिक कार्य किया।

अबनिंद्रनाथ टैगोर ने भारत माता (1905) को चार भुजाओं वाली हिंदू देवी के रूप में चित्रित किया, जो भगवा रंग का वस्त्र पहनी हुई थी, जिसके पास एक किताब, चावल की एक माला, एक माला और एक सफेद कपड़ा था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयों में राष्ट्रवादी भावना पैदा करने के लिए भारतमाता की छवि एक प्रतीक थी।

Q. 131) बृहद्देशी (Brihaddeshi) एक भारतीय शास्त्रीय संस्कृत पाठ है:

a) व्याकरण

b) शास्त्रीय नृत्य

c) शास्त्रीय संगीत

d) राजनीति

Q. 131) Solution (c)

बृहददेशी एक शास्त्रीय संगीत संस्कृत पाठ है, भारतीय शास्त्रीय संगीत पर 6वीं से 8वीं शताब्दी ईस्वी लिखित, जिसके रचयिता मतंग मुनि थे।

यह राग की सीधे बात करने वाला और देसी ("लोक") संगीत से मार्ग ("शास्त्रीय") को अलग करने वाला पहला पाठ है। इसने सीखने और प्रदर्शन के लिए सहायता के रूप में, संगीत नोट्स के नामों के पहले अक्षर का गायन, सरगम सॉल्फ़ेज (या सोलफ़ा) भी पेश किया।

लेखक ने कार्य भरत मुनि के नाट्य शास्त्र पर आधारित है।

Q. 132) हवेली संगीत (Haveli Sangeet) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं:

1. यह कर्नाटक शास्त्रीय संगीत का एक रूप है।
2. भारतीय संगीत पर भक्ति आंदोलन का प्रभाव हवेली संगीत के माध्यम से देखा जा सकता है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) दोनों 1 और 2
d) न तो 1 और न ही 2

Q. 132) Solution (b)

हवेली संगीत हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का एक रूप है जिसे हवेलियों में गाया जाता है। आवश्यक घटक ध्रुपद है। इसकी उत्पत्ति उत्तर भारत के ब्रज में मथुरा में हुई थी।

हवेली संगीत राजस्थान में नाथद्वारा के वैष्णववाद के अनुयायियों द्वारा प्रचलित हिंदू मंदिर संगीत का दूसरा नाम है, और इसे एक समृद्ध ऐतिहासिक परंपरा का हिस्सा माना जाता है।

अनिवार्य रूप से कृष्ण को एक श्रद्धांजलि, इसके रूप में कीर्तन, भजन और भाव नृत्य जैसे भक्ति गायन शामिल हैं, जो सभी धार्मिक पंथ पूजा से संबंधित हैं।

भारतीय संगीत पर भक्ति आंदोलन का प्रभाव भजन और कीर्तन के साथ हवेली संगीत के माध्यम से हुआ।

ध्रुपद, ख्याल और टप्पा का आगमन, संगीत से नृत्य का वियोग और पखावज (pakhawaj) से तबला में स्थानांतरण, ये सब भक्ति आंदोलन के काल में हुआ।

Q. 133) कर्नाटक संगीत के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए::

1. पुरंदरदास को कर्नाटक संगीत का जनक माना जाता है।

2. राग कर्नाटक संगीत का सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं।

3. यह विशुद्ध रूप से स्वदेशी है, आमतौर पर विदेशी प्रभावों से अलग है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 133) Solution (d)

कर्नाटक संगीत आमतौर पर दक्षिण भारत से जुड़ी संगीत की एक प्रणाली है, जिसमें आधुनिक भारतीय राज्य कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल और तमिलनाडु और श्रीलंका शामिल हैं।

कर्नाटक संगीत में एक अत्यधिक विकसित सैद्धांतिक प्रणाली है। यह रागम (राग) और थालम (ताला) की एक जटिल प्रणाली पर आधारित है।

कर्नाटक संगीत की अधिकांश रचनाओं में उनके निकाय के तीन भाग होते हैं:

- गाने की पहली दो पंक्तियों को पल्लवी (Pallavi) कहा जाता है। वे बार-बार होते हैं, खासकर प्रत्येक छंद के बाद।
- आमतौर पर पल्लवी के बाद दो और लाइनें आती हैं या कभी-कभी सिर्फ एक और। इस भाग को अनु पल्लवी (Anu Pallavi) कहते हैं। यह शुरुआत में निश्चित रूप से गाया जाता है, लेकिन कभी-कभी गीत के अंत के दौरान भी, लेकिन जरूरी नहीं कि प्रत्येक छंद के बाद।
- एक गीत के छंद को 'चरणम' (Charanam) कहा जाता है

कर्नाटक शैली में रचित एक गीत में अनिवार्य रूप से एक पल्लवी, अनुपल्लवी और एक या दो या अधिक चरण शामिल होते हैं। कर्नाटक शैली में गाते समय गीत के इन भागों में से प्रत्येक को महत्व दिया जाता है।

पुरंदरदास (1480-1564) को कर्नाटक संगीत का जनक माना जाता है। कर्नाटक संगीत की पद्धति को संहिताबद्ध करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। उन्हें कई हजार गीतों के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है।

Q. 134) निम्नलिखित में से किसे कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति के रूप में जाना जाता है?

1. त्यागराज

2. कनकदास

3. मुथुस्वामी दीक्षितार

4. श्याम शास्त्री

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1, 2 और 3

b) केवल 2, 3 और 4

c) केवल 1, 3 और 4

d) केवल 1, 2 और 4

Q. 134) Solution (c)

कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति 18 वीं शताब्दी में कर्नाटक संगीत के संगीतकार-संगीतकारों की उत्कृष्ट तिकड़ी को संदर्भित करती है, जो त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार और श्याम शास्त्री हैं।

कर्नाटक संगीत के त्रिमूर्ति को कर्नाटक संगीत के इतिहास में एक नया युग बनाने के लिए जाना जाता है, जो मौजूदा कर्नाटक संगीत परंपरा में एक उल्लेखनीय परिवर्तन लाकर किया गया था।

कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति की रचनाओं को शैली में विशिष्ट और रागों को संभालने में मौलिक माना जाता है।

मुथुस्वामी दीक्षितार मुख्य रूप से संस्कृत और मणिप्रवलम (तमिल और संस्कृत) में रचित हैं, जबकि त्यागराज और श्याम शास्त्री मुख्य रूप से तेलुगु में रचे गए हैं।

Q. 135) निम्नलिखित में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

S. No.	लोक नृत्य	क्षेत्र
1.	गौर (Gaur)	केरल
2.	पांडवानी (Pandavani)	छत्तीसगढ
3.	बिदेसिया (Bidesia)	उत्तराखंड

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 135) Solution (b)

गौर: गौर का अर्थ जंगली साड़ (Bison) है, और इस नृत्य में, नर्तक एक घुमंतू साड़ की हरकतों की नकल करते हैं जैसे विप्लव, सींगों का पटकना, घास को हवा में उछालना आदि। यह नृत्य छत्तीसगढ के बस्तर जिले में किया जाता है।

पांडवानी: पांडवानी नृत्य और संगीत प्राचीन महाकाव्य महाभारत से संगीत की संगत और भीम नायक के रूप में कहानियों के संगीतमय वर्णन की एक लोक गायन शैली है। यह छत्तीसगढ़ का लोकनृत्य है। तीजन बाई एक प्रसिद्ध पांडवानी कलाकार हैं।

बिदेसिया: यह बिहार के भोजपुरी भाषी क्षेत्र में प्रचलित नृत्य नाटक का एक लोकप्रिय रूप है। इन नाटकों के रचयिता भिकारी ठाकुर को माना जाता है। यह कई सामाजिक मुद्दों, विरोधाभासी विषयों और पारंपरिक और आधुनिक, शहरी और ग्रामीण, और अमीर और गरीब के बीच संघर्ष से निपटता है। बिदेसिया में, महिला भूमिकाएँ भी पुरुष अभिनेता-नर्तकियों द्वारा निभाई जाती हैं। रंगमंच के नाटक और शैली उनकी लयबद्ध भाषा, मधुर गीतों और आकर्षक संगीत के लिए बहुत लोकप्रिय है।

Q. 136) भारतीय संस्कृति के संदर्भ में, भारत के रंगमंच रूपों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही है/हैं?

S. No.	लोक रंगमंच	क्षेत्र
1.	रम्मन (Ramman)	उत्तराखंड
2.	थेरुकोथु (Therukoothu)	आंध्र प्रदेश
3.	यक्षंगान (Yakshangana)	तमिलनाडु

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 136) Solution (a)

रमन: यह उत्तराखंड का लोक रंगमंच है। यह रंगमंच, संगीत, ऐतिहासिक पुनर्निर्माण और पारंपरिक मौखिक और लिखित कहानियों को मिलाकर एक बहुरूपी सांस्कृतिक कार्यक्रम है। यह हर साल बैसाख महीने (अप्रैल) में उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित भूमियाल देवता के मंदिर के प्रांगण में मनाया जाता है। मुखौटा नृत्य विशेष रूप से भंडारियों (क्षत्रिय जाति) द्वारा किया जाता है। रमन को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को प्रतिनिधि सूची में भी शामिल किया गया है।

थेरुकोथु: इसका शाब्दिक अर्थ है नुक्कड़ नाटक, तमिलनाडु के लोक नाटक का सबसे लोकप्रिय रूप है। यह ज्यादातर समृद्ध फसल प्राप्त करने के लिए मरिअम्मन (वर्षा देवी) के वार्षिक मंदिर उत्सवों के समय किया जाता है। थेरुकोथु के व्यापक प्रदर्शनों के मूल में द्रौपदी के जीवन पर आधारित आठ नाटकों का एक चक्र है। थेरुकुथु प्रदर्शन का सूत्रधारा कट्टियाकरण दर्शकों को नाटक का सार प्रस्तुत करते हैं और कोमली अपनी प्रदर्शनी से दर्शकों का मनोरंजन करती है।

यक्षगान: यह कर्नाटक का पारंपरिक रंगमंच है। यह पौराणिक कथाओं और पुराणों पर आधारित है। सबसे लोकप्रिय एपिसोड महाभारत यानी द्रौपदी स्वयंवर, सुभद्रा विवाह, अभिमन्यु वध, कर्ण-अर्जुन युद्ध और रामायण यानी राज्याभिषेक, लव-कुश युद्ध, बाली-सुग्रीव युद्ध और पंचवटी से हैं।

Q. 137) निम्नलिखित में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

S. No.	कला रूप	राज्य
1.	तोगालु गोम्बेयाटा	तेलंगाना
2.	थोलू बोम्मालाटा	आंध्र प्रदेश
3.	रावणछाया	उड़ीसा

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) केवल 2 और 3

Q. 137) Solution (d)

तोगलु गोम्बेयाटा कर्नाटक राज्य के लिए अद्वितीय कठपुतली शो है। कठपुतलियों को शैलीबद्ध और क्षेत्र के यक्षगान रंगमंच के पात्रों की तरह डिजाइन किया गया है। गोम्बेयाटा कठपुतलीयों की आकृतियां उच्च-स्तरीय शैलीबद्ध होती हैं और पैरों, कंधों, कोहनी, कूल्हों और घुटनों पर जोड़ होती हैं। इन कठपुतलियों को एक आधार से बंधी पांच से सात डोरियों से जोड़-तोड़ किया जाता है। कठपुतली के कुछ अधिक जटिल संचलनों में एक बार में दो से तीन कठपुतली द्वारा हेरफेर किया जाता है। गोम्बेयट्टा में बनाए गए प्रकरण आमतौर पर यक्षगान नाटकों के प्रसंगों पर आधारित होते हैं। साथ में संगीत नाटकीय है और लोक और शास्त्रीय तत्वों को खूबसूरती से मिश्रित करता है।

थोलू बोम्मलता आंध्र प्रदेश की छाया कठपुतली है। कठपुतलियाँ आकार में बड़ी होती हैं और इनमें कमर, कंधे, कोहनी और घुटने संयुक्त होते हैं। वे दोनों तरफ से रंगी होती हैं। इसलिए, ये कठपुतली स्क्रीन पर रंगीन छाया फेंकती हैं। संगीत क्षेत्र के शास्त्रीय संगीत से प्रमुख रूप से प्रभावित है और कठपुतली नाटकों का विषय रामायण, महाभारत और पुराणों से लिया गया है।

रावणछाया: यह ओडिशा की छाया कठपुतली है। कठपुतलियाँ हिरण की खाल से बनी होती हैं और उनकी कल्पना बड़ी नाटकीय मुद्राओं में की जाती है। मानव और पशु पात्रों के अलावा, वृक्षों, पहाड़ों, रथों आदि को भी प्रयुक्त किया जाता हैं। हालांकि, रावणछाया कठपुतली आकार में छोटी होती हैं- सबसे बड़ी दो फीट से अधिक की नहीं होती है, जिसमें कोई जोड़ नहीं होता है, वे बहुत संवेदनशील और गीतात्मक छाया बनाते हैं।

Q. 138) निम्नलिखित में से कौन भारत की मार्शल आर्ट है/हैं?

1. सिलंबम
2. थांग ता
3. कालबेलिया

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2

c) केवल 3

d) केवल 1 और 3

Q. 138) Solution (a)

सिलंबम तमिलनाडु की एक हथियार आधारित भारतीय मार्शल आर्ट है। हर राज्य की मार्शल आर्ट की अपनी शैली होती है। सिलंबन में कई तरह के हथियारों का इस्तेमाल किया जाता है, जिनमें से कुछ दुनिया में और कहीं नहीं पाए जाते हैं। सिलंबम कला में सांप, बाघ, चील के रूप और फुटवर्क पैटर्न के पशु संचलनों का भी उपयोग किया जाता है, जो यहां भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सिलंबम का एक और हिस्सा कुट्टू वारिसाई (Kuttu varisai) है, यह निहत्थे प्रकार की मार्शल आर्ट है।

थांग ता एक हथियार आधारित भारतीय सशस्त्र आर्ट है जिसे मणिपुर के मेइतेई द्धारा किया जाता है। मणिपुरी भाषा में, थांग का अर्थ है तलवार और टा का अर्थ है भाला, कला के प्राथमिक हथियारों का जिक्र है। थांग ता भी मणिपुरी नृत्य का एक लोकप्रिय रूप है।

कालबेलिया नृत्य राजस्थान का लोक नृत्य है। कालबेलिया नृत्य विशेष रूप से 'कालबेलिया' नामक राजस्थानी जनजाति द्वारा किया जाता है। इस नृत्य की लोकप्रियता दुनिया भर में इतनी अधिक है कि राजस्थान का कालबेलिया नृत्य और गीत अब वर्ष 2010 से यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में हैं। कालबेलिया नृत्य में, पुरुष विभिन्न पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाते हैं और महिलाएं नृत्य करती हैं। कालबेलिया नृत्य सभी राजस्थानी नृत्यों में सबसे कामुक नृत्यों में से एक है।

Q. 139) जीआई संरक्षित उत्पादों और उनके संबंधित राज्यों के निम्नलिखित मिलानों पर विचार करें:

S. No.	जीआई टैग किया गया उत्पाद	राज्य
1.	सोहराई-खोवर पेंटिंग	मध्य प्रदेश
2.	इडु मिश्मी टेक्सटाइल	त्रिपुरा
3.	चक- हाओ	मणिपुर

उपरोक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q. 139) Solution (c)

सोहराई और खोवर पेंटिंग झारखंड के हजारीबाग जिले में पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा प्रचलित एक भित्ति-चित्र कला है। दीवारों को पहले मिट्टी और गोबर के मिश्रण के साथ लेपित किया जाता है, और फिर चित्रित किया जाता है। परंपरागत रूप से झोपड़ी की दीवारों को सजाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, यह कागज और कपड़े पर भी किया जाता है ताकि इसे संरक्षकों को बेचा जा सके। उन्हें 2020 में भौगोलिक संकेत टैग मिला।

इडु मिश्मी वस्त्र अरुणाचल प्रदेश के हथकरघा उत्पाद हैं। इन वस्त्रों को बनाने के लिए यार्न नेटल पौधों से निकाले जाते हैं जो आमतौर पर जंगली क्षेत्रों में उगाए जाते हैं। बुने हुए पैटर्न अरुणाचल प्रदेश की सुंदरता से प्रेरित हैं। डिजाइनों में जटिल ज्यामितीय पैटर्न जैसे रेखाएं, कोण, त्रिकोण, समचतुर्भुज आकार निरंतर अनुक्रम के साथ शामिल हैं। ये हथकरघा वस्तुएँ अत्यधिक टिकाऊ, उज्ज्वल और आकर्षक होते हैं और सभी मौसमों और अवसरों में उपयोग किए जा सकते हैं।

चक-हाओ एक सुगंधित चिपचिपा (चिपचिपा) चावल है जो सदियों से मणिपुर में खेती में रहा है, और इसकी विशेष सुगंध की विशेषता है। चावल का रंग काला होता है और रेशेदार चोकर की परत और उच्च कच्चे फाइबर सामग्री की उपस्थिति के कारण 40-45 मिनट का सबसे लंबा खाना पकाने का समय लगता है। यह आम तौर पर सामुदायिक दावतों के दौरान खाया जाता है और इसे चक-हाओ खीर के रूप में परोसा जाता है।

Q.140) निम्नलिखित में से किसे भारत में भौगोलिक सुरक्षा प्रदान की गई है?

1. कांगड़ा चित्रकला
2. चेरियाल चित्रकला
3. मैसूर चित्रकला

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 140) Solution (d)

कांगड़ा पेंटिंग कांगड़ा की सचित्र कला है, जिसका नाम कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के नाम पर रखा गया है, जो एक पूर्व रियासत थी, जिसने कला को संरक्षण दिया था। यह 18वीं शताब्दी के मध्य में बसोहली चित्रकला की शैली के लुप्त होने के साथ प्रचलित हो गया। कांगड़ा चित्रों के मुख्य केंद्र गुलेर, बसोहली, चंबा, नूरपुर, बिलासपुर और कांगड़ा हैं। बाद में यह शैली मंडी, सुकेत, कुल्लू, अर्की, नालागढ़ और टिहरी गढ़वाल (मोला राम द्वारा प्रतिनिधित्व) तक भी पहुंची, और अब सामूहिक रूप से पहाड़ी चित्रकला के रूप में जानी जाती है, जो 17 वीं और 19 वीं शताब्दी के बीच राजपूत शासकों द्वारा संरक्षित शैली को कवर करती है।

चेरियाल स्क्रॉल चित्रकला नक्काशी कला का एक शैलीकृत संस्करण है, जो तेलंगाना के स्थानीय रूपांकनों में समृद्ध है। वे वर्तमान में केवल हैदराबाद, तेलंगाना में बनाए गए हैं। स्क्रॉल को एक कथा प्रारूप में चित्रित किया जाता है, जो कि एक फिल्म रोल या कॉमिक स्ट्रिप की तरह होता है, जिसमें भारतीय पौराणिक कथाओं की कहानियों को दर्शाया जाता है और पुराणों और महाकाव्यों की लघु कहानियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता है।

कर्नाटक में मैसूर पेंटिंग का एक लंबा और शानदार इतिहास है, इसकी उत्पत्ति अजंता के समय में हुई थी। मैसूर चित्रकला का विशिष्ट शैली विजयनगर काल के चित्रों से विकसित हुआ। भारत की मैसूर पेंटिंग में सोने की पतली पत्तियों का उपयोग किया गया है और इसके

लिए अधिक मेहनत की आवश्यकता होती है। इन चित्रों के सबसे लोकप्रिय विषयों में हिंदू देवी-देवता और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्य शामिल हैं।

Q. 141) मध्ययुगीन काल में राजपूत राज्यों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चौहान राजपूत शासकों में सबसे पहले थे।
2. राजपूतों के परमार वंश ने मालवा पर शासन किया था।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) दोनों 1 और 2
d) न तो 1 और न ही 2

Q. 141) Solution (b)

राजपूत साम्राज्य:

- राजपूतों का प्रभुत्व सातवीं और आठवीं शताब्दी से शुरू हुआ और बारहवीं शताब्दी में मुस्लिम विजय तक चला। उसके बाद भी, कई राजपूत राज्य लंबे समय तक जीवित रहे।
- मुस्लिम आक्रमण की अवधि में, राजपूत हिंदू धर्म और संस्कृति के मुख्य रक्षक थे।
- गुर्जर-प्रतिहार राजपूत शासकों में सबसे पहले थे। इसके पहले महान नेता हरिश्चंद्र थे। उसने राजपुताना में व्यापक क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और भीनमाल में अपनी राजधानी के साथ शासन किया।
- गुर्जरों ने विभिन्न शाखाओं में शासन किया। एक शाखा ने गुजरात और दूसरी अवंति पर शासन किया।
- प्रतिहारों ने बंगाल के पालों और दक्कन के राष्ट्रकूटों के साथ त्रिकोणीय मुकाबले में स्वयं को शामिल किया। बाद में प्रतिहार कमजोर हो गए।
- राजपूत जातियों में सबसे बहादुर चौहानों ने अजमेर पर शासन किया। विग्रहराज उनका सबसे महत्वपूर्ण राजा था, जिसने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था। इसलिए चौहानों को गोरी के मुहम्मद के अधीन मुसलमानों के हमले का सामना करना पड़ा।
- परमार भी इस काल के महत्वपूर्ण राजपूत शासक थे। उन्होंने मालवा पर शासन किया। सबसे महत्वपूर्ण राजा भोज था। उनकी सैन्य विजय और सांस्कृतिक योगदान राजपूतों के इतिहास में उल्लेखनीय हैं।
- लगातार लड़ाई ने राजपूतों को कमजोर कर दिया। इसके अलावा, वे एक समान शत्रु के खिलाफ कभी एकजुट नहीं हुए। उनकी राजनीतिक दूरदर्शिता और निरंतर प्रतिद्वंद्विता की कमी ने मुस्लिम आक्रमणकारियों के किसी भी संयुक्त विरोध को कम किया।

Q. 142) निम्नलिखित में से कौन किताब-ए-हिंद के लेखक हैं?

a) अलबरुनी
b) बरनी
c) फिरदौसी
d) महमूदी

Q. 142) Solution (a)

इस्लामी स्वर्ण युग के दौरान अलबरूनी एक ईरानी विद्वान और बहुश्रुत थे। वह किताब-ए-हिंद के लेखक थे।

किताब अल-हिंद अलबरूनी की वर्षों की कड़ी मेहनत और लगन का परिणाम है। उन्होंने भारत के धार्मिक, राजनीतिक और बौद्धिक पहलुओं के बारे में लिखा था। पुस्तक को प्रत्येक 80 अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसमें एक उप-शीर्षक है जो उन विषयों को दर्शाता है जिनसे यह संबंधित है।

Q. 143) भारत के मध्ययुगीन काल में मुस्लिम आक्रमण के खिलाफ हिंदू राज्यों की विफलता के निम्नलिखित में से कौन से कारण हैं?

1. उनमें एकता की कमी
2. युद्ध के दौरान घुड़सवार सेना पर निर्भरता
3. हिंदू राज्यों की घटती शक्ति

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 143) Solution (b)

मुस्लिम आक्रमण के खिलाफ हिंदू राज्यों के पतन के कारणों का ऐतिहासिक रूप से विश्लेषण किया जाना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण कारण यह था कि उनमें एकता का अभाव था। वे गुटों में बंटे हुए थे। राजपूत राजकुमारों ने अपने आपसी संघर्षों से एक दूसरे को थका दिया था।

दूसरे, कई हिंदू राज्य सत्ता में गिरावट महसूस कर रहे थे। उनके सैन्य तरीके पुराने थे और मुसलमानों की तुलना में बहुत निम्न थे।

भारतीयों ने हाथियों पर भरोसा करना जारी रखा जबकि मुसलमानों के पास तेज-तर्रार घुड़सवार सेना थी। मुस्लिम सैनिकों के पास बेहतर संगठन और योग्य नेता थे।

उनके धार्मिक उत्साह और भारत की अधिक संपत्ति के लिए उनके लालच ने उन्हें प्रोत्साहन दिया।

हिंदुओं के बीच, लड़ने का कर्तव्य एक विशेष वर्ग, क्षत्रियों तक ही सीमित था। इसके अलावा, हिंदू हमेशा रक्षात्मक स्थिति में थे, जो हमेशा एक कमजोर स्थिति दर्शाती थी।

Q. 144) मध्यकालीन भारत के इतिहास के संदर्भ में, "चहलगनी" (corps of Forty) थी:

a) दिल्ली सल्तनत के सुल्तान की व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए पुरुषों का एक उच्च प्रशिक्षित समूह

b) मध्यकाल के दौरान मौजूद राजपूताना राज्यों की संख्या
c) कुशल भू-राजस्व प्रशासन के लिए विजयनगर साम्राज्य के दौरान राजा द्वारा नियुक्त पुरुषों का एक समूह
d) सुल्तानों की इच्छा के अनुसार दिल्ली सल्तनत का प्रशासन करने वाले कुलीनों का एक निकाय

Q. 144) Solution (d)

द कॉर्प्स ऑफ फोर्टी को चालीसा दल या तुर्कान-ए-चहलगनी के नाम से भी जाना जाता है, जो 40 तुर्किक और गैर-तुर्किक गुलाम अमीरों की परिषद थी, जिन्होंने सुल्तान की इच्छा के अनुसार दिल्ली सल्तनत का प्रशासन किया था। यह भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में पहला नियमित मंत्रिस्तरीय निकाय था। यद्यपि सारी शक्ति सुल्तान में निहित थी, राज्य के मुखिया, सरकार के मुखिया, सल्तनत की सेनाओं के कमांडर और न्यायिक प्रणाली में अंतिम निर्णय लेने वाले के रूप में, उसे अपने राज्य को प्रभावी ढंग से शासन करने में मदद की आवश्यकता थी।

यह शुरू में कुतुब अल-दीन ऐबक द्वारा बनाया गया था और बाद में इल्तुतमिश द्वारा संशोधित किया गया था। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद सत्ता का संतुलन बदल गया और सुल्तान इन कुलीनों की कठपुतली बन गया। वे इल्तुतमिश के बच्चों और पोते-पोतियों को सिंहासन पर बिठाते और उन्हें पदच्युत करते थे, जब वे परेशानी में पड़ जाते थे तो अक्सर उनकी हत्या कर देते थे।

बलबन बहुत शक्तिशाली साबित हुआ और उसने लगभग चहलगनी को नष्ट कर दिया। उसने तुर्की कुलीनों के खिलाफ कड़े कदम उठाए और गैर-तुर्की को नियुक्त किया। उन्होंने उन सभी के खिलाफ 'रक्त और लौह' की नीति का पालन किया जिन्होंने उनका विरोध किया। वह स्वयं चहलगनी का हिस्सा था और उसकी शक्ति और कमजोरियों को जानता था। वह आश्वस्त था कि यह समूह बहुत विनाशकारी कार्य कर रहा था और सुल्तान और दिल्ली की सल्तनत की स्थिरता के लिए एक बड़ा खतरा था।

उन्होंने उन्हें खत्म करने के लिए हर तरह के निष्पक्ष और गलत तरीके अपनाए। उसने कुछ कुलीनों को भी जहर देकर मार डाला। बलबन ने जागीरों पर कुलीनों के वंशानुगत नियंत्रण को समाप्त कर दिया। उसने उन सभी कुलीनों की जागीरें जब्त कर लीं जो उसके निर्देशों से थोड़ा भी विचलित हुए। उन्होंने कुलीनों के लिए सख्त अदालती शिष्टाचार निर्धारित किया।

Q. 145) निम्नलिखित पर विचार करें:

1. कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद
2. अढ़ाई दिन का झोपरा
3. हौज खास परिसर

उपरोक्त में से किस वास्तुकला का निर्माण गुलाम वंश के शासन काल में हुआ था?

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) केवल 2 और 3

Q. 145) Solution (b)

कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद:

- कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, जिसे कुतुब मस्जिद या दिल्ली की महान मस्जिद के रूप में भी जाना जाता है, को कुतुब-उद-दीन ऐबक, मामलुक या गुलाम वंश के संस्थापक द्वारा स्थापित किया गया था तथा 27 हिंदू और जैन मंदिरों से सामग्री का उपयोग करके बनाया गया था।
- यह भारत की इस्लामी विजय के बाद दिल्ली में बनी पहली मस्जिद थी और भारतीय उपमहाद्वीप में गौरी वास्तुकला का सबसे पुराना जीवित उदाहरण था।
- मस्जिद में उपयोग किए जाने वाले सजावटी पैटर्न अरबी शिलालेखों के साथ हिंदू और इस्लामी आदर्शों के मिश्रण के साथ पुष्प रूपांकन हैं।

अढ़ाई दिन का झोंपरा:

- अढ़ाई दिन का झोपड़ा राजस्थान के अजमेर शहर में एक बड़ी और भव्य संरचना है।
- परिसर के बरामदे के अंदर बड़ी संख्या में स्थापत्य के सदस्य और मंदिरों की मूर्तियां पड़ी हैं।
- यह हेरात के अबू बक्र द्वारा डिजाइन किया गया था और गुलाम वंश के कुतुब-उद-दीन-ऐबक द्वारा निर्मित किया गया था। संरचना 1199 ईस्वी में पूरी हुई थी और 1213 ईस्वी में दिल्ली के इल्तुतमिश द्वारा इसे और सुशोभित किया गया था।

हौज खास कॉम्प्लेक्स:

- हौज खास परिसर मूल रूप से खिलजी वंश के शासक अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित एक पानी की टंकी थी।
- सुल्तान फ़िरोज़ शाह ने इस क्षेत्र को और विकसित किया, मदरसा-ए-फ़िरोज़ शाही नामक एक धार्मिक विश्वविद्यालय में जोड़ा, जिसने छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया।
- पानी की टंकियों और एक बगीचे के लिए आसान पहुँच के साथ स्कूल की इमारतों को 'L' अक्षर के आकार का बनाया गया था।

Q. 146) दिल्ली सल्तनत के अधीन प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इक्ता भूमि अधिकारियों को उनकी सेवाओं के भुगतान के अनुसार उन्हें सौंपी गई भूमि थी।
2. खालिसा भूमि ग्राम परिषदों के सीधे नियंत्रण में भूमि थी।
3. इनाम भूमि युद्ध में उनकी सेवाओं के लिए सैनिकों को दी गई भूमि थी।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 146) Solution (a)

भारत में अपनी स्थिति को मजबूत करने के बाद, दिल्ली के सुल्तानों ने भू-राजस्व प्रशासन में सुधारों की शुरुआत की। भूमि को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था:

- इक्ता भूमि - अधिकारियों को उनकी सेवाओं के भुगतान के अनुसार इक्ता के रूप में सौंपी गई भूमि।

- खलीसा भूमि - सुल्तान के सीधे नियंत्रण में भूमि और एकत्र राजस्व शाही दरबार और शाही घराने के रखरखाव के लिए खर्च किया गया था।
- इनाम भूमि - धार्मिक नेताओं या धार्मिक संस्थानों को सौंपी गई या दी गई भूमि।

किसान अपनी उपज का एक तिहाई भू-राजस्व के रूप में देते थे, और कभी-कभी उपज का आधा भी देते थे। वे अन्य करों का भुगतान भी करते थे। बार-बार आए अकाल ने उनके जीवन को और दयनीय बना दिया था।

Q. 147) सल्तनत काल के दौरान अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. शहरीकरण की प्रक्रिया ने गति पकड़ी।
2. इस काल में सूती वस्त्र और रेशम उद्योग का विकास हुआ।
3. अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान टंका के रूप में जाने जाने वाले सोने के सिक्के लोकप्रिय हो गए।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 3
d) केवल 1 और 3

Q. 147) Solution (a)

सल्तनत काल के दौरान अर्थव्यवस्था:

- सल्तनत काल में नगरीकरण की प्रक्रिया ने गति पकड़ी।
- इस काल में अनेक नगरों और नगरों का विकास हुआ। इनमें लाहौर, मुल्तान, ब्रोच, अन्हिलवाड़ा, लखनौती, दौलताबाद, दिल्ली और जौनपुर महत्वपूर्ण थे। दिल्ली पूर्व में सबसे बड़ा शहर बना रहा।
- व्यापार और वाणिज्य के विकास का वर्णन समकालीन लेखकों ने किया था। भारत ने फारस की खाड़ी और पश्चिम एशिया के देशों और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को भी बड़ी संख्या में वस्तुओं का निर्यात किया।
- विदेशी व्यापार मुल्तानियों और अफगान मुसलमानों के नियंत्रण में था। अंतर्देशीय व्यापार में गुजरात के मारवाड़ी व्यापारियों और मुस्लिम बोहरा व्यापारियों का वर्चस्व था।
- सुगम परिवहन और संचार के लिए सड़कों के निर्माण और उनके रखरखाव की सुविधा। विशेष रूप से शाही सड़कों को अच्छी स्थिति में रखा गया था।
- यात्रियों की सुविधा के लिए राजमार्गों पर सराय या विश्राम गृह बनाए गए थे।
- इस काल में सूती वस्त्र और रेशम उद्योग का विकास हुआ। रेशम उत्पादन को बड़े पैमाने पर शुरू किया गया जिससे भारत कच्चे रेशम के आयात के लिए अन्य देशों पर कम निर्भर हो गया।
- कागज उद्योग का विकास हुआ था और 14वीं और 15 वीं शताब्दी से कागज का व्यापक उपयोग होने लगा था। अन्य शिल्प जैसे चमड़ा बनाना, धातु-शिल्प और कालीन-बुनाई बढ़ती माँग के कारण फले-फूले।
- शाही कारखानों ने सुल्तान और उसके परिवार को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की। वे सोने, चांदी और सोने के बर्तनों से बनी महंगी वस्तुओं का निर्माण करते थे।

- कुलीनों ने सुल्तानों की जीवन शैली का भी अनुकरण किया और विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत किया। उन्हें अच्छी तरह से भुगतान किया गया था और उन्होंने भारी संपत्ति जमा की थी।
- सिक्का प्रणाली भी दिल्ली सल्तनत के दौरान विकसित हुई थी। इल्तुतमिश ने कई प्रकार के चांदी के टंका जारी किए। एक चांदी का टंका खिलजी शासन के दौरान 48 जीतल और तुगलक शासन के दौरान 50 जीतल में विभाजित किया गया था।
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में दक्षिण भारतीय विजय के बाद सोने के सिक्के या दीनार लोकप्रिय हो गए।
- तांबे के सिक्के संख्या में कम और कालातीत थे। मुहम्मद बिन तुगलक ने न केवल सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया था बल्कि कई प्रकार के सोने और चांदी के सिक्के भी जारी किए थे। आठ अलग-अलग जगहों पर इनका खनन किया गया था। उसके द्वारा कम से कम पच्चीस प्रकार के सोने के सिक्के जारी किए गए।

Q. 148) निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है/हैं?

S.No.	पुस्तक	लेखक
1.	तारीखे-फ़िरोज़ शाही	ज़िया नखशबी
2.	तबक़ात-ए-नासरी	मिन्हाज-उस-सिराज
3.	खज़ाइन-उल-फ़ुतुह	अमीर खुसरो

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q. 148) Solution (b)

तारिख-ए-फ़िरोज़ शाही तत्कालीन वर्तमान शासक फ़िरोज़ शाह तुगलक तक दिल्ली सल्तनत के इतिहास की व्याख्या थी। इसे जियाउद्दीन बरनी ने लिखा था।

तबक़त-ए-नासिरी, मिन्हाज-ए-सिराज द्वारा फारसी में लिखी गई इस्लामी विश्व का एक विस्तृत इतिहास है। तबक़त-ए-नासिरी का उद्देश्य ईरान और मध्य एशिया में पैदा हुए मुस्लिम राजवंशों का हिसाब देना था। 1229-1230 तक दिल्ली के सुल्तान के खिलाफ बंगाल में खिलजी विद्रोह के लिए तबक़त-ए-नासिरी एकमात्र स्रोत है।

खज़ाइन उल-फ़ुतुह (विजय का खजाना) अमीर खुसरो द्वारा अला उद-दीन के निर्माण कार्यों, युद्धों और प्रशासनिक सेवाओं को रिकॉर्ड करते हुए लिखा गया था।

Q. 149) कृष्ण देव राय निम्नलिखित में से किस वंश के थे?

a) संगम राजवंश
b) सालुव राजवंश
c) तुलुव राजवंश
d) अरविदु राजवंश

Q. 149) Solution (c)

कृष्णदेवराय विजयनगर साम्राज्य के एक सम्राट थे जिन्होंने 1509-1529 तक शासन किया था। वह तुलुव राजवंश के तीसरे शासक थे और उन्हें इसका सबसे बड़ा शासक माना जाता है।

दिल्ली सल्तनत के पतन के बाद उसके पास भारत में सबसे बड़ा साम्राज्य था

वह बीजापुर, गोलकुंडा, बहमनी सल्तनत और ओडिशा के गजपतियों के शासकों को हराकर भारत के प्रायद्वीप का प्रमुख शासक बन गया, और भारत के सबसे शक्तिशाली हिंदू शासकों में से एक था।

विभिन्न यात्रा वृत्तांतों से संकेत मिलता है कि राजा न केवल एक सक्षम प्रशासक था, बल्कि एक उत्कृष्ट सेनापति भी था, जो युद्ध में सामने से अग्रणी था और यहाँ तक कि घायलों की देखभाल भी करता था। कई मौकों पर, राजा ने युद्ध की योजनाओं को अचानक बदल दिया, एक हारी हुई लड़ाई को जीत में बदल दिया।

Q.150) निम्नलिखित में से कौन विजयनगर साम्राज्य के कृष्णदेव राय के दरबार में आया था?

1. डोमिंगो पायस
2. अब्दुर रज्जाक
3. निकोलो कोंटी

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) केवल 2 और 3

Q. 150) Solution (a)

डोमिंगो पायस एक पुर्तगाली यात्री था जिसने विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया था। उनकी यात्रा राजा कृष्ण देव राय के शासन के दौरान हुई थी। पायस ने अपने क्रोनिका डॉस रीस डी बिस्नागा ("विजयनगर राजाओं का क्रॉनिकल") में विजयनगर राज्य की अपनी यात्रा को दर्ज किया। उनका विस्तृत विवरण उस साम्राज्य और उसकी राजधानी, विजयनगर (हंपी) के कुछ ज्ञात विवरणों में से एक है, जो विदेश से एक यात्री द्वारा किया गया था।

अब्दुर रज्जाक एक फारसी था, एक तैमूर इतिहासकार और इस्लामी विद्वान था। वह कुछ समय के लिए फारस के तैमूर राजवंश के शासक शाहरुख के राजदूत थे। देव राय द्वितीय के समय में विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया।

निकोलो कोंटी एक इतालवी व्यापारी, खोजकर्ता और लेखक थे। उन्होंने देव राय- I (तुलुव वंश के शासक) के शासनकाल के दौरान विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया था।

Q. 151) शेरशाह सूरी के शासन काल में प्रशासन के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से युग्म सही है/हैं?

S. No.	मंत्री	प्रभारी
1.	दीवान-ए-आरिज़ (Diwan-i-Ariz)	सेना के प्रभारी
2.	दीवान-ए-रसालत (Diwan-i-Rasalat)	संचार मंत्री
3.	दीवान-ए-इंशा (Diwan-i-Insha)	विदेश मंत्री

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 1 और 2

c) केवल 3

d) 1, 2 और 3

Q. 151) Solution (a)

शेर शाह का प्रशासन:

शेरशाह सूरी का शासन पाँच वर्षों तक चला, उन्होंने एक शानदार प्रशासनिक व्यवस्था का आयोजन किया। केंद्र सरकार में कई विभाग शामिल थे। राजा को चार महत्वपूर्ण मंत्रियों द्वारा सहायता प्रदान की गई थी:

1. दीवान-ए-विजारत - जिसे वज़ीर भी कहा जाता है - राजस्व और वित्त के प्रभारी
2. दीवान-ए-आरिज/ अर्ज - सेना के प्रभारी
3. दीवान-ए-रसालत- विदेश मंत्री
4. दीवान-ए-इंशा- संचार मंत्री

भू-राजस्व प्रशासन शेरशाह के अधीन सुव्यवस्थित था। भूमि सर्वेक्षण सावधानीपूर्वक किया गया था। सभी कृषि योग्य भूमि को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया - अच्छा, मध्यम और बुरा। राज्य का हिस्सा औसत उपज का एक तिहाई था और इसका भुगतान नकद या फसल के रूप में किया जाता था। उनके राजस्व सुधारों ने राज्य के राजस्व में वृद्धि की।

शेर शाह ने "दाम" नामक नए चांदी के सिक्के चलाए और वे 1835 तक प्रचलन में थे। शेर शाह ने चार महत्वपूर्ण राजमार्गों को बिछाकर संचार में भी सुधार किया था। वो थे:

1. सोनारगांव से सिंध
2. आगरा से बुरहामपुर

3. जोधपुर से चित्तौड़
4. लाहौर से मुल्तानी

यात्रियों की सुविधा के लिए राजमार्गों पर विश्राम गृह बनाए गए। पुलिस को कुशलतापूर्वक पुनर्गठित किया गया था और उसके शासन के दौरान अपराध कम था।

सैन्य प्रशासन को भी कुशलतापूर्वक पुनर्गठित किया गया और शेर शाह ने अलाउद्दीन खिलजी से घोड़ों की ब्रांडिंग जैसे कई विचार ग्रहण किया।

Q. 152) मुगल शासन के तहत प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें?

1. मनसबदारों की नियुक्ति का समर्थन करने के लिए मीर सामां/ समन उत्तरदायी थे।
2. मीर बख्शी शाही कारखानों का प्रभारी अधिकारी था।
3. दीवाने कुल राजस्व और वित्त के लिए उत्तरदायी था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 3
d) केवल 1 और 3

Q. 152) Solution (c)

मुगल साम्राज्य का अखिल भारतीय चरित्र था। बाबर और हुमायूँ अपने संक्षिप्त शासन के कारण और सैन्य मामलों में व्यस्त होने के कारण प्रशासन में एक निश्चित प्रणाली या पैटर्न/व्यवस्था स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सके।

अकबर के शासनकाल के अंत तक हम कार्यालयों के प्रमुखों को सौंपे गए कार्यों के साथ विस्तृत कार्यालयों की स्थापना पाते हैं। उनके सार्वजनिक और निजी आचरण दोनों को निर्देशित करने वाले नियम और कानून सभी तय किए गए थे ताकि अधिकारियों को साम्राज्य के साधन के रूप में परिवर्तित किया जा सके।

मीर समन: मीर समन शाही कारखानों का प्रभारी अधिकारी होता था। उन्हें खान समन के नाम से भी जाना जाता था। वह मुख्य कार्यकारी अधिकारी था जो शाही घराने के लिए सभी प्रकार की वस्तुओं की खरीद और उनके भंडारण के लिए जिम्मेदार था। एक अन्य महत्वपूर्ण कर्तव्य विभिन्न वस्तुओं के निर्माण की निगरानी करना था, चाहे वह युद्ध के हथियार हों या विलासिता की वस्तुएं। वह सीधे बादशाह के अधीन था लेकिन धन की मंजूरी और खातों के ऑडिट के लिए उसे दीवान से संपर्क करना था।

मीर बख्शी: दिल्ली सल्तनत के मिर्ज़ ने मुगलों के अधीन अपना नाम बदलकर मीर बख्शी कर लिया। मनसबदारों की नियुक्ति के सभी आदेश और उनके वेतन के कागजात उनके द्वारा अनुमोदित और पारित किए गए थे। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से घोड़ों (दाग) की ब्रांडिंग की निगरानी की और सैनिकों के मस्टर-रोल (चेहरा) की जाँच की। उनके सत्यापन के आधार पर वेतन की राशि प्रमाणित की गई। तभी

दीवान ने अपने अभिलेखों में प्रविष्टि की और उसे राजा के सामने रख दिया। मीर बख्शी ने सैन्य विभाग से संबंधित सभी मामलों को सम्राट के सामने रखा। सेवा चाहने वाले नए प्रवेशकों को 'मीर बख्शी द्वारा सम्राट' के समक्ष पेश किया गया था

दीवाने कुल: मुख्य दीवान (दीवाने कुल) को राजस्व और वित्त के लिए जिम्मेदार बनाया गया था। उनका प्राथमिक कर्तव्य शाही खजाने की निगरानी करना और सभी खातों की जांच करना था। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सभी विभागों में सभी लेनदेन और भुगतान का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रांतीय दीवानों के साथ सीधा संपर्क बनाए रखा और उनके कामकाज को उनकी निगरानी में रखा गया। राजस्व से जुड़े सभी आधिकारिक कागजातों के सत्यापन के लिए उनकी मुहर और हस्ताक्षर आवश्यक थे। साम्राज्य की संपूर्ण राजस्व वसूली और व्यय मशीनरी उसके अधीन थी। उनकी मुहर के बिना नियुक्ति या पदोन्नति का कोई भी नया आदेश प्रभावित नहीं हो सकता था। दीवान की शक्ति की जाँच करने के लिए, मुगल सम्राट ने दीवान को राज्य के वित्त पर प्रतिदिन रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा।

Q. 153) मुगल शासन के अधीन प्रशासन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मुगलों के अधीन बंदरगाह प्रशासन की अलग-अलग स्वतंत्र इकाइयाँ थीं।
2. परगना सरकार के नीचे की प्रशासनिक इकाइयाँ थीं।
3. अमलगुजार परगना का कार्यकारी प्रमुख था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q. 153) Solution (b)

बंदरगाह प्रशासन: मुगल समुद्री बंदरगाहों के आर्थिक महत्व से अवगत थे क्योंकि ये तेज वाणिज्यिक गतिविधियों के केंद्र थे। बंदरगाह प्रशासन प्रांतीय प्राधिकरण से स्वतंत्र था। बंदरगाहों के गवर्नर को मुतासद्दी कहा जाता था, जिसे सीधे सम्राट द्वारा नियुक्त किया जाता था। कभी-कभी मुतसद्दी (mutasaddi) का कार्यालय नीलाम कर दिया जाता था और उच्चतम बोली लगाने वाले को दे दिया जाता था। मुतसद्दी ने वस्तु पर कर एकत्र किया और एक कस्टम-हाउस बनाए रखा। उन्होंने बंदरगाह पर टकसाल हाउस की भी निगरानी की। शाहबंदर उसका अधीनस्थ था जो मुख्य रूप से कस्टम-हाउस से संबंधित था।

परगना प्रशासन: परगना सरकार के नीचे की प्रशासनिक इकाइयाँ थीं। शिकदार परगने का कार्यकारी अधिकारी था और राजस्व वसूली में आमिलों की सहायता करता था। आमिल परगना स्तर पर भी राजस्व संग्रह की देखभाल करता था। उनके कर्तव्य सरकार के स्तर पर अमलगुजर के समान थे। कानूनगो ने अपने क्षेत्र में भूमि से संबंधित सभी रिकॉर्ड रखे। उसे परगना में विभिन्न फसलों का ध्यान रखना था।

अमलगुजार: सरकार के स्तर पर सबसे महत्वपूर्ण राजस्व संग्रहकर्ता आमिल या अमलगुजर था। उनका प्राथमिक कर्तव्य अन्य अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से राजस्व संग्रह का आकलन और पर्यवेक्षण करना था। एक अच्छा आमिल भूमि टिंडर की खेती को बढ़ाने और किसानों को बिना किसी जबरदस्ती के स्वेच्छा से राजस्व का भुगतान करने के लिए प्रेरित करने वाला था। सारा हिसाब-किताब उन्हीं को रखना था। उनके द्वारा दैनिक प्राप्तियों और व्यय की रिपोर्ट प्रांतीय दीवान को भेजी जाती थी।

Q. 154) निम्नलिखित में से कौन-सा/से स्थापत्य शैली के प्रमुख तत्व हैं जो अकबर के संरक्षण में विकसित हुए थे?

1. निर्माण सामग्री के रूप में सफेद संगमरमर का व्यापक उपयोग।
2. मेहराब मुख्य रूप से संरचनात्मक रूप के बजाय सजावटी रूप में उपयोग किए जाते हैं
3. ट्रैबीटेड निर्माण (trabeated construction) का व्यापक उपयोग

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 154) Solution (b)

अकबर के शासनकाल को मुगल वास्तुकला के प्रारंभिक काल के रूप में लिया जा सकता है। यह इंडो-इस्लामिक स्थापत्य के सम्मिश्रण के बेहतरीन उदाहरण का प्रतिनिधित्व करता है।

अकबर के शासनकाल की वास्तुकला स्वदेशी तकनीकों के प्रोत्साहन और अन्य देशों के अनुभवों के चुनिंदा उपयोग का प्रतिनिधित्व करती है। अकबर के संरक्षण में विकसित हुई स्थापत्य शैली के प्रमुख तत्वों को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है:

- इमारतों में मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर का निर्माण सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है;
- ट्रैबीटेड निर्माण का व्यापक उपयोग;
- मेहराब मुख्य रूप से संरचनात्मक रूप के बजाय सजावटी रूप में उपयोग किए जाते हैं;
- गुंबद 'लोदी' प्रकार का था, कभी-कभी खोखला बनाया जाता था लेकिन तकनीकी रूप से कभी भी वास्तविक दोहरे क्रम का नहीं होता था;
- खंभों के शाफ्ट बहुआयामी थे और इन खंभों की राजधानियों ने हमेशा ब्रैकेट समर्थन का रूप ले लिया; तथा
- सजावट में टिकाऊ तौर पर नक्काशीदार या जड़े हुए पैटर्न शामिल थे जो अंदरूनी हिस्सों पर चमकीले रंग के पैटर्न के पूरक थे।

निर्माण की ट्रैबीटेड प्रणाली: वास्तुकला में यह एक इमारत प्रणाली है जहां मजबूत क्षैतिज तत्वों को मजबूत लंबवत तत्वों द्वारा उनके बीच बड़े स्थान के साथ रखा जाता है। यह आमतौर पर एक छत को पकड़ने के लिए उपयोग किया जाता है, जो कि इमारत के किसी भी उपयोग के लिए नीचे एक बड़े पैमाने पर खुली जगह बना देता है।

Q. 155) निम्नलिखित में से कौन भारत में मुगल शासन के पतन के कारण थे?

1. उत्तराधिकार के एक निश्चित कानून की अनुपस्थिति
2. कुलीनता का पतन

3. ईरानी और दुर्रानी राज्यों के आक्रमण

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 155) Solution (d)

मुगल साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया औरंगजेब के शासनकाल के दौरान शुरू हुई, लेकिन 1707 में उनकी मृत्यु के बाद ही इसने गति पकड़ी। मुगलों के पतन के कुछ मुख्य कारण इस प्रकार थे:

1. मुगलों की सरकार एक व्यक्तिगत निरंकुशता थी और इसलिए उसकी सफलता शासक के चरित्र पर निर्भर करती थी। बाद के मुगल बेकार थे और राज्य के प्रशासन की उपेक्षा करते थे।
2. उत्तराधिकार के एक निश्चित नियम के अभाव में, उत्तराधिकार का युद्ध हमेशा होता था; इसने सरकार की स्थिरता को कमजोर कर दिया, और देशभक्ति की कीमत पर पक्षपात को बढ़ावा दिया।
3. शासकों के पतन के कारण कुलीन वर्ग का पतन हुआ, जिसमें गुटबाजी और साज़िशों के कारण साम्राज्य को भारी कीमत चुकानी पड़ी।
4. सेना का पतन भी साम्राज्य के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।
5. कमजोर शासकों, विशेषकर परिवहन और संचार की मौजूदा परिस्थितियों में, एक केंद्रीय प्राधिकरण से कुशलतापूर्वक शासित होने के लिए साम्राज्य बहुत विशाल और बोझिल हो गया था।
6. औरंगजेब की धार्मिक नीति काफी हद तक जिम्मेदार थी, जिसके कारण राजपूतों, सिखों, जाटों और मराठों ने विद्रोह किया।
7. औरंगजेब की दक्कन नीति पूरी तरह विफल रही और मुगल साम्राज्य के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण थी।
8. ईरानी और दुर्रानी राज्यों के आक्रमणों ने मुगल साम्राज्य को सांघातिक प्रहार का झटका दिया।

Q. 156) मराठा प्रशासन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मीरासदार निवासी कृषक थे जिन्हें अधिभोग/कब्ज़े के वंशानुगत अधिकार प्राप्त थे।
2. अष्टप्रधान आठ मंत्रियों की एक परिषद थी जो मराठा साम्राज्य का प्रशासन करती थी

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 156) Solution (c)

मीरासदार गाँव के निवासी थे, जिनके पास अपनी भूमि पर स्थायी स्वामित्व का अधिकार था, और जब तक वे अपना किराया चुकाते हैं, तब तक उन्हें हटाया या बेदखल नहीं किया जा सकता था। मीरासदारों की संपत्ति वंशानुगत और बिक्री योग्य थी, और भूमि कर का भुगतान न करने पर बेदखल होने पर भी, मीरासदारों ने लंबी अवधि के लिए अपनी पुश्तैनी कृषि भूमि को वसूल करने का अधिकार नहीं खोया।

अष्टप्रधान (आठ की परिषद) आठ मंत्रियों की एक परिषद थी जो मराठा साम्राज्य का प्रशासन करती थी। इस प्रणाली की स्थापना शिवाजी ने की थी। मंत्रिस्तरीय पदनाम संस्कृत भाषा से लिए गए थे और इसमें शामिल थे:

- पंतप्रधान या पेशवा - प्रधान मंत्री, साम्राज्य का सामान्य प्रशासन
- अमात्य या मजूमदार - वित्त मंत्री, साम्राज्य के खातों का प्रबंधन
- सचिव - सचिव, शाही शिलालेख तैयार करना
- मंत्री - आंतरिक मंत्री, आंतरिक मामलों का प्रबंधन विशेष रूप से खुफिया और जासूसी
- सेनापति - कमांडर-इन-चीफ, सेना का प्रबंधन और साम्राज्य की रक्षा
- सुमंत - विदेश मंत्री, अन्य संप्रभुओं के साथ संबंधों का प्रबंधन करने के लिए
- न्यायाध्याक्ष - मुख्य न्यायाधीश, दीवानी और आपराधिक मामलों पर न्याय देना
- पंडितराव - उच्च पुजारी, आंतरिक धार्मिक मामलों का प्रबंधन

Q. 157) परवर्ती मुगलों के शासन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जहांदार शाह ने जजिया को पुनः शुरू किया।
2. निजाम-उल-मुल्क ने अहमद शाह के शासनकाल के दौरान हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 157) Solution (d)

जहांदार शाह (मार्च 1712-फरवरी 1713):

- जुल्फिकार खान की मदद से जहांदार शाह बादशाह बना। जुल्फिकार खान को प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया था।
- उसने साम्राज्य की वित्तीय स्थिति में सुधार के लिए इज़ारा प्रणाली की शुरुआत की।
- उसने जजिया को समाप्त कर दिया। जजिया कर एक प्रति व्यक्ति वार्षिक कराधान था जो इस्लामी कानून द्वारा शासित राज्य के स्थायी गैर-मुस्लिम विषयों पर वित्तीय प्रभार के रूप में लगाया जाता था।

1724 में निजाम-उल-मुल्क वजीर बने और मुहम्मद शाह (1719-48) के शासनकाल के दौरान हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इससे पहले मुहम्मद शाह ने निजाम-उल-मुल्क की मदद से सैय्यद बंधुओं- अब्दुल्ला खान और हुसैन अली (जिन्हें 'किंग मेकर्स' के नाम से जाना जाता है) को मार डाला।

Q. 158) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सफदर जंग अवध की स्वतंत्र रियासत के संस्थापक थे।
2. मुर्शिद कुली खान स्वतंत्र बंगाल राज्य के संस्थापक थे।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) दोनों 1 और 2

d) न तो 1 और न ही 2

Q. 158) Solution (b)

अवध:

अवध की स्वतंत्र रियासत के संस्थापक सआदत खान थे, जिन्हें बुरहान-उल-मुल्क (Burhan-ul-Mulk) के नाम से जाना जाता था। सआदत खां शिया थे। वह सैय्यद बंधुओं के खिलाफ एक साजिश में शामिल हो गया था, जिसके परिणामस्वरूप उसे बढ़ा हुआ मनसब दिया गया था। बाद में, उन्हें अदालत से बाहर निकाल दिया गया, उन्हें एक नया स्वतंत्र राज्य खोजने के लिए प्रेरित किया गया। सआदत खान ने नादिर शाह के दबाव के कारण आत्महत्या कर ली, जो उससे भारी लूट की मांग कर रहा था। वह सफदर जंग द्वारा अवध के नवाब के रूप में सफल हुआ था।

बंगाल:

मुर्शिद कुली खान स्वतंत्र बंगाल राज्य के संस्थापक थे। वह एक सक्षम शासक था और उसने बंगाल को एक समृद्ध राज्य बनाया। 1727 में उनके पुत्र शुजाउद्दीन ने उनका उत्तराधिकारी बनाया। उनके उत्तराधिकारी, सरफराज खान, को 1740 में घेरिया में बिहार के डिप्टी गवर्नर अलीवर्दी खान ने मार डाला, जिन्होंने सत्ता संभाली और वार्षिक श्रद्धांजलि देकर स्वयं को मुगल सम्राट से स्वतंत्र कर लिया।

Q. 159) भारत में पुर्तगाली शक्ति के पतन के लिए निम्नलिखित में से कौन से कारक उत्तरदायी थे?

1. मलय द्वीपसमूह की ओर पुर्तगाली हितों का विचलन
2. मराठों का उदय
3. पुर्तगालियों की धार्मिक नीतियां

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) 1, 2 और 3

Q. 159) Solution (b)

पुर्तगालियों का पतन:

- 18वीं शताब्दी तक, भारत में पुर्तगालियों ने अपना व्यावसायिक प्रभाव खो दिया, हालांकि उनमें से कुछ ने अभी भी अपनी व्यक्तिगत क्षमता में व्यापार किया और कई ने चोरी और डकैती की। वास्तव में, कुछ पुर्तगालियों द्वारा हुगली का इस्तेमाल बंगाल की खाड़ी में समुद्री डकैती के लिए एक अड्डे के रूप में किया गया था।
- पुर्तगालियों का पतन कई कारणों से हुआ। भारत में पुर्तगालियों द्वारा प्राप्त स्थानीय लाभ मिस्र, फारस और उत्तर भारत में शक्तिशाली राजवंशों के उदय और अशांत मराठों के उनके तत्काल पड़ोसियों के रूप में उदय के साथ कम हो गए थे। (मराठों ने 1739 में पुर्तगालियों से साल्सेट और बेसिन पर कब्जा कर लिया।)
- पुर्तगालियों की धार्मिक नीतियों, जैसे कि जेसुइट्स की गतिविधियों ने राजनीतिक भय को जन्म दिया। मुसलमानों के लिए उनके विरोध के अलावा, ईसाई धर्म में धर्मांतरण की पुर्तगाली नीति ने हिंदुओं को भी नाराज कर दिया।
- उनके बेईमान व्यापार व्यवहारों की भी कड़ी प्रतिक्रिया हुई। पुर्तगालियों ने समुद्री लुटेरों के रूप में ख्याति अर्जित की। उनके अहंकार और हिंसा ने उन्हें छोटे राज्यों के शासकों और शाही मुगलों के बीच भी शत्रुता ला दी।
- ब्राजील की खोज ने पुर्तगाल की उपनिवेशवादी गतिविधियों को पश्चिम की ओर मोड़ दिया।
- 1580-81 में स्पेन और पुर्तगाल के दो राज्यों के मिलन ने, छोटे साम्राज्य को इंग्लैंड और हॉलैंड के साथ स्पेन के युद्धों में खींचते हुए, भारत में व्यापार के पुर्तगाली एकाधिकार को बुरी तरह प्रभावित किया।
- पुर्तगालियों के पास भारत के समुद्री मार्ग के ज्ञान का एकाधिकार हमेशा के लिए गुप्त नहीं रह सकता था; जल्द ही डच और अंग्रेज, जो समुद्री नौवहन का कौशल सीख रहे थे, ने भी इसे सीख लिया। जैसे ही यूरोप से नए व्यापारिक समुदाय भारत में आए, उनके बीच एक भयंकर प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई। इस संघर्ष में, पुर्तगालियों को अधिक शक्तिशाली और उद्यमी प्रतिस्पर्धियों को रास्ता देना पड़ा।

Q.160) डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना कारखाना स्थापित किया:

a) बिमलीपट्टम

b) सूरत

c) ट्रांक्यूबार

d) बरनागोर

Q.160) Solution (c)

डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1616 में हुई थी और 1620 में, उन्होंने भारत के पूर्वी तट पर तंजौर के पास ट्रांक्यूबार में एक कारखाने की स्थापना की। उनकी मुख्य बस्ती कलकत्ता के निकट सेरामपुर में थी। डेनिश कारखाने, जो किसी भी समय महत्वपूर्ण नहीं थे, 1845 में ब्रिटिश सरकार को बेच दिए गए थे। डेनिश वाणिज्य की तुलना में अपनी मिशनरी गतिविधियों के लिए बेहतर जाने जाते हैं।